रांम राज

वखांणदाता

पडित प्रवर श्रद्धेय

श्री पुष्कर मुनिजी म०

संपादक

देवेन्दमनि शास्त्री, साहित

रूपान्तरकार	नृसिंह राजपुरोहित, एम. ए. (रिसर्च स्कॉलर)
प्रकाशक	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल, जोधपुर
द्रव्य सहायक	श्री वस्तीमलजी सेजाजी भंसाळी अजीत (जिला बाडमेर) राजस्थान
पुस्तक प्राप्तिस्थल	१. भंडारी सरदारचंद जैन, बुकसेलर, त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर २. सर्वोदय जनरल स्टोर्स, ५ पाला सदन, दुकान नं० ३-४, आदर्श नगर, हौसिंग कॉलोनी के सामने, बंगाल केमिकल के पास, वरली, बम्बई नं० १८
प्रथम प्रवेश	स्वाधीनता दिवस १९६५
य	एक रुपया

विषय - सूची

के रांम-जीवण री कथावा आथमणा मुल्कां रा लोक साहित में पण मोकलो मिलै ।

इण कारण इज तो हिन्दी रा प्रसिद्ध कवि श्री मैथिलीसरणजी गुप्त कह्यौ है—

राम तुम्हारा चरित, स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाय, सहज संभाव्य है।

रांम री पितर भगतो, रांम री मातर भगती, रांम रो बांधव प्रेम अर रांम रो राज ए सगली चीजां आदर्स रही है। ओ इज कारण है कै लाखा बरस बीत्यां पछैई रांम-नाम मांनखा री जबांन माथै चढचोडौ है। सगलां री एक इज चावना है कै रामराज पाछौ बणै। मानखा नै कृष्ण रै राज री कै दूजा कोई भूपत रै राज री चावना नी है। चावना है तो फगत एक रांमराज री। इण वास्तै देखणौ ओ है कै रांम राज में इसी कांई खूबिया रही है कै मांनखौ आज लग उण राज नै इतरौ चावै।

इण पोथी में परम श्रद्धेय सद्गुरुवर्य श्रीपुष्करमुनिजी महाराज एक प्रवचन में रांम राज री सगली खूबियां बताई है। अर रांम चरित्र री विसेसतावां माथै जोर देवता आ प्रेरणा दीवी है कै चरित्र इज कोई पण मुल्क रो मेरुदड है। मुल्क री आजादी चरित्र रा खूंटा सू इज बाधोडी है। इण रै वास्तै मजबूत खूंटा री जरूरत है। काचा पोचा खूंटा सू कांम नीं चालै। कारण कै आजादी तो एक मतवाला गजराज रै उनमांन है। उण नै काबू राखणो घणौ अबखौ कांम है।

रांम राज खातर जरूरी है कै जीवण-कला रा मरम नैं समझ्यौ जावै। जठा ताईं जीवण-कला रो जाणकार नीं बणै उठा ताईं जीवण पांगर नीं सकै। अर जठा ताईं धर्म री परख नी व्है, उठाताईं घुमक्कड-जीवण रो आणद नीं उठायौ जा सकै। इण भांत ए प्रवचन तर्क ज्यूं तीखा, श्रद्धा ज्यूं गैरा अर दरपण री पाण निरमल है। इण में जमांना री समस्यावां रो समाधांन है, ठकेल है।

आ पोथी पै'ला हिन्दी अर गुजराती में छप्या पछै अबै राजस्थांनी में प्रकासित व्हैरी है। हिन्दी अर गुजराती में इणरो आछौ आव-आदर व्हियौ। इणरो राजस्थानी रूपांतर राजस्थानी गद्य रा जाणिया-पतवाणिया लेखक श्री नृसिंह राजपुरोहित, एम० ए० (रिसर्च स्कॉलर) कियौ है। 'मिनखपणा रौ मोल' पछै आ दूजी पोथी 'राम राज' पाठकां ताई पुगावतां म्हनै घणौ हरख है।

जैन स्थानक
खांडप (राज.)
स्वाधीनता-दिवस
१९६५

—देवेन्द्र मुनि

अनुवादक रा आखर

सन् ५० में म्हे राजस्थांनी गद्य लिखणी सरू कियो हो । उण बात नै आज पनरै बरस व्हैग्या । इण बरसां में राजस्थांनी नांम माथै हाको तो मोकळो व्हियो, पण कांम इतरो नी व्हियो । आज राजस्थांनी री संवैधानिक मांन्यता वास्तै लोक सभा में बिल पेस करण री बाता चाल री' है, राजस्थांनी वास्तै एक न्यारी अकादमी री थरपणा करण रो विचार पण जोर पकड़तो जावै है । पण मूळ सवाल ओ है के राजस्थानी रै सिरजण री कांई हालत है ।

गद्य भासा री कसौटी मांनी जावै । इण वास्तै भासा रो दारमदार गद्य ऊपर है । आज राजस्थांन में कितराक लेखक इसा है जो सतत-रूप सूं गद्य लिख रह्या है । (तुकबंदिया करनै कवि सम्मेलना में सस्ती वाहवाही लूटणी दूजी बात है) आज सूं पनरै बरसां पै'ली पूरा राज-स्थांन में जिको लेखक (आंगळियां माथै गिणै जितरा) राजस्थानी गद्य लिखता हा, म्हनै तो आज पण वे इज सूरमा मैदांन में दीसै है ।

दूजी कांनी प्रकासण री आ हालत है के जो लिख्यो जावै, उणनै कोई छापण वाळो कोयनीं अर जिको छपवाय दियो जावै उणनै कोई मोल लेवण वाळो कोयनी । इण सगळी बातां रो उकेल आपा नै सोचणो है । कोरी बातां सूं तो कांम पार पड़ण सूं रह्यो ।

जैन धर्म अर बौद्ध धर्म आद-जुगाद सूं पोता री बात जन-भासा मे साहित सब सूं पै'ली अनुवादित होय नै आधुनिक राजस्थांनी गद्य में प्रकासित हुओ है । ओ सगळो साहित मांनखा रा चरित्र नै ऊचो उठा-वण वाळो अर उणनै मारगै घालण वाळो है । आंपणा मुलक नै तो

आज इसा साहित री सख्त जरूरत है। इणमें सांप्रदायिकता कै संकीर्णता रो कठैई नांम निसाण ई नी है। 'वसुधैवकुटुम्बकम' इण साहित रो मूळ मत्र है।

इण पोथी रै पे'ली 'मिनखपणा रो मोल' रै नांम सूं आपरी एक दूजी पोथी पण निकळ चुकी है। दोनूं पोथ्या रो अनुवाद म्हैं गुजराती सूं कियो है। आगै पण अनुवाद रो काम चालू है। हरिजी री मरजी हुई तो दो एक पोथ्यां फेर पण आपरै हाथां में वेगीज पूगैला।

नृसिंह राजपुरोहित, एम. ए.
(रिसर्च स्कॉलर)

एक ओळखांण

इण पोथी खातर नाणा री मदद करण वाळा धर्मप्रेमी सज्जन श्री वस्तीमलजी सेजाजी भंसाळी गांम अजीत (जिला बाड़मेर राजस्थांन) रा वासी है । आप सर्वोदयो जनरल स्टोर बम्बई रा मालिक अर श्री महावीर मोटर ट्रेडिंग कम्पनी रा भागीदार है। या रो पूरो परिवार धर्म-अनुरागी अर श्रद्धेय गुरुदेव रा वखाणां सूं प्रभावित होय नै इणां यां री माता सुश्री सोनी वाई री याद मे इण पोथी 'राम राज' नै छपावण री अरज कीवी। जिणरो फळ ओ है कै आ पोथी आपरै हाथा मे है।

—गौतम आंचलिया

रांम राज

उण दिन देस में सोना रो सूरज उगो हो, कारण के एक हजार वरसां री गुलांमी भुगतनै देस सुतंतर सरवतंतर हुओ हो। इण सुतंतरता रै वास्ते भारत रा सपूतां सांमी छाती गोळियां झेळी। मातावां आपरा व्हाला डीकरां नै फांसी पर झूलता देख्या। जळियां वाळा वाग मे जो अत्याचार हुओ, उणनै देखनै मिनखपणो कुरळाय ऊठ्यो। ओ दानवता रो नागो नाच हो। पण गांधीजी री विचार रूपी आंधी परदेसी राज नै खतम कर दियो अर इतिहास-प्रसिद्ध लाल किला पर यूनियन जेक री जगै समता अर साति रो प्रतीक तिरंगो असोक चक्र लहरायो। भारत वासियां रै हिवड़ा मे आणद री छोळां उछ-ळण लागी। मन रा मोर नाचण लाग्या, हिवड़ा रूपी कमळ खिलग्या। जीवण रा कण कण मे नवी-चेतणा आई अर जेजै-कार री आवाज सू आभो गूंजण लागो। वाळक-वूढां सगळां रै चे'रा पर खुसी नाचण लागी। कवि रै हिवड़ा रा तार झणझणाय ऊठ्या—

विकास की आस भरा नवेन्दु सा,
हरा - भरा कोमल पुष्प-माल सा।
प्रमोद दाता विमल प्रभात सा,
स्वतंत्रता का शुचि पर्व आ लसा।

आज वो इज दिन, वो इज पनरै अगस्त पाछो आयो है।

पण जिको आणंद आजादी लेवतां वखत हो वो आज कठीनै गायब व्हैग्यो। आजादी लेवतां वखत जो उत्साह हो, वो आज कठीनै ठेका देयग्यो ? गुलामी में सू छूटती वखत जो आसावां या उम्मीदां ही वै पूरी हुई के नीं ? जठा तांई म्हारी अक्कल कांम करै म्हूं तो जोर देयनै कैय सकू हूं कै, जिको आणंद अर उत्साह उण दिन हो वो आज नी है।

सुतंतरता मिळ्यां पै'ला आंपां जिकण रंगीन कल्पनावां में उड्या करता, वै सगळी कल्पनावां साकार नी व्है सकी। भारत नै आजादी मिळ्यां पछै महात्माजी अर देस रा दूजा नेतावां इण बात पर बार बार जोर दियो है के स्वराज नै सुराज बणावणो चाहिजै, रांमराज बणावणो चाहिजै।

रांम भारत री संस्कृति रो थांबो है, जिण पर पूरी आर्य संस्कृति गरब कर सकै। वो एक इसो जगमगा'ट करतो दीवो है, जिणरा उजास मे जैन, बौद्ध अर वैदिक संस्कृति रो साहित जगमगाय रह्यो है। जीवण रा पंथ मे भूल्या-भटक्या लोगां नै वो मारग बताय रह्यो है। भारत रा करोड़ां नर-नारी भगती सूं रांम नांम सुमरण करै। ग्यारै लाख वरस बीतग्या है, पण आज तांई रांम नांम री चमक कम नी हुई है।

आप जांणो इज हां के उतरा लांवा जुग में कई क्रांतिया हुई। कई सम्राट चमाचम करती तरवारां लेयर आया अर आपरी वीरता सूं, सत्ता सूं, अन्याय सूं, अर अत्याचार सू मांनखा रै मन में भय वैठा दियो। वे जठी कांनी सू निकळता, उठी नै हाहाकार मच जावतो। वां रो फगत नांम सुण नै इज

मोटा-मोटा वीरां रा काळजा कांपण लागता अर हिवड़ा धड़कण लागता। जिणां संप्रदायवाद में रंगीज'र, अंध सिरधा मे आंधा होय'र जो अत्याचार किया, खून री नदियां खळकाई, मंदिरां नै तोड़्या, अबळावां रै सागै बळात्कार किया, उण राजावां मांनखा रै तन पर भलैई राज कियो व्है, पण उणरै मन पर राज नीं कर सक्या। वारै वीरता री गाथावां पांनड़ां पर भलैई लिख्योड़ी रैयगी व्है, पण प्रजा रै हिवड़ा पर लिख्योड़ी नी है। वांरा नाम इतिहास रा पांनड़ां मे भलैई छप्योड़ा व्है, पण मांनखा रै मन में तो कठैई निसांण तक नी है। राजा रांम रै ज्यूं वे प्रजा रा हिवड़ा में नी वस सक्या। इण कारण इज भारतवासी न तो वा नै याद करै अर न रांम रै ज्यूं वां री पूजा अरचना करै।

भारत रा लोक जीवण पर रांम रै जीवण री गहरी छाप है। आप कस्मीर सू लगाय नै कन्याकुमारी तक अर अटक सूं लगाय नै कटक तक कठैई चाल्या जावौ, सगळी जगै आप नै रांम रै जीवण रो प्रभाव मिळैला। रांम रा जीवण पर जितरा कवियां री कलमां चाली है, उतरी स्यात् इज कोई दूजा महा-पुरुस रै जीवण पर चाली व्हैला। रघुवंस महाकाव्य, भट्टिकाव्य, महावीर चरित्र, उत्तर रामचरित्र, प्रतिमा नाटक, जानकीहरण, कुन्दमाला, अनर्घराघन, बालरामायण, हनुमन्नाटक, अध्यात्म-रामायण, अद्भुत रामायण, आनन्द रामायण, अर वाल्मीकि ऐ सगळा ग्रंथ रांम रा जीवण सूं सबंध राखै अर इणां नै संस्कृत रा सिद्धहस्त कवियां लिख्या हैं। फगत संस्कृत मे इज नी पण भारत री कई प्रांतीय भासावां मे पण कवियै रांम-

चरित्र रो गुणगांन कियो है। कंबन कृत-तमिल रामायण, तेलगू-द्विपायन रामायण, मलयालम-रामचरित, कन्नड़ी-तोरावे रामायण, बंगला-कृतिवासी रामायण, उड़िया-बलदास रामायण, मराठी-भावार्थ रामायण, हिन्दी-रामचरित मानस अर केस-राज कृत जैन रामायण - ऐ सगळा रांमकाव्य इण वात रो पुखतो सबूत देय सकै के रांम रा उजळा चरित्र सूं सब जणा प्रभावित हुआ है। भारत में इज नी पण तिव्वत, लंका, खेतान, हिन्दी चीण, स्याम, ब्रह्मदेस अर हिंदएसिया सगळा देसां मे रांम री जस - गाथा एक सुर सूं गाई गई है। जैन संस्कृति में रांम आठमा बळदेव मांन्या जावै, तो वौद्ध साहित्य में बोधि सत्व रै रूप में प्रख्यात गिणीजै अर वैदिक धर्म में विस्णु रा अवतार रै रूप में पूज्या जावै। इण तरै भारत री इण तीन खास संस्कृतियां में रांम कथा रो विराट संजोग मिळै। रांम रा चरित्र नै इतरो मांन क्यूं मिळियो ? सगळी जगै रांम रा गीत इज क्यूं गाया जावै ? रांम इतरा पूजनीक क्यूं वणग्या ? इणरो फगत एक इज कारण है—रांम रो परोप-कारी जीवण। रांम रा जीवण नै सेलड़ी रै सांठा री ओपमा देवणी चाहिजै। सेलड़ी में मिठास इज मिठास व्है। जठै कापा उठैई रस रो झरणो वैवण लाग जावै। उणीज भांत रांम रा जीवण में पण सगळी जगै मिठास रा इज दरसण व्है। निरदोस वाळपणा सूं लगाय'र सोने री संझ्या सूधी एक इज सरस मरियादा री सुर-लै'री झणझणाय रही है। रांम रो जीवण सत, सदाचार अर कर्त्तव्य पाळण रो मुळगतो दाखलो है। वो आर्य पुत्रां रो परतख नमूनो है।

रांम नै अजोध्या में राजगादी मिळण वाळी ही। अजोध्या रो राज वैभव वांरा चरण पखाळण नै तैयार ऊभौ हो। मिनखां रै मन में आणंद री छोळां उछळ री ही, मिनख राजी व्है रह्या हा के रांम म्हांरा राजा व्हैला । पण रांम रा मन मे कोई हरख या खेद नी हो, उठै तो उल्टो तूफांन मच्योड़ौ है । वे एकांत मे बैठ'र विचार कर रह्या हा के दुनिया में राजगादी लेवा खातर भाई-भाई रो गळो कापै, अर हजारां मा-बाप विनां मौत मार्‌या जावै। जिण सिंघासण खातर लाखां मिनखां रो नास कियो जावै, वो इज सिंघासण आज म्हनै मिळ रह्यौ है। पण इण सिंघासण रो असली मालिक म्हूँ नी हूँ, म्हारो छोटो भाई है।

कल्पना करो के आप बजार सू मिठाई लावौ, तो वा मिठाई पै'ला आप खावोला के टाबरां नै दोला ? म्हारौ ख्याल है के पै'ला आप टाबरां नै दोला। राजगादी रै वास्तै रांम रा विचार पण ठीक इसा इज हा। वै सोचता हा के राज-गादी म्हारा छोटा भाइयां नै मिळणी चाहिजै। रांम रा मन में हकूमत री कोई इच्छा नी ही। वै आपरा अधिकार नैन्या भाइयां नै देवणा चावता हा। बडां रो बडापणौ इण मे इज है के वै आपरा अधिकार छोटां नै देयदै अर छोटोड़ां रो फरज ओ है कै वै बडां रा हुकम मे चालै। रांमराज री मीठी कल्पना करवा वाळां आप रांम रा अधिकार नै खुद लेवणो चावो या दूजां नै देवणो चावो ? जिण वखत चुणाव मे वोट लेवण रो सवाल आवै, उण वखत आज रो रांम घर घर वोटा री भीख मांगतो फिरै। पण अधिकार री कुरसी माथै बैठतां इज वै

सगळी बातां भूल जावै। है कोई इसो माई रो लाल जिको कुरसी दबायां पछै ई घर-घर फिरतो व्है ? दुखियां रो दुख दूर करतो व्है, अर आप रै वचनां रो पाळण करतो व्है ? आज रा अधिकारी रांम नै आ बात सोचणी है , आप री आतमा नै परखणी है।

अबै आप रांम रा आगला जीवण पर विचार करो। संजोग बदळै अर राम नैं राजगादी रै बदळै बनवास मिळै । बन बन भटकतां वखत ई वांरै मन में कोई उदासी या दुख नीं। वे तो पे'ला रै ज्यूं इज आणंद में झूम रह्या है। अजोध्या री प्रजा रै सनमुख अंधकार छायग्यो है, पण रांम रै सांमनै तो वो इज प्रकास चमक रह्यौ है। अजोध्या री प्रजा रो मुखड़ो मुरझायग्यो है, पण रांम रा मुखड़ा पर तो वो इज आणद झळकै। आज पनरै अगस्त रा मंगळ प्रभात मे भारत रा रांमां नै विचार करणो है के आंपां रांमराज तो चावा, पण कांई आंपणा मे रांम रै ज्यूं सुख-दुख रै वास्तै सम भाव है ? इलेक्सन में हार जावण सू आंपणो मूडो मुरझाय तो नी जावै ?

रांम रै जीवण रो एक दूजो प्रसंग है--जुद्ध रा मैदांन में रावण रै सक्ति वांण सूं लिछमण घायल होयनै अचेत व्हैग्यो है। राम री सेना में हाहाकार मच्योड़ो है। वाल्मिकी रामायण रै माफक हनुमांन संजीवण बूटी लेवण नै गयो अथवा जैन रामायण रै माफक विसल्या लेवण नै गयो। इण समै जिण भांत ग्रह रै च्यारूमेर उपग्रह फिरै, उणीज तरै लिछमण रै च्यारूंमेर सांमंत छायोड़ा हा। रांम, सुग्रीव, विभीसण मगळाई उपाय सोच रह्या हा के लिछमण री मुरछा किया

दूर की जा सकै। उणीज वखत सामंतां देख्यो के उगमणी दिसा में एक जोत उजास करती आय री है। उण नै देख'र सगळा विचार मे पड़ग्या के आ रावण री माया है के असल में परगा सुंदरी है ? रांम कथा रा लेखक बतावै के सोने री किरणा देखतां पांण रांम रो मूडो उतरग्यो। आ देख नै सरदारा राम नै पूछ्यौ—"महाराज, आपनै माता कौसल्या री चिंता व्हैरी है, या पिता री मौत रो फिकर लागग्यो है या व्हाला बांधव लिछमण री हालत देख'र चिंता व्हैरी है अथवा सती सीता री याद मे आप दुखी व्है रह्या हो ? अर सवाल रा पडुत्तर मे राम जो कुछ कह्यो है वो घणी कीमत राखै। उण मे भारत री सस्कृति री साखियात आत्मा गूज री है। उणां कह्यो—"सरदारा, न तो म्हनै मा री चिंता अर न पिता रो फिकर है, न लिछमण री मौत रो दुख है अर न सीता री याद आयरी है। पण एक बात है जो म्हारा कोमळ हिवडा नै बीध री है जिणरै कारण म्हारी आख्यां मे आंसूं आयग्या है, वा बात आ है के जिण वखत विभीसण म्हारै कनै आयो, उण वखत म्हे उणनै लकेस कैय नै बुलायो हो पण जे सूरज ऊगग्यो तो लिछमण मर जावैला, कारण के सूरज ऊगतां इज, उणरै रू रू मे जे'र फैल जावैला अर भाई लिछमण री मदद बिना म्हूं लंका कीकर जीत सकूंला ? इण चिंता रै कारण इज म्हूं दुखी व्है रह्यो हूं।"

तारण भूमि में राम कहे
मुझ सोच विभीषण भूप कहे को !

रांम रै जीवण री आ छोटी-सीक घटना रांमराज चावण

वाळां नै सोचण रै वास्तै मजबूर करै के रांम पोता रै वचनां रो कितरो ध्यांन राखता। रांम रै ज्यूं आंपांई आंपणै वचना रो ध्यांन राखां हां के नीं? वोट लेवती वखत आंपां आंपांणै साथियां रै सागै जो वायदा किया, जिको थथोबा दीना, वै वायदा अर थथोबा पूरा किया के नी? आज पनरै अगस्त आंपांनै इण सगळी बातां पर विचार करण री आदेस देय री है।

आंपांणै अठै आद जुगाद सूं एक कैवत प्रसिद्ध है के जथा राजा तथा प्रजा। जिसी राजा व्है, विसी इज प्रजा व्है। जे राजा धर्मनिस्ठ व्है तो प्रजा पण धर्मनिस्ठ व्है। रांम राज प्रजा रो हाल बाल्मिकी अर तुळसीदास आछी तरै सूं कह्यौ है। उणें बतायो है के प्रजा में अहिंसा री निरमळ भावना फली-फूली ही, दुखी लोकां तरफ दया भाव हो, जीवण रा कण कण में सत रूपो परकास री किरणां फैल्योड़ी ही, लोक जीवण में सुख अर सांति री बंसरी बाजती ही, न तो राजा नै प्रजा सूं सिका-यत ही अर न प्रजा नै राजा सूं कोई सिकायत ही। ओ है रांम-राज री प्रजा रो साचो चितरांम। रांम राज पर मुग्ध होय नै रास्ट्रपिता महात्मा गांधी एकर कह्यौ हो—स्वराज रो सब सूं उत्तम रूप रांम राज है। रांम राज रो अर्थ है भगवांन रो राज, सदगुणां रो राज, सद विरतियां रो राज। जद कोई आदमी बुरो कांम करै तो आंपांणै मूंडा सूं आपोआप निकळ जावै के इणमें सूं राम निकळग्यो है।

कोई जमांना में यूं केवा मे आवतो के जे चरित्र री सिक्षा लेवणी व्है तो भारतवासियां सूं लेवणी चाहिजै। अठा रो ईमांन

जठै कठैई गयौ उठै आपरा पवित्र चरित्र रो सौरभ फैलावतौ रह्यो। भारत रा मिनखां दूजा देसां में जाय नै उठारा लोगां नै आपरा चरित्र सूं घणा प्रभावित कियौ है। इण वास्ते संस्कृत रै एक कवि कह्यो है—

एतद्देश प्रसूतस्य, सकाशादग्रजन्मनः
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्, पृथिव्यां सर्व मानवाः।

भारत रा कवियां इज नी पण दूजा मुल्कां रा विद्वानां पण भारतवासियां री जस गाथा खुला दिल सूं गाई है। विदेसी जात्री फाह्यान, व्हैनसांग, इत्सिंग, मेगस्थनीज अर ऐलबेरोनी जिकौ भारत री जात्रा करण नै आया उणां जो कुछ लिख्यौ उणनै पढ र भारत वासियां रै वास्तै चीन में जो सद्भावना पैदा हुई, वा कवीन्द्र रवीन्द्र रै चीन पूगण पर देखण में आई। चीन वासिया उण भारत रै देवता रो जो स्वागत कियौ वो इतिहास मे अमर है अर अमर रैवैला। उणां कह्यो "आपरौ देस बड़ौ भागसाळी है के जकै चोरयां नी व्है, बदमासियां नी व्है, जठै मोटा २ नगरां मे सोना चांदी, हीरा पन्ना अर माणक मोती री दुकानां पर ताळा नी लगाया जावै, धन धांन रा भंडार खुला पड़्या रैवै, आपरै उठारा मिनख कितरा इमांनदार है। चीन वाळां री बातां सुण नै रवीन्द्र रै आख्यां मे आंसू आयग्या, उणां कह्यो—भाइयो, एक दिन म्हारौ देस इसोइज हो, जिसो के फाह्यान अर व्हैनसांग बतायो है। पण आज उठै भरपूर बेईमांनी है। जठै हीरा पन्ना अर माणक मोती री चोरी नी होवती, उठा रा मिनख आज

जूता चोरण मे ई संकोच नी राखै। म्हारा देस रो कितरो पतन व्हैग्यो है।

अबार थोड़ा दिनां पैली अखबारां में कलकत्ता री एक घटना छपी ही। उठै एक डाक्टर खनै एक नव जवांन औरत आई अर बोली "म्हारा पति बीमार है, कोई आप वांरो इळाज कर सकौ ?" डाक्टर पूछ्यौ "बैन, वांरे काई बीमारी है ?" लुगाई बोली "थोडा दिनां सूं वे बिल पेमेंट करो, बिल पेमेंट करो—इण तरै सूं हाका करता रैवै। डाक्टर बोल्यौ "बैन, इसो मालम व्है के वांनै कोई मांनसिक रोग है। वे थोडा दिन दवाई अर इंजेक्सन लेवण सू ठीक व्हैं जावैला" पांच सौ रुपयां में इळाज तै हुऔ। लुगाई आपरो बटुवो खोल्यो अर एक सौ रुपयां रो नोट देवती बोली "आपरी कार पड़ी है, आप कैवौ तो कार में बिठाय नै वांनै अठै लेय आवूं ?" डाक्टर नै रुपया देख'र विस्वास व्हैग्यो, उणें कह्यौ "आप कार खुसी सूं लेजाय सकौ।" वा कार मे बैठ'र बजार में उण जगै आई, जठै के झवेरी री मोटी दुकांन ही। उणे झवेरी नै माल बतावण रो कह्यौ। झवेरी कार अर उणरो चमकदार पेरवेस देख नै उणनै कीमती सूं कीमती माल बतायो। उणे पचास हजार रो माल टाळ्यौ। वा बटुवा मे सूं निकाळ'र दो हजार रा नोट देवती बोली "जे आप आपरा मुनीम नै म्हारै सागै भेज दो तो म्हूँ म्हारै पति सूं इण बिल रो पेमेंट कराय दूं। झवेरी मुनीम नै उणरै सागै भेज दियौ। माल अर मुनीम नै लेय'र वा पाछी डाक्टर रै उठै आई। वा सीधी डाक्टर खनै पूगी अर बोली "म्हारा पति आयग्या है, आप वांनै आछी

लारै सूं देख नै इळाज करावौ।" डाक्टर कांम में लागयोड़ो हो, उणै उणनै एक दूजा कमरा मे बिठाय दियौ अर पे'ली आयोड़ा रोगियां नै रवांना करनै मुनीम खनै पूग्यौ। डाक्टर नै देखतां इज मुनीम बोल्यो "बिल पेमेट करौ।" डाक्टर मन मे सोच्यो के लुगाई रो केवणो बिल्कुल सही है। उणे मजाक में कह्यो "हां हां अबार विल पेमेंट कर दूंला।" आ कैय नै ज्यूंई डाक्टर उणरो सरीर तपासण लाग्यो, वो जोर सूं बोल्यो "आप ओ कांई कर रह्या हो ?" डाक्टर बोल्यौ "आपनै विल पेमेट री बीमारी है, उणरी जांच कर रह्यो हूं।" मुनीम घबरीज नै बोल्यौ "आ आपनै कुण कही के म्हू बीमार हूं। आपरी लुगाई म्हांरै दुकांन सूं पचास हजार रो गेणो लेयनै आई है अर आपनै बतळाय नै आपरा मकांन मे गई है, सो फट बिल पेमेट करावौ।" डाक्टर दो पांवडा लारै खिसक'र अचूंभा सू बोल्यौ "काई कह्यौ ? आपनै अबार जो ओरत साथै लेयनै आई है, वा तो म्हारी नी पण आपरी लुगाई है। वा थारो इळाज करावण नै अठै लेय नै आई है।

मुनीम पाछो बोल्यौ "कठैई आप भांग तो नी पी लीवी जो पोतारी लुगाई नै म्हारी लुगाई बताय रह्या हो ? मजाक मत करो अर बिल पेमेट कर दो।"

इण विचित्र सवाद रै बाद उण लुगाई वास्ते आ सका हुई। अठी उठी तपास करणै पर ई उण लुच्ची लुगाई रो कठैई पतो नी लाग्यो। अबै सगळोई भेद खुलग्यो। इसा अलेखां काळा कारनांमा रोज अखबारां मे पढण नै मिळै।

अचंभो है के जिको देस नैतिकता में कोई दिन इतरो ऊंचो चढ़ोड़ो हो, उणरो आज कितरो पतन व्हैग्यो है।

जे आप रांम राज चावो, देस नै आबाद अर सुखी देखणी चावो, तो आपनै आपरा हिरदा में नैतिकता री जोत जगावणी पड़ैला अर सुतंतरता री इण बरसगांठ पर आ परतिग्या करणी पड़ैला के म्हे रांम रै जिसा आदर्स थापण करांला। ऐ आदर्स आंपणै देस रा गौरव नै बढावैला।



धर्म री परख

भारत जुग जुग सूं मांनखा रै मोद रो कारण बण्योड़ी है। पण इण मोद रो कारण काई आभै तक पूगण वाळी हिमाळा री बरफ सूं ढक्योड़ी चोटियां है ? अथवा उछळ उछळ नै वादळ जिसी गंभीर आवाज करतोड़ी मानखा रा हिरदा नै आणद देवण वाळौ दरिया रो तूफांन है ? के पछै हंसती मुळकती कुदरत रूपी नटडी रो फूटरापो है ? या थळ री चांदी जिसी चमकती रेत है ? या खळ-खळ छळ-छळ करती नदी री सरस धारावां है, या सोना चांदी हीरा जवाहरात रो खांनां है ? अथवा पैट्रोल या तेल रा कुवा है। ओ एक सुळगतो सवाल है, जिण रो पडुत्तर आपनै देवणो है। जे आप इण बारला वैभव सूं इज भारत री कीमत आंकी तो म्हनै कैवणो पड़ैला के आप भारत री आत्मा नै नीं ओळखी, आप तो फगत सरीर अथवा भौतिक चीज नै इज देखी है अर उणनै इज मांन दीनौ है।

भारत जिण नै सगळा संसार रो आध्यात्मिक गुरु होवण रो पद मिळचो है अर सुरगां मे रैवण वाळा देवता पण इणरी मोटाई रा गीत गावै, जिण धरती पर जनम लेवण री इच्छा राखै, इणरो कारण बारलो वैभव नी है। बारला वैभव री झळक तो आपनै एसिया खंड रा कई भागां मे अर अमेरिका

यूरोप रा निराइ मुल्कां में देखण नै मिळ जावैला। दरअसल मे भारत रो मांन इण बारलै वैभव रै कारण नीं है।

भारत रो मांन तो इण कारण है के ओ एक धर्म-प्रधांन देस है। अठा री सभ्यता अर संस्कृति रा रूं रूं मे धर्म समायोड़ो है। भारत नांम लेतां इज आंपां नै धर्म याद आय जावै। जे कोई आथमणा विचारक रै सागै कोई योजना राखी जावै तो वो केवैला के कांई इण योजना सू म्हारी आवक वधैला? पण वा इज योजना जे कोई भारतवासी विचारक रै आगै राखी जावै तो वो पूछैला के कांई या योजना म्हारै धर्म रै माफक है? अथवा या योजना धर्म सूं ताल्लुक राखै? जिण योजना में धर्म रो पुट नीं व्है, उणनै भारतवासी एकदम स्वीकार नीं करै।

भारतवासियां री इण सुंदर भावना रै कारण इज अठै हजारां धर्म गुरु, तीर्थंकर अर पैगंबर पैदा हुआ। धर्म रो संदेसो लेय नै हजारां विदेसी अठै आया। उण सगळा संदेसा नै, धर्म रा वचनां नै भारत री माटी पचाय लिया, वांनै फूलवा फळवा रो मौको दीनो। ओ इज कारण है के भारत मे हजारां धर्म, संप्रदाय है अर घर घर में धर्म संप्रदायां री न्यारी न्यारी खिचड़ी है। एक इज घर में बाप वैष्णव है तो बेटो सिव भगत है। मा रांम री पूजा करै तो बेटो कृष्ण री। बेटा री बहू जैन धर्म नै मांनै तो पोतो बौद्ध धर्म नै, मतलब ओ है के भारत रा हरेक घर में सगळा मिनख कोई न कोई धर्म या संप्रदाय नै मांनै। विना धर्म या संप्रदाय रो घर आपनै नीं मिळैला।

एक आथूंणै पंडत भारत री जात्रा करयां पछै लिख्यो है भारत धरमां रो चिड़ियाघर है। ज्यूं चिड़ियाघर में कोई फ्रांस री चिड़ी व्है तो कोई जरमनी री, कोई रूस री व्है तो कोई अमेरिका री, कोई इंगलैंड री तो कोई अरब री, कोई अफगानिस्तान री तो कोइ पाकिस्तान री। जिण तरै सूं रंग रंग री अर भांत भांत री चिड़ियां चिड़ियाघर मे व्है उणीज तरै भारत मे भांत-भांत रा अर तरै-तरै रा न्यारा-न्यारा धर्मा रा लोग भारत मे है। कोई पूजा पाठ नै मांन देवै तो कोई भजन पूजन नै, कोई टीला टवकां नै मांन देवै तो कोई डाढी-चोटी नै, कोई काळा धोळा कपड़ां नै मांन देवै तो कोई भगवा कपड़ां नै।

भारत धर्मा रो मेळो है। अठै इसलांम, ईसाई, सिक्ख, पारसी, जैन, वौद्ध अर वैष्णव कई धर्मा रा मांनण वाळा है। पण सगळां रो लक्ष एक इज है अर वो है मोक्ष, धर्म उणरो साधन है।

आ एक तैसुदा वात है के जिकी चीज जितरी सरल अर जितरी जांणीती व्है, उणरो अरथ उतरो इज अबखो व्है। मानखो रात'र दिन धर्म धर्म रा हाका किया करै, पण धर्म है कांई ? इण बात नै कम लोग जांणै के धरम कांई है अर पाप कांई है। इण ससार रा वाड़िया मे कई विचारक, पंडत, पैगबर अर तीर्थंकर आया अर पोत पोता रै मत सूं धर्म रो न्यारो न्यारो अर्थ कर नै गया। इण सूं ससार मे एकला धर्म सव्द रा कई अर्थ व्हैग्या। लॉरड मोरलेन एक ठौड़ कह्यो है के धर्म सव्द री कोई दस हजार व्याख्यावां हुई है, तांम पण वै

सगळा धर्मां रै वास्तै पूरी नीं पड़ै । जैन, बौद्ध अर भारत रा कई धर्म उण व्याख्यावां सूं बारै रैय जावै । इण तरै धर्म सब्द कई अर्थां सूं प्रयोग में आयो है । उणरी भांत भांत री व्याख्यावां पण हुई है पण आज दिन तांई उणरी कोई इसी व्याख्या नी निकळी के जिणनै दुनिया रा सगळा धर्म स्वीकार करै ।

कोई कैवै स्नांन करणो धर्म है, कोई कैवै लांबी चोटी राखणी धर्म है, कोई कैवै बिरामणां नै दांन देवणो धर्म है तो कोई कैवै टीला टबाका लगावणा धर्म है । कोई सिव पूजा नै धर्म मांनै तो कोई जिन पूजा नै, कोई गिरजाघर मे प्रार्थना करणी धर्म मांनै तो कोई मस्जिद मे नमाज पढण नै धर्म समझै । कोई मंदिर मे जाय'र आरती बोलै तो कोई गीता रो पाठ करै, कोई देवतावां आगै बकरा काटै तो कोई वां पर दारू री धार इज चढावै, कोई सिराध करै तो कोई बिरामणां नै लाडू जीमाड़ै, कोई कैवै के दूजा धर्म वाळां रो पल्लो भेटिया सूं इज धर्म रो नास व्है जावैला तो कोई कैवै के काफर सूं वात करण सूं इज धर्म मिट जावैला । साधारण मिनख तो इण जंजाळ में इज पड़ जावै के छेवट धर्म है कांई ? साधारण मिनख री तो वात ई कांई, मोटा मोटा ग्यांनी पण धर्म रो मर्म नी जाण सक्या । उणां कह्यौ है—

तर्कोऽप्रतिष्ठः श्रुतयो विभिन्नाः
नैको मुनिर्यस्य वचः प्रमाणम् ।
धर्मस्य तत्त्वं, निहितं गुहायां
महाजनो येन गतः स पन्थाः ।

तर्क सूं धर्म रो निरणै करां तो उणसूं पण वधारै जोर-दार तर्क पे'ला तर्क नै उडाय दे। तर्क तो हथियार है जिको आपस में इज लड़ता-भिडता रैवै। तर्क तो बिना तळिया रो लोटो है, जिको अठी नैई गुड़क जावें। उणसूं धर्म रो निरणै नी व्है सकै। सास्त्रां मे पण एक दूजा सू उल्टी बातां मिळै। एक सास्त्र जिको राग अलापै, दूजोड़ो उणसू उल्टो इज सुर काढै। इणीज भांत श्रुतियां, स्म्रतियां मे पण धर्म रो कोई एक निरणै नी है। कारण के ऐ देस अर काळ रै माफक बण्योड़ी है। एक स्म्रति एक वात नै घड़ै तो दूजो उणनै भांग नांखै। कोई एक मुनि रा वचन पुखता नी मांन्या जा सकै। कारण के सगळां पोता पोता रै जमांना री बात कही है। आप आप रै जमांना में समाज री हालत देखनै उणां धर्म रा विध-विधांन बणाया है। इण वास्तै मुनियां री कथणी सूं ई धर्म रो सही फैसलो नी हो सकै। इण वास्ते इज छेवट हार खाय नै व्यासजी नै कैवणो पड़्यौ—"भाई, धर्म रो तत्व तो बुद्धि री गुफा मे बैठ्यो है। अर उठै अधारो होवण सू वो निजर नीं आय सकै इण वास्ते जिण मार्ग सूं महापुरुस गया है, वो मार्ग इज धर्म रो मार्ग समझणो चाहिजै।

पण ओ ई कोई सही निरणै नी है। महापुरुस जिण मार्ग गया व्है, वांरै लारै बिना अक्कल सू गाडर रै ज्यू जावणो ओई एक मूरखपणो है। महावीर जिसा चितकां जंजाळ मे पड़्या बिना धर्म रो निरणै इण भांत दियो है—

पन्नासमिक्खए धम्मतत्तं तत्तविणिच्छियं

असलियत री कसोटी पर कस्योड़ा धर्म तत्त्व री विवेक वाळी बुद्धि सूं इज धर्म री व्याख्या व्है सकै। अठै ओ ई देख लेवणो जरूरी है के उगमणा अर आथमणा पंडतां, विद्वांनां अर तीर्थंकरां धर्म री कांई व्याख्या करी है? सब सूं पै'ली व्युत्पत्ति वाळो अर्थ लेवां तो—

"धारणाद् धर्मः"

जिको धारण कियो जावै वो इज धर्म है। या—

"दुर्गतौ प्रपतन्त मात्मानं धारयतीति धर्मः"

अबखी वेळा में आत्मा नै धारण करनै राखै वो धर्म है। इण तरै सूं धर्म रा दो अर्थ निकळैला। इण दोनूं अर्थां रो मतळब ओ हुयो के इसा नियम, सद्गुण अर रीतभांत, इसी नीति अर इसो आचरण जिको दुर्गत में पड़ती आत्मा नै बचावै, सुख कांनी ले जावै, वो इज धर्म है। इण वास्ते इज वैसैसिक दरसणकारां धर्म रो अर्थ दूजो कियो है—

यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः

"जिण बात सूँ या जिण आचरण सूं या जिण नीति नियम सूं मिनख रो लोक अर परलोक दोनू सुधरै वो इज धर्म है।" सुरगवासी किसोरीलाल मश्रूवाळा रै सब्दां में कैवां तो— "जिणसूं समाज रो भरण, पोसण, रक्षण अर सत्व-संसोधन व्है सकै, वो इज धर्म है' अर साफ साफ कैवां तो दुनिया में असली सुख जिणसूं वध सकै वो इज धर्म है।" जैन पंडत आचारज कुंद कुंद—

"वत्थु सहावो धम्मो"

चीज रा सुभाव नै इज धर्म कह्यो है। हरेक चीज रो आपरो न्यारो २ सुभाव व्है अर वो इज सुभाव उण चीज रो धर्म मांन्यो जावै। ज्यूं आग रो सुभाव गरमी है अर पांणी रो सुभाव ठंडक है। सास्त्रां री निजर सू अठै चीज रा गुण नैं या सुभाव नै धर्म कह्यो गयौ है। पण मांनव समाज री निजर सू या अध्यात्मिक निजर सू धर्म रो अरथ ओ व्हैला—"आत्मा रो संसार में असली रूप मे रैवणो" इणरो अरथ ओ हुयौ के मांनव समाज मे व्यवस्था री थरपणा होवण सू अर उणरा आचार-विचार अर विरतियां रो सुद्धपणो होवण सूं इज सुख वधै, कल्यांण व्है अर दूजी सिद्धियां मिळै।

अंगरेजी भाषा मे धर्म नै 'रिलिजन' कैवै। रि = लारै, लीजन = बांधणौ। कैवतां आत्मा नै चोखा विचारां में बांधणी। इणनै अनुबंध पण कैय सकां हां। आत्मा जठै चोखा विचारां सूं बंधीज जावै, उण समाज में कोई गड़बड़ नी व्है, लड़ाई-झगड़ा नी व्है अर दुख मे वधारो नी व्है। कांट रा सब्दां मे—"पोता रा सगळा कर्त्तव्यां नै ईस्वर रो हुकम मांनणौ इणरो नांम इज धर्म है।" हेगल री मांनता रै माफक मगज री मरजादा मे रैवण वाळा अमरियादी सुभाव री ग्यांन धर्म है। मेयर्स धर्म री व्याख्या इण भांत करी है—"मांनखा री आत्मा रो ब्रह्मांड बाबत चोखो अर साधारण पडुत्तर" मांनव सास्त्री आमेस धर्म रो अर्थ बतायौ है—"ईस्वर सूं प्रेम करणौ" मक्टा गार्ट धर्म री व्याख्या करी है—"मन रो वो भाव जिण सूं आंपां सगळा संसार रै सागै मेळ अनुभव करां।" जेम्स फ्रेजर धर्म रो अनोखो अर्थ बतायौ है, उणरा सब्दां में "धर्म

मांनखा री उण ऊंची मांनी जावण वाळी ताकतां री पूजा है, जिकां नै मांनव जीवण रो मारग बतावण वाळी अर उण पर अंकुस राखण वाळी मांनी जावै ।"

इण सगळी वातां पर विचार करण सूं ओ नतीजो निकळै के धर्म मिनख रै वास्ते इज नी है, पण हरेक प्रांणी वास्तै जरूरी है । ओ प्रांणियां री तरक्की वास्तै है, सुख वास्तै है अर पाळण--पोसण वास्तै है, ओ एक व्यवस्था रो नांम है।

धर्म मांनखा नै सुखी अर सांत बणावण वास्तै एक वरदांन लेयनै दुनिया में जनम्यौ है । हिरदा में घुस्योड़ो दांनवी विरतियां नै हटाय नै मिनखपणा री थापना करै । दूजा सब्दां में कहूं तो धर्म दांनव नै मांनव बणावै अर मांनव नै देव बणावै । धर्म आंपणी समाज अर देस री उळझयोड़ी गूंछळिया नै सुळझावण वाळौ है, वो आदमी, समाज अर संसार री मांनसिक बिमारियां अर आत्म-विकारां रो इळाज करण वाळौ है । इण सूं मिनख मिरत लोक में सुखां रो सुरग उतार सकै । इणरै कारण मिनख संसार रा सगळा प्रांणियां सागै प्रेम जोड़ सकै अर पोता रै कर्त्तव्य रो पालण कर सकै । इण सूं संसार री चोखी व्यवस्था व्है सकै अर समाज में सुख सांति फैल सकै ।

महात्मा चाणक्य रा सब्दां में —"सुखस्य मूलं धर्मः" सगळा सुखां रो मूल धर्म है । वो मांनखा रा बिछुड़ता हिवड़ा नै मिळाय सकै, विगड़्योड़ा वेवार नै ठीक कर सकै, टूटती व्यवस्था नै जोड़ सकै अर भूलती जीवण धारावां नै मारग

बताय सकै । धर्म ससार रै वास्तै इमरत है, आसीस है, सस्कृति नै बणावण वाळी है अर जीवण रा निरमांण में मदद करवा वाळौ है । धर्म री पूठ बिना मिनख आपरा जीवण मे कठैई सफल नी व्है सकै । जचै जिको क्षेत्र व्हौ–ज्यूं के राजनैतिक, सामाजिक, सैक्षणिक, अर सांस्कृतिक, धर्म रै बिना कठैई कांम सफळ नी व्हैं सकै। जीवण रा हर क्षेत्र में धर्म मौजूद होवण सूं संसार मे आणद रा फुंआरा छूट सकै, संसार सुरग रो संगीत सुण सकै ।

पण दुख इण बात रो है के आज मांनखौ धर्म रा असली भेद नै भूलग्यौ है अर भूलतो जाय रह्यौ है । जे कोई मिनख जीवणौ तो चावै पण सास नी लेवै, तो कियां जी सकै ? ठीक इणीज भांत जिको आदमी, समाज या राष्ट्र जीवणो चावै, चोखी तरै सूं रैवणो चावै, सुख सांति सूं गुजारो करणो चावै तो धर्म रै बिना कांम नी चाल सकै । कारण के धर्म तो प्रांण रै समांन है । इण वास्तै इज वैदिक धर्म रै एक मोटै रिसी संसार नै चेतावणी देवतां कह्यौ है—"धर्मो विश्वस्य जगत: प्रतिष्ठा" धर्म पूरा जगत रो आधार है । जे मांनव जात रो धर्म है तो उणरो आधार पण है, पण जो धर्म नही तो आधार मे ई वेहम है । जे आपां धर्म नै कायम राखांला तो वो आंपणी पूरी मांनखा जात री रक्षा करैला अर जो धर्म नै गुमाय दांला, धर्म नै खतम कर दांला तो धर्म आंपाणो नास कर देला । महाभारत रा वन परब मे आईज बात वेदव्यासजी कही है—"धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षित:" इण वात नै म्हूं साफ खोल नैं कंय दूं । मांन लो

कोई जगै इसी है के जठै मिनख धर्म रो नांम तक नीं जांणै, धर्म री भावना ई वां में नी व्है, वांरै जीवण में धर्म रो आचरण ई नीं व्है, न वांनै धर्म रो सरूप समझावण वाळो कोई धार्मिक आदमी पण वांरै बीच में है । धर्म रा अग्यांन रै कारण इज वै पोता रै कर्त्तव्य रो पाळण नीं कर सकै, आप रा नीति नियम नीं बणाय सकै, आपसी वेवार री मरयादा नी बणाय सकै, सगळाई आपस में लड़ै, खावण पीवण री चीजां आपस में खोस लेवै, मामूली सी बात पर एक दूजा नै मारण वास्तै तैयार व्है जावै, एक दूजा री चीजां चुराय लेवै, कोई मांदो व्है तो उणरी सेवा चाकरी नी करै, बेढगा तरीका सू रैवै, एक दूजा री जरूरत पर ध्यांन नी देवै, हरेक चीज आपरै खनै घणी सूं घणी भेळी करण री नीत राखै, न कोई नै भगवांन रो डर है, न कोई नै नरक भय है अर न सुरग री परवा । उठै फगत झगड़ा टंटा रो इज राज है । विचार करो इसी जगै मांनव समाज री कांई हालत व्हैला ! कांई उठै कोई जीवतो रैय सकै के आपरो भरण पोसण ठीक तरै सूं कर सकै ? कांई वै लोग दूजां रै वास्तै चोखी भावना राख सकै ? इण सवालां रो उत्तर नकार में है । अबै आपनै धर्म री कीमत, धर्म रो चमत्कार अर संसार में धर्म री जरूरत समझ में आयगी व्हैला । जे उण जगै लोगां में धर्म होवतो तो उणां रा नीति नियम होवता, आपसी वेवार री मरयादावां होवती, कर्त्तव्यां रो पाळण होवतो, मन री विरतियां री सीमा होवती अर इण तरै धर्म वांरै जीवण में सुरग बणाय देवतो । वै सगळा आपस में प्रेम सूं, आंणंद सूं अर सहयोग सूं रैवता ।

सगळा आपस मे 'लेणी जिसो देणी' रा सिद्धान्त नै मांनता, कोई दूजा री चीज नै हड़पण री कोसिस नी करतौ, कोई चीज घणी भेळी नी करतौ, इण तरै सूं वांरो सामाजिक जीवण घणौ सुखी होय जावतौ । "धर्मो रक्षति रक्षितः" रो भेद ओ इज है ।

इण वास्तै धर्म रा मर्म नै समझौ । उणरा उपयोग नै हिया में उतारौ अर उणरा वेवारीक बाजू नै मन मे राखौ । फगत धर्म धर्म री बूम मारचा सूं धर्म जीवण में नी आय सकै । धर्म तो आचरण री चीज है । वा विग्यापन री चीज नी है । वा आडबर अर थोथा देखवा री चीज पण नी है । आज-काल संसार मे धर्म रै खिलाफ एक नवो इज उस्टड सरू हुवौ है । इसा लोग पैदा हुआ है के जिको धर्म अर धर्म रा नांम नै इज मिटा देवणो चावै । वै लोग कैवे के इण धर्म इज पूरा ससार नै बरबाद कर दियौ, धर्म इज मांनखा नै आपस मे बुरी तरै सूं लड़ायौ भिड़ायौ । इण वास्तै इण धर्म रो तो जड़ इज उखैल देवणी चाहिजै । दरअसल मे इण लोगां रै सब्दां मे पण थोड़ौ घणौ सार जरूर है । इण सूं नटियौ नी जा सकै । पण इसा लोग धर्म रा असली सरूप नै नी पैचांणै । धर्म रा मर्म नै नी समझै । वै पंथां, सम्प्रदायां अर धर्म रा नांम पर चलण वाळा थोथा क्रिया कांडां नै इज धर्म समझ बैठ्या है । वै वांरै आपसी लड़ाई टटां अर कळै नै देखनै इज झट कैय देवै के इसा धर्म नै गोळी मारो ।

धर्म थोथी क्रियावां मे नी है, बिना सोच्यां समझ्यां

भूखा नागा रैवण में नी है। धर्म कोई तरै रा पेरवेस में नी है।
धर्म कोई खास तरै रा टीलां टबकां मे नी है, धर्म चूला चौका
में नी है, धर्म लांबा चवड़ा उपदेसां में नी है, धर्म सुरग रा नांम
पर हुंडी लिखवा मे या सुरग रा सपना दिखावण में नीं है। कोई
रै लारै आंसू टपकावण मे या बळ नै भस्म होवण मे ई धर्म नी
है। बिना सोच्यां समझ्यां सास्त्रां नै घोटवा में पण धर्म नी है।
छळ पड़पंच अर बेईमांनी सूं पैसो कमाय नै दांन देवण में
पण धर्म नीं है। धर्म मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, थांनक,
उपासरा, मठ, गुरुद्वारा अर ठाकुरद्वारा में पण नीं है।
धर्म तो हिया मे है, जीवण मे है, सही सोचवा में अर सही
कांम करवा मे है। धर्म अहिंसा में है, सत आचरण में है,
प्रेम में है, न्याय में है, सदाचार अर सद्विचार में है। धर्म
पोता नै जाणवा मे, ओळखवा में अर समझवा में है। धर्म
परमारथ में है। धर्म जिम्मेवारी अर कर्त्तव्य रा पाळण मे
है। धर्म अमीरी, गरीबी, जात-पांत, सांप्रदायकता अर
प्रांतीयता रा भेदां नै मिटावण में है। धर्म दीन दुखियां नै गळै
लगावा मे है। धर्म ईमांनदारी सू वेवार करवा में है। धर्म कम
सूंकम चीजां सूं आपरो कांम चलावण में है। धर्म सत अर
अहिंसा पर अटळ रैवा में है, धर्म कैवणी अर करणी एक
राखवा में है। धर्म रूढ़ियां, अंधविस्वासां, थोथी परंपरावां,
खोटी धारणावां अर खराब संस्कारां नै मिटावण में है। धर्म
अबखी वेळा में ई नेकी पर रैवा में है। धर्म मन री निर-
मळता, पवित्रता अर सुतंतरता में है। धर्म समाज सूं थोड़ो
लेवण में अर घणो देवण में है। एक बात में इज कहूं तो

"अहिंसा संजमोतवो" है। धर्म वो विचार, वचन या आचरण है के जिणसूं संसार रा सुख नै आंच नी आवै ।

इण सब्दां नै कोई मिनख, समाज या राष्ट्र खराब नी कैय सकै। कारण के ऐ जीवण री मूळ बातां है, यां रै बिना जीवण एक पलक ई नी चाल सकै। हां आ बात जरूर है के आज काल नया ट्रेड मार्क लाग्योड़ा अनोखा अनोखा धर्म है । यारी पुरांणी अर नवी करतूतां देख नै नफरत व्है। इणीज धर्मा रै नांम पर, पंथां अर संप्रदायां रै नांम पर, जीवता मिनखां नै आग मे होम दिया, इणीज धर्मां रै नांम पर छळ, पड़पंच, पाखंड, वेईमांनी, अन्याय, अत्याचार अर व्यभिचार चालता रह्या। धर्म रै नांम पर लाखां मिनखां नै सुरग रा सर्टिफिकेट देय नै ठग लिया। धर्म रा नांम पर आपस मे खून री होळी खेलीजगी। धर्म रा नांम पर भोळी ढाळी अबळावां रो जीवण नरक जिसो व्हैग्यो। इसा धर्म सूं साचांणी नफरत व्हैणीज चाहिजै । पण आंपां नै एक बात तरै सूं समझ लेणी चाहिजै के जैन, बौद्ध, वैदिक, हिन्दू, इस्लाम, इसाई वगैरै विसेसण लाग्योड़ा धर्म अहिंसा अर सत्य रै ज्यूं धर्म नी है। ऐ तो एक तरै रा समाज है, संघ है, सप्रदाय या तीरथ है, लेवल है, सांप्रदायिक ट्रेडमार्क है, अर धर्म री पोसाक है । कारण के महावीर साफ सब्दां में अहिसा, संजम अर तप नै इज धर्म कह्यौ है ।

इण वास्तै धर्म रो मतलब अहिंसा, सत वगैरै सद्गुण अर सगळां रो कल्यांण करण वाळौ है। जन्म सू आपनै कोई पण

संप्रदाय, पंथ या अमुक विसेसण वाळो धर्म परंपरा में मिळियौ व्है, पण सत्य अहिंसा वगैरे बातां रो धर्म रै रूप मे पाळण करवा में कोई नुकसांण नी है। साच तो साच इज रैवै। उण पर इसी कोई छाप नीं लाग सकै के ओ हिंदू रो साच के ओ मुसलमांन रो साच है अथवा ओ जैन रो साच है। कांई आपरी संतांन रै वास्तै मुसलमांन मा रै प्रेम में अर हिंदू मा रै प्रेम में कोई फरक रैवै ? या कोई छाप रैवै ? के ओ प्रेम तो चोखो है अर ओ फोरो।

इण वास्तै आप इण नगद धर्म रा सद्गुणां रो, सुभावां रो अर पोता रै कर्त्तव्यां रो पाळण करौ। वांनै छोडौ मत।

घणखरा लोग आ सोचै के धर्म तो परलोक री चीज है। अठै धर्म करांला तो आगोतर में चोखो फळ मिळैला। कारण के धर्म इण लोक री ज चीज तो है नीं। वो तो परलोक सुधारण री चीज है, पण आ इज एक मोटी नासमझी है। जिको धर्म इण भव में फायदो नीं दे सकै वो आगोतर कियां सुधार सकै ? दरअसल में धर्म तो ओ भव अर पर भव दोन्या नै सुधारवा वाळी चीज है। इण वास्तै जैन सास्त्रां में धर्म रो फळ इण तरै सूं बतायौ है—'इहलोय परलोय हियाए, सुहाए, निसेसाए, खम्माए, अणुगामियत्ताए भवई।'

धर्म मांनखा रा जीवण रै इण भव अर परभव रै वास्तै है। सुख रै वास्तै है, कल्यांण रै वास्तै है अर ताकत रै वास्तै है। इण भव में पाळियोड़ौ धर्म परलोक मे पण टेको राखै।

जिण तरै सूं कुदरत री दीनोड़ी चीजां—सूरज, चंद्रमा,

पांणी, धरती वगैरै रो सगळाई उपयोग कर सकै, उणीज तरै धर्म रो पण सगळा लोग उपभोग कर सकै। वो कोई खास मिनख, खास संप्रदाय, खास समाज, खास पंथ या खास राष्ट्र री ठेकेदारी में नी है। धर्म रो दरवाजो सबरै वास्तै खुलौ है। मिनख चावै जिण जात-पात, देस-भेस या प्रांत रो व्हौ।

जीवण में धर्म रो पाळण अर वेवार कठैई या करैई पण कियो जाय सकै अर कियो जावणौ चाहिजै। घणखरा लोगां धर्म नै उपासरां, मदिरां, थांनकां, गिरजाघरा, मस्जिदां, गुरुद्वारां अर रांम द्वारां मे बंद कर राख्यौ है। वे लोग धर्म नै वारली हवा नी लागवा देणी चावै। पण आ सब सू मोटी भूल है के धर्म मंदिर मे इज जीवतो रैय सकै अर बारै निकळतां पाण खतम व्है जावै। दुकान मे धर्म नी रैय सकै, ऑफिस में धर्म छिप जावै, घर मे धर्म नै एक कांनी राख दियौ जावै अर जीवण रा कोई पण वेवार मे धर्म कुम्हळीज जावै। राजनीति, अर्थ नीति अर समाज नीति मे धर्म ठेका देय जावै। आ बात नी व्हैणी चाहिजै। आ तो धर्म रै नांम पर एक मजाक है। धर्म तो हर टेम हर सांस रै सागै रैवणो चाहिजै। उण रो पलक पलक मे पाळण व्हैणौ चाहिजै। उण पर आचरण व्हैणौ चाहिजै। कोई पण मिनख आ बात तो नी कर सकै के जठै कांटा भागता व्है, उठै तो पगरखी उतार ले अर जठै कांटा नी भागता व्है, उठै पगरखी पैर लै। इणीज भांत जठै जीवण रूपी मारग में वेईमानी, छळ, लोभ, हिंसा रूपी कांटा लागण रो डर व्है उठै तो धर्म रूपी पगरखी उतार लेणी अर मंदिर, उपासरा वगैरै मे जठै इसा कांटा लागण रो डर नी

व्है, उठै धर्म रूपी पगरखी पैर लेवणी, आ धर्म री मजाक नी तो और कांई है ? ओ तो बहुरुपियापणो है। धर्म रो तो हर वखत पाळण व्है, जरै इज वो जीवण नै हरचौ-भरचौ बणाय सकै। दांनवी विरतियां नै हटाय नै मांनवी विरतियां वढाय सकै। कई लोग आ सोच्या करै अर आपरा कुटुम कबीला में मोटचारां नै कह्या करै—छोकरां ! हाल तो थांरै खावण पीवण रा दिन है, सो खाओ, पीओ अर मौज उडाओ। बुढापो आवै जरै धर्म ध्यांन करजौ। टाबरां नै कह्यो जावै—हाल थांरै भणीजवा गुणीजवा अर खेलवा रा दिन है, धर्म ध्यांन तो फालतू टेम में कियौ जावै। इसा लोगां री मूरखता पर हंसी आवै। कांई मोटचारपणा मे, जीवण रा हर वेवार मे, दिनूगा सू लेय'र संभया ताई हर एक बात में धर्म रै आचरण रो ध्यांन नी राखणौ चाहिजै ? कांई टाबरां रै खेल कूद मे अर भणाई पढाई मे धर्म नै जगै नी देवणी चाहिजै ? कांई अधकड़ां नै दुकानदारी में अर सामाजिक वेवार मे धर्म रो पाळण नी करणौ चाहिजै ? भगवांन महावीर तो हर वखत धर्म पाळण में साव-धांनी राखण रो उपदेस दियौ है—

'जरा जावं न पीड़ेइ, वाही जावं न वड्ढइ।
जाविंदिया न हायति, ताव धम्मं समायरे।

जठा तांई बुढापो घेरो नी घालले, मांदीवाड़ नी दबायलै, इंद्रियां कमजोर नीं पड़ जावै, उण रै पे'ला पे'ला धर्म रो पाळण करलौ।

एक आदमी बजार कांनी दड़ीछंट दौड़्यौ जावतौ हो। मारग में एक जणै उरणै पूछ्यौ—'भाई, थें कठै जाय रह्या

हो ?' उणे कह्यो—'मजूर लावण नै', 'क्यू किण वास्तै ?' वो बोल्यो—'घर मे आग लागगी है, इण वास्तै कुओ खुदावणो है अर आग बुझावणी है।' पडुत्तर सुण नै आगलो आदमी हसण लाग्यो अर उणें कह्यो—'आग लागी जरै थे कुओ खुदावण री सोची। पे'ला थांरी अक्कल कठै गई ही ? 'ठीक इसीज बात बुढ़ापा में धर्म ध्यांन करण री है। धर्म रै वास्तै तो हर वखत सोचतो रैवणो चाहिजै। नीतिकारां कह्यो है—

'गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्'

समझलो के काळ चोटी पकड़ राखी है इण वास्ते हरदम धर्म पर आचरण करो। तुंगिया नगरी में एक आचारज चौमासो करण नै आया। वे एक मसांण में होय नै आया। मसांण मे ठौड़-ठौड़ सिलालेख लाग्योड़ा हा। वां पर लिख्योड़ो हो—ओ आदमी पांच वरस री अवस्था मे मर्यो, ओ च्यार वरस री उमर मे मर्यो अर ओ तीन बरस री। आचारज श्रावकां नै पूछ्यो—'आ बात कीकर हुई ? कांई थांरै अठै सब लोग टाबरपणा में इज मर जावै ? श्रावकां बात नै साफ करतां कह्यो—'महाराज, म्हांरै अठै मसांण मे, मरण वाळां री उमर नी लिखी जावै। अठै तो ओ लिख्यो जावै के उणै कितरा वरस धर्म ध्यांन कियो। जिको आदमी जितरो धर्म ध्यांन करै उणरो पूरो हिसाब धर्म खाता मे रैवै। म्हे कुल जोड़ लगाय नै सिलालेख पर उणरी उमर लिख दिया करां।' आचारज घणा राजी हुआ अर कह्यो—'वाह भाई वाह, आ तो बड़ी चोखी बात है। इणसूं हरेक आदमी नै प्रेरणा लेवणी चाहिजै,

जिको आदमी जितरा बरस धर्म ध्यांन करै, उणरी असली उमर उतरीज समझणी चाहिजै। बाकी टेम तो नकांमो इज गयौ—ओ मांनणो चाहिजै।

इण धरती पर केईक धर्म इसा पण है के जिको लोभ अर डर रा पाया पर टिक्योड़ा है। ओ पण ठीक नी है। जिको धर्म सुरग रो लोभ अर नरक रो डर बताय नै मांनखा नै प्रेरणा देवण वाळो है, उणां री नींव काची है। वै तर्क रूपी आंधी रा एक झपट्टा मे इज उड जावण वाळा है। इण धर्मा रो पायो अंध सिरधा री रेत पर चुण्योड़ो है। वां में कायम-पणो नीं है। मांनखा रै मन सूं सुरग रो लोभ अर नरक रो डर हटतां इज वे धर्म रै सांमां ई नीं झाकैला। आजकाल रा घणखरा मोट्यारां री आ इज हालत व्है री है। धर्म पर वां री सिरधा धीरै धीरै डिग री है। इण में वां रो एकलां रो दोस नीं है, उणां नै धरम रो सरूप ठीक ठीक नी समझायो गयो है। फगत अंध-सिरधा, लोभ अर डर रै बळ पर वां रै दिमागां मे धर्म नै ठूंस्यो गयौ है। ओ धर्म कर्त्तव्य प्रेरित के विवेक प्रेरित नी होवण सूं वांरै दिमाग सूं निकळ रह्यो है। इण वास्तै इण बुद्धिवादी जुग मे लोभ अर डर रा कादा सूं निकाळ नै धर्म नै कर्त्तव्य, विवेक, समझदारी रा सरूप सूं समझावणो चाहिजै अर खास कर परतख आचरण कर नै बतावणो चाहिजै। जरै इज धर्म जीवण मे उतर सकैला। दूजी बात आज रा बुद्धिवादी जुग में विग्यांन संसार रै सनमुख नवा नवा आविस्कार राख'र दुनिया में अचूभा मे नांख दी है। सगळा संसार नै एक छोटीसीक जगै बणाय दी है। इसी टेम

मे धर्म जे विग्यांन नै साफ खराब बताय नै उणरो विरोध करतौ रैवै तो इण बात में कोई तत नी है। धर्म में तो वा ताकत है के वो हर जगै मारग बताय सकै, तो पछै विग्यांन रा क्षेत्र मे प्रेरणा देवण मे आघौ क्यूं रैवैला? धर्म विग्यांन रै सागै संगत नीं बैठाई। विग्यांन नै धर्म प्रेरणा नी दीवी तो विग्यांन खोटे मारग लाग जावैला अर एक दिन उल्टो धर्म पर सवार व्है जावैला। धर्म नै जमीन-दोस्त कर नांखैला। इण वास्तै धर्म नै प्रेरणा देवणी चाहिजै के विग्यान संसार रै वास्तै सुखदाई कीकर बण सकै। विग्यांन आपो आप न तो मारण वाळौ है अर न तारण वाळौ उणरी ताकत तो उणरो उपयोग करण वाळां री बुद्धि पर है। जे धर्म, विग्यांन रो प्रयोग करण वाळां री बुद्धि धर्म कानी मोड़ दे तो संसार सुरग बण सकै। महरिसि वेद व्यास कह्यौ है—

'धर्मे मतिर्भवतु वः सततोत्थितानाम्'

हमेसां तरक्की चावण वाळां! थांरी बुद्धि धर्म पर लागी रैवै, धर्म रो जिको कांम सास्त्र करता आया है, वो इज कांम विग्यांन करैला। सास्त्र अर विग्यांन दोनां रो कांम विस्लेसण करण रो है, संसार नै सनमुख सत नै राखण रो है, उण सू आपां नै क्यूं डरणी चाहिजै?

घणखरा विचारक कर्त्तव्य, फरज अर ड्यूटी नैं धर्म कैवै। वे कैवै के पोता पोता रै कर्त्तव्य रो पाळण करणो धर्म है। आपरो फरज अदा करणो धर्म है। आपरी ड्यूटी बजावणी धर्म है। ज्यू के राजपूत रो धर्म है रक्षा करणी, बिरांमणां

रो धर्म है पढ़णो अर पढ़ावणो। वैस्य रो धर्म है विणज वैपार अर खेती करणी अर सूद्रां रो धर्म है सेवा करणी। वकीलां रो फरज वकालत करणी है, डाक्टरां रो फरज इळाज करणो है, न्यायाधीसां रो फरज न्याय करणो है अर मंत्रियां रो फरज राज चलावणो है। पण धर्म रो ओ अर्थ घणो छोटो है। फरज सब्द सूं धर्म सब्द घणो मोटो है। फरज सब्द में त्याग भेळो नी व्है तो उठै जितरौ देवणो है, उतरौ इज लेवणौ। डाक्टर दवा या सलाह दीवी तो रोगी सूं फीस ले ली। अठातांई तो सोदो बराबर है। जो वो डाक्टर इमांनदारी सूं उतरीज दवा अर सलाह रोगी नै दे, जितरा कै उण नै रोगी सूं पैसा मिळ रह्या है। आ तो एक नीति हुई। धर्म नी हुओ। धर्म में तो कम सूं कम लेवणो अर बिना स्वारथ घणा सूं घणो देवणो है। फरज तो बदळ पण सकै। जिको आदमी आज वकील है, कालै अध्यापक रो कांम कर सकै। पण धर्म री कीमत तो हर जगै एक सरीखी इज व्है।

भारत में भारत रा रिसियां च्यार पुरसारथ बताया है— धर्म, अर्थ, कांम अर मोक्ष। इण च्यारां में मोक्ष तो छेलौ फळ है। अर्थ अर कांम नै धर्म रै सागै राखण री चेतावणी रिसियां आछी तरै सूं दीनी है। उणां सदेस दियौ है के धर्म पर आचरण करण सूं इज अर्थ अर कांम नै आछी तरै सूं भोग्यौ जाय। धर्म नै छोड नै अर्थ अर कांम रो सेवन करणो जीवण रै वास्तै एक खतरो है। दुख सूं छूटण रै वास्तै अर मोक्ष में जावणा रै वास्तै फगत एक इज मारग है अर वो है धर्म रै चरणां में जावणो। बिना धर्म रै संसार नरक वण जावैला

एक मे'ल में जैन सस्कृति रा मोटा महापुरुस बैठ्या हा। नीचै घर रा आंगणा में निन्याणूं करोड़ सोना री मो'रां रो ढिगलौ लाग्योड़ौ हो । उणरै आगै आठ सुंदरियां हाथ जोड़ नै ऊभी ही। उठै पांच सौ चोर आया। वे धन लेवणौ चावता हा । वांरै खनै इसी विद्यावां ही के जिणसूं वे ताळा तोड़ नांखता अर मिनखां नैं नीद में सुवाय देवता । उठी नै उण सुंदरियां रो लक्ष कांम हो। वे चावती ही के ओ महात्मा म्हांरै कावू मे आय जावै अर संसारिक सुखां रो भोग करै । एक कानी अर्थ रो जोर हो अर दूजी कांनी कांमरो पण उण महात्मा नैं न तो लोभ रो मोह फंसाय सक्यौ अर न काम रो मोह उणनैं घेर सक्यौ। छेवट तो जीत धर्म रीज व्है। वेद व्यासजी साची कही है—"यतो धर्म स्ततोजय:" सगळौ संसार उण महात्मा रा गुण गावै। जिको धर्म री सरण मे आवै, छेवट उणनैं मोक्ष मिळै ।

आप दुख सू छूटणो चावौ, दुनिया नै सुखी देखणी चावौ तो धर्म नै रग रग में रमायलौ । 'अट्ठि मिज पेमाणु रागरत्ते' हाडकां अर नसां में धर्म रूपी प्रांण वायु भरौ । धर्म आपरा कोई कांम नै नी रोकेला । वो आपरो खाणो पीणो वंद नीं करैला। वो तो आ इज कैवैला के जीवण री सगळी बातां में धर्म नै आगै राखौ, उण नै भूलो मत। 'सव्वाकला धम्मकला जिणाइ' सगळी कळावां में धर्म कळा उत्तम है । इण वास्ते अर्थ अर कांम में धर्म नै भूलो मत। उण नै आंख्यां रा तारा ज्यूं सनमुख राखौ ।

पण अफसोस रै सागै कैवणो पड़ै के आज धर्म बापड़ो

अर्थ अर कांम रा बोझा सूं दबग्यौ है । उणरी आवाज धीमी पड़गी है । उणरा कोई भाव ई नीं पूछै । जठै देखो जठै ई अर्थ अर कांम नै मांन दियो जाय रह्यौ है । सब जगै धन माल अर ऐस आरांम री तूती बोल री है अर धर्म बापड़ो पूंछ दबायां बैठ्यौ है । महाभारत लिखण वाळां महाकवि वेदव्यास वांरा जमांना में अर्थ अर कांम रो जोर देख्यौ तो जीवण सूं निरास होय नै कह्यौ है—

> ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष, नैव कश्चिच्छृणोति मे ।
> धर्मादर्थश्च कामश्च, सधर्मः किं न सेव्यताम् ।।

'म्हूं हाथ उठाय नै हाका करतौ कैय रह्यौ हू, पण म्हारी बात कोई नीं सुण रह्या है । म्हारौ कैवणौ है के धर्म इज खास चीज है । उणसूं इज अर्थ अर कांम मिळै । उण धर्म नै क्यूं नीं धारण कर रह्या हो ?

आज मांनव जीवण रा पाटिया पर अर्थ अर काम सिघासण पर चढ़ियोड़ा है अर धर्म वां रो दास बण्योडौ है । जिकौ धर्म ससार नै मारग बतावण नै आयौ हो, जगत रो भरण पोसण करण नै आयौ हो, उणरी आज कोई नी पूछ है । सभा में, सोसाइटियां मे, उद्घाटना में, भासणां में, संस्थावां में, उपासरां में, मंदिरां में अर थांनकां में सगळी सगळी जगै आज पैसा वाळां री पूछ है । वांनै ऊंचो आसण दियौ जावै । ईमांनदार अर धर्म पर चालण वाळा आदमी नै नीचौ बिठायौ जावै । इण हालत पर आंपां नै गभीरता सूं विचार करणौ चाहिजै अर समाज में घुस्योड़ी बुराइयां नै धक्का देय'र वारै

निकाळणी चाहिजै । जरै इज धर्म री इज्जत कायम रैय सकैला, त्याग अर सदाचार नै ऊचौ आसण मिळ सकैला ।

आप लोग धर्म रा मर्म नै समझौ, उण नै परखौ अर जीवण मे उतारौ, इसी म्हूं आपसूं उम्मीद राखू ।



चालता रहौ, आगै बधौ

मांनखा री बीत्योड़ी जुग उणरै सनमुख इज है, जिणमे समाज रै जीवण री रेखावां चमक री' है। हजार हजार अर लाख लाख बरस बीतग्या तांम पण उणरै जीवण री रेखावां झांखी नीं पड़ी। आज पण वै रेखावां उणीज भांत चमक री' हैं।

मांनखा रा आद अनाद जुग जिण नै जैन मत में जोगलिक जुग कैवै, अर वैदिक मत में त्रेता जुग कैवै, उण जमांना नै देखां तो मालूम व्है के उण वखत रो मांनव फिरोकड़ हो, खानाबदोस हो, बिना घर बार रो हो, वो डांग माथै डेरा बसाय नै हर वखत अठी उठी फिरतो रैवतो। वो आजकाल रा मांनव रै ज्यूं एक जगै घर बसाय नै नीं रैवतो। वो तो फिर फिर नै कुदरत रा फूटरापा नै देखतो रैवतो। कुदरत रै दीनोड़ी बखसीसां—पवन, पांणी, फळ-फूल अर कंद मूळ रो उपयोग करनै आपरो जीवण आणंद सूं बितावतो। उणरी सगळी जरूरतां दरखतां सूं इज पूरी व्है जावती। कारण के उण जमांना में मिनख री जरूरतां पण मामूली इज ही। उणें कुदरत रा खोळा में आपरै जीवण री अमोलक घड़ियां बिता-वतां अलेखां बरस बिताय दिया। पण दिन लाग्यां समै पल्टो खायो अर दरखत मांनखा री जरूरतां नै पूरी करता थाक

ग्या । उरण वखत एक मोटौ विचारक अर जीवण रो कळाकार जनम्यौ । उणें वन वन भटकता मिनख नै उणरी जरूरतां पूरी करण वास्तै खेती करणी सिखाई, हाथ रा हुनर सिखाया, उण सूं उण जमांना रो मिनख आर्य बाजण लागौ । उणे कर्म जोग री दीक्षा दीवी । अबै मांनखो घर बणाय नै रैवण लाग्यौ, गांवड़ा अर नगर बसाय नै सभ्यता अर संस्कृति रो प्रचार करण लाग्यो अर समाज बणाय नै पोता रो जीवण आणद सू बितावण लाग्यो ।

इणरै पछै समाज में सगळा कांम ठीक ढंग सू चालता रंवै इण वास्तै च्यार वर्ण वताया गया—बिरांमण, क्षत्री, वैस्य अर सूद्र । इण च्यारूं वर्णां रो मूळ धन एक इज हो के समाज रो जीवण सुख सूं वीत सकै । जिण वखत ऐ वर्ण बणाया गया उण वखत ऊंच नीच री कोई भावना नी ही । फिरोकड़ सुभाव में कायमी आयां पछै इण च्यारूं वर्णां री विरती दूजा रूप सूं पांगरण लागी ।

विरांमण वर्ण रो मूळ कांम हो, समाज रा विकास खातर मनन-चिंतन करणौ, विद्या अर कळा रो प्रचार कर नै समाज नै संस्कारी बणावणो। समाज रा कर्त्तव्यां री मरयादा बांधणी अर इण भांत समाज री नैतिक चौकीदारी कर नै उणनै तरक्की कांनी लिजावणी । आ मोटी जवाबदारी निभावण वास्तै विरांमण पोतै विद्या पढ़ण अर पढ़ावण खातर आप रो घर-बार छोडनै देस परदेस फिरता रैवता । दूर-दूर प्रांतां अर मुल्कां में जाय नै समाज रा विकास नै आछी तरै सूं देखता ।

बांरी आ जात्रा 'विद्या-जात्रा' बाजती। विद्या जात्रा पूरी व्हैतां इज वे जग्य सत्रां में जावता। चौमासा रा च्यार महीना एक ठौड़ बैठ्यां पछै वे 'चरैवेति-चरैवेति' रा सिद्धांत माफक फिरता इज रैवता। जीवण री छेली घड़ियां में पण वे कीड़ी-मकौड़ी रै ज्यूं मरचा करता, फिरतां-फिरतां मरणौ वधारै पसंद करता।

क्षत्री रो कांम हो अन्याय अर अत्याचार सू समाज री रक्षा करणो। उण वखत रो क्षत्री फगत राजगादी पर बैठ नै मोटा-मोटा मे'लां में मौज-सौक इज नी करतौ, पण जिण घड़ी उणरै कांन में कोई गरीब या अभ्यागत री पुकार आवती, वौ दौड़नै उणरी रक्षा करण नै जावतौ। जीव नै हथाळी में राख नै वो पोता री इण जवाबदारी नै निभावतौ। वांरै कांनां मे वृद्धस्रवा इंद्र रौ ओ मंत्र गूंजतौ रैवतौ—'चराति चरतौ भग:' जिकौ चालतौ रैसी उणरो तकदीर पण आगै वधतौ रैसी पण जिकौ बैठौ रैसी, उणरो तकदीर पण बैठ जासी इण वास्ते क्षत्री पोता रा देस, समाज अर जात री रक्षा खातर आपरा फौज-फंटा सागै फिरता रैवता। आ वांरी 'विजय-जात्रा' बाजती।

वैस्य रो कांम हो समाज में जिण चीज री जठै जरूरत व्है, उठै वा चीज पूगती करणी, पैदाइस अर वंटवाड़ रो हिसाब राखणो। उण रो ओ कांम विणज वेपार बाजतो। समाज रै सेवा री आ जवाबदारी पूरी करवा वास्तै वैस्य हिमाळै सूं कन्या कुमारी तांई अर अटक सूं कटक तांई इज नी पण दरियां

नै लांघ नै परदेसां मे पूगतो । उठा सूं जरूरत री चीजां लेय नै आवतो अर वांरै चाहिजै जिकी चीजां देय नै आवतो । इण तरै वो करेई करेई तो एक मोटा काफला सागै लाखां रुपियां रो माल लेय नै एक जगै सूं दूजी जगै जात्रा करतो । माल रो निकास अर आवक करण रै कारण वो सार्थवाह रै नांम सू ओळखीजतो । इण तरै वो नीति सू वैपार कर नै पोता री अर समाज री जीवण जात्रा नै सुखी बणावतो ।

सूद्र रो कांम हो भांत-भांत री कळावां, कांमां अर उपज सूं समाज नै च्यारूमेर सूं वेफिकर बणावणो । सूद्र री जवाब-दारी दूजां करतां घणी वधारै ही । कळा अर कारीगरी सीखण वास्तै उण नै जगै जगै जावणो पड़तो । उण री आ मुसाफरी 'सेवा-जात्रा' वाजती ।

इण तरै सूं च्यारी वर्णां जात्रा नै मांन देवता । संत महात्मा जात-पांत रा बंधण सूं बारै हुया करै, वां नै वर्णा री भींतां रोक नी सकै । ऐ लोग च्यारी वर्णा सूं निरलेप रैवता थका समाज नै नैतिक अर धार्मिक मारग बतावता, समाज रा नैतिक अर धार्मिक पोरादार होवता । वां रै कोई घर बार के आश्रय नी हुया करतो । वै तो सगळी दुनियां नै पोता रो कुटुंम मांन नै चालता । सगळा संसार नै आध्यात्मवाद कांनी लिजावण वास्तै, समाज मे धर्म री जोत जागती राखण वास्तै, वै एक जगै सू दूजी जगै फिरता रैवता । नदी रा वेग रै पांण विघनां री चट्टानां नै तोड़ता थका आगै वधणो अर गांव-गांव मे धर्म री अलख जगावणो ओ इज वांरै जीवण रो लक्ष हो ।

एक जगै पर वै घणा दिनां तांई थिर नीं रैवता। जे कदाच वां नै कोई कारण सूं रुकणो पड़तौ तो वै तन सूं भलाई रुकौ, मन सूं नीं रुकता। इण वास्तै भारत रा संत महात्मा फिरता इज रह्या है। एक जगै रा मोह में फँस नै वै कदैई रुकिया नी। चौमासा नै छोड नै लारला आठ महीना फिरतौ रैवणौ ओ इज वां रो खास कांम हो। ओ इज कारण है के आगमा में जठै साधक संजम रो मारग पकड़ नै भेख धारण करै, उठै भेख (दीक्षा) रै अर्थ में 'पवज्जा' अर 'प्रव्रज्या' सब्द आवै। जैन साधु रै वास्तै जगै-जगै सास्त्रां में प्रव्रजित सब्द कांम में आवै। इण सब्द री व्युत्पत्ति इण भांत है—प्र उपसर्ग है अर व्रज धातु चालवा रा अर्थ में है। दोन्यां नै भेळा करण सूं अर प्रत्यय लगावण सूं प्रव्रज्या सब्द बणै। उण रो अर्थ है बराबर फिरतो रैवणौ। इणीज वास्तै वैदिक साहित मे 'परिव्राजक' सब्द आयौ है, इण रो अर्थ है घर-बार रा मोह नै छोड नै हर वखत फिरतौ रैवणौ।

आज सूं ढाई हजार बरस पे'ली भारत में एक संस्कृति रो विकास हुयौ हो, जिणरौ नांम है स्रमण-संस्कृति। जैन अर बौद्ध इण संस्कृति री दो धारावां है। सरूपांत में तो आजीवक अर आकारवादी वगैरै अनेक धारावां ही। पण मौजूदा टेम में जैन अर बौद्ध ऐ फगत दो धारावां इज बची है। दोन्यूं धारावां रा संत ठेट सूं फिरोकड़ रह्या है।

महात्मा बुद्ध रो मत हो के जिण भांत गेंडो एकलो वन में निरभै होय नै फिरतो रैवै, उणीज भांत साधुवां नै निडर होय

नै फिरणौ चाहिजै । एकर उणां आपरा साठ चेलां नै बुलाय नै संदेस दियौ हो—

'चरथ भिक्खवे बहुजनहिताय बहुजनसुखाय,
चरथ भिक्खवे, चारिकां, चरथ भिक्खवेचारिकां ।'

हे भिक्खुआं, दुनियां रै परमारथ खातर अर अलेखां मिनखां रै सुख खातर फिरता इज रहौ । भिक्खुआं, थांरी जीवणचर्या वास्तै हमेसा चालता रहौ । सम्राट असोक ई बौद्ध धर्म अंगीकार कियां पछै दिग्विजय छोड नै वरसौ वरस धर्म-जात्रा करतौ रैवतौ ।

बौद्ध धर्म दूर-दूर तांई लंका, जावा, सुमात्रा, बरमा, स्यांम, चीन, जापान, तिब्बत एक एसिया रा कई मुल्कां मे फैलग्यौ, उण रो एक इज कारण हौ अर वो औ के बौद्ध भिक्खुआ रो पैदल विहार करणौ । बौद्ध भिक्खुआं दूर-दूर तांई फिर-फिर नै पोता रा आचरण सू, उपदेसां सू अर बुद्ध सिक्षा सू तमांम मुल्कां मे धर्म, नीति, सभ्यता अर सस्कृति रो प्रचार कियौ ।

भारत रै महापंडत स्री राहुल सांकृत्यायन घुमक्कड़ सास्त्र नांम री एक पोथी लिखी है । उण मे उणां पुरांणा जमांना सूं फिरोकड़ां (घुमक्कड़ां) रो हाल लिख्यौ है अर घूमण-फिरण सू फायदा बताया है । भगवांन महावीर नै ई उणां घुमक्कड़राज री पदवी दी है अर वां रै फिरण रै प्रभाव रो रोचक ढग सू हाल लिख्यौ है ।

भगवांन महावीर पण साधु-साध्वियां नै उपदेस देवतां कह्यौ है—

'भारंड पक्खीव चरे ऽपमत्ते'

हे स्रमणां ! भारंड पक्षी रै ज्यूं मस्त होय नै विहार करौ, भ्रमण करौ, विचार तारौ। जैन अर बौद्ध साधुआं रै विहार रै कारण इज उण प्रांत रो नांम बिहार पड़ग्यौ।

जूना जमांना री बात नै छोडनै मौजूदा समै पर निजर नांखां तो आज ई सैकड़ां जैन साधु भारत रा इण खूणा तांई पैदल घूम घूम नै मांनखा रै मन में अहिंसा अर सत री जोत जगाय रह्या है। वां रै खनै न घोड़ा है, न ऊंट है, न मोटर है, न विमांन है, न साईकल है अर न बग्घी है। तांमपण जैन संस्कृति रा सत एक गांव सूं दूजा गांव तांई, एक नगर सूं दूजा नगर तांई अर एक प्रांत सूं दूजा प्रांत तांई संजम भरी जिंदगी री मस्ती मे झूमता थकां हजारां कोसां री पैदल जात्रा करै अर मांनखा नैं आध्यात्मिक अर धार्मिक विचारां रो प्रकास देवता रैवै। वांनै उघाड़ै माथै, उभांणै पगां, आपरा पोथी पत्रा अर कपड़ा सागै लेय नैं चालणौ पड़ै। वांनै न कोई साथ री जरूरत है अर न सवारी री। वे तो गांवां अर नगरा में पोता री मरियादा सूं रैवता थका, मांनखा री मुसीबतां नै धार्मिक निजर सूं मिटावण री कोसिस करैं। इण वास्ते इज कह्यौ है—

'विहारचर्या मुणीणं पसत्था'

पैंदल चालणौ मुनियां वास्तै घणौ आछौ है। अवै संत विनोबा कांनी देखौ। भारत रै इण मोटे विचारक पैदल फिर फिर नै देस में एक नवी अहिंसक विचार क्रांति नै जन्म दियौ

है। भूदांन सूं लगाय नै ग्रांम दांन तक रै आंदोलन सूं किण तरै दुनिया रा दिल दिमाग नै हिलाय दियौ वो सूरज री रोसणी रै ज्यूं साफ है। भारत रै इण रास्ट्रीय संत पग जात्रा सूं कमाल कर दियौ है। इण सूं विदेसी लोग पण अचंभा में पड़ग्या है। वे ई पोता रा हक हकूक छोडण री बात घर घर अर झूंपड़ा झूंपड़ा तांई पूगावण वास्तै पैदल जात्रा करण लागग्या है। भारत रा इण अनोखा संत खनै एक इज मंत्र है—चालौ, आगै वधौ, पग रस्तै चालबौ इज करौ।

नोवाखाळी मे जिण वखत हिंदू मुसलमांनां रो दंगौ हुओ, उण वखत महात्मा गांधी पैदल जात्रा क्यूं पसंद करी ! इणरौ कारण ओ इज हो के गांव गांव मे छोटा सूं छोटा अर दुःखी सूं दुःखी मिनख री पुकार सुणी जा सकै।

परण अर वाहणां पर बैठनै सपाटा सू जात्रा करण वाळां रो मेळ जनता सागै नी रैय सकै। ओ इज कारण है के भारत री रास्ट्रीय महासभा कांग्रेस नै मजवूत बणावण रै वास्तै अर कांग्रेस रा सिद्धांतां में जीवण लावण वास्तै कांग्रेस रा मोटा नेतावां पदजात्रा सूं जनता सागै सेद-मेंद राखण रो मारग तै कीनौ है। उणां कांग्रेसी किमतरियां नै पण पदजात्रा रो हुकम दियौ है। साच्यांणी जे काग्रेस वाळां जे पूरा भारत में पद-जात्रा सरू करदी तो गांमड़ां री परजा सागै वांरी सेंद-मेंद वधैला अर लोगां रै साचा दुखां री जांण व्हैला। पैदल जात्रा मे भारत रो नसीब पळटण री ताकत है।

सही वात पूछौ तो मुसाफरी रो साचौ आणंद पैदल

चालवा में इज है। परण ऊपर के वाहण में बैठनै कोई इलाको सपाटा सूं पार तो कियौ जाय सकै पण उठा री परजा सूं एक रत्ती भर ई ओळखांण नीं व्है सकै। उठा रा मिनखां री असली हालत कांई है, उणरो बिल्कुल पतो नीं लाग सकै। इण कारण इज साधु मांनखा रै जीवण री उळझ्योड़ी गूंछळियां सुळझावण नै, लोकजीवण में घुसयोड़ी बुराइयां रो इळाज करण नै अर पोता रै साधपणा री साधना निभावण नै पैदल विहार करै। एक आथमणै विचारक कह्यौ है—

He travels best, who travels on foot.

जिकौ पैदल जात्रा करै, उणरी जात्रा इज सब सूं आछी है। पैदल जात्रा जीवण में चेतणता रो लक्षण है। जिणनै एकाध वेळा ई पैदल जात्रा करवा रो मौको मिळचो व्है, वो इज चेतणता रो अनुभव कर सकै। कुदरत रा नवा नवा नजारा देखणा व्है तो पैदल जात्रा करणी चाहीजै। सरीर सूं अर मन सूं निरोग व्हैणो व्है तो पैदल जात्रा घणी फायदामंद है। ग्यांन अर अनुभव रो परकास लेवणौ व्है तो पैदल जात्रा घणी कल्यांणकारी है। समाज री सही हालत देखणी व्है तो पैदल जात्रा घणी जरूरी है। मांनखा रो सुख दुख देखनै सहानुभूति दिखावणी व्है तो पैदल जात्रा सब सूं उत्तम है।

फगत भारत रा धर्म अर सास्त्र इज पैदल जात्रा नै मांन देवता रह्या व्है, आ बात नी है। जापांन मे सिंटो धर्म अर बूसिडो धर्म ई जात्रा रा फाइदा नै स्वीकार कीनो है। हज करवा रो हुकम देवण वाळा इस्लांम धर्म पण पैदल जात्रा नै

मांन दीनी है। तापड़िया रा कपड़ा पै'र नै जेरूसेलम री पवित्र धरती तांई जात्रा करण वाळा ईसाई भगतां पण पैदल जात्रा घणी पसंद कीवी है।

भारत रा वैदिक धर्म में अर उणरी साखावां—वैस्णव धर्म, सैव धर्म अर हिंदू धर्म में हरेक भगत नै तीरथ जात्रा करण रो हुकम दियो है। पुरांणा जमांना में जिण वखत आवण जावण रा कोई साधन नी हा, उण वखत लोग पैदल तीरथ जात्रा करवा निकळता अर खूब ग्यांन-अनुभव लैयनै पाछा आवता।

मांनव जीवण री ऊंडाई, जीवण रो सही अनुभव, सांस्कृतिक ग्यांन अर रीत भात रो अनुभव जिको पैदल घूमण फिरण सूं व्है सकै, वो वाहण पर वैठ नै जात्रा करण सूं नी व्है सकै। भूगोल रा जितरा विद्वांन हुआ है अर वां पोथ्यां लिखी है, उणां कोरा कल्पना रा घोड़ा इज नी दौड़ाया है, पण उण जगावां नै देख-परख नै पछै पोथ्यां लिखी है। आप देखोला के जितरा ई मोटा मोटा कवि हुआ है, वे सगळा ई घुमक्कड़ हा। कवि कुळगुरु काळिदास रो नांम आप सुण्यौ व्हैला, जिणरी रचनावां नै देखनै विदेसी लोग पण चकित हुवा है। वां री कविता में जो चमत्कार है वो घूमण रै कारण इज आयो है। उणां उजळा, धवळा, बरफ सूं ढक्योड़ा हिमाळै अर सदा हरियाळा रैवता देवदारां रै कुदरती फूटरापा रा जो वखांण किया है, वै निजरां देखनै किया है, कांनां सुणनै नी किया है—

अमुपुरः पश्यसि देवदारुं, पुत्रीकृतोऽसौ वृषभध्वजेन

राजा रघु री संसार विजैजात्रा में, उणां जिण जिण मुल्कां रो हाल लिख्यौ है, उणमें सूं घणखरां वांरै निजरां दीठौड़ा हा अर जिकौ नी दीठौड़ा हा, वांरी पूरी जांण लेयनै पछै लिख्यौ है ।

आप कादंबरी महाकाव्य रो नांम सुण्यौ व्हैला, जिणरी बराबरी संस्कृत गद्य साहित में आज दिन तांई कोई ग्रंथ नीं कर सक्यौ है । इसौ अनोखौ दूजौ ग्रंथ देववांणी में ढूंढचोडौ ई नीं मिळ सकै । इणनै लिखण वाळा हा महाकवि बाणभट्ट । वांरै बारै मे संस्कृत में एक कैवत है के—

'बाणोच्छिष्टं जगत् सर्वं'

वै पक्का फिरोकड़ हा । वै कई दिनां तांई तीन दरजन सूं वधारै कवि अर कलाकारां नै साथै लेयनै इणां मुसाफरी करी ही । दस कुमारचरित रा लिखणवाळा महाकवि दंडी पण पक्का फिरोकड़ हा । कांची रा पल्लव राज री सभा रा रत्न रैवतां थकां ई इणां खूब देसाटण कियौ ।

कळिकाळ सरवग्य आचारज हेमचंद्र सूरि, वादिमांनमर्दन सिद्धसेन दिवाकर, हरिभद्र सूरि, अर अभयदेव सूरि वगैरै जित-राई संस्कृत अर प्राकृत रा विद्वांन हुआ है सगळा ई पक्का फिरोकड़ हा । जैन साधु होवण रै कारण वांनै फिरणौ तो पड़तौ इज हो पण भांत-भांत री विचारधारावां, संस्कृतियां, पर-परावां, अर जण-रुचियां रो ग्यांन लेवण नै वै खूब आणंद सूं घूमता । बृहत कल्प-भास्य अर व्यवहार-भास्य में साधुवां नै

उग्रविहारी अर अप्रतिबद्ध विहारी होवणौ जरूरी बतायौ है। इणरै सागै देस-देस री भासावां, संस्कृतियां अर रैण-सैण री जांणकारी रै वास्तै ई 'उग्रविहार' करणौ चाहिजै जिणसूं परजा री रीत-भांत देखी जाय सकै।

हिंदी-साहित रा महाकवि देव पण पक्का फिरोकड़ हा। इणां फिर-फिर नै देस-देस री लुगायां रा चितरांम बणाया। कविता रा विकास में पण फिरणौ कम कीमत नी राखै।

आ वात सही है के पैदल-जात्रा में पग-पग माथै मुसीबत आवै। पैदल जात्री नै उण तकलीफां सूं टक्कर लेय नै आगै वधणौ पड़ै। पैदल फिरणौ कोई फूलां री सुखसेज नी है, दुखां अर तकलीफां रो मारग है। कस्ट सैवण वाळो इज पैदलजात्री वण सकै। उणरै सनमुख करैई-करैई तो दुख रा डूंगर आय जावै। कठैई सत्कार मिळै तो कठैई दुत्कार, कठैई प्रेम रो इमरत मिळै तो कठैई द्वेस रो हलाहल जे'र। कठैई ठैरवा वास्तै मोटा-मोटा राजमै'ल मिळै तो कठैई भागी टूटी झूपड़ी, कोई वखत मेवो लापसी मिळै तो कोई वखत मुट्ठी चिणा। इण वास्तै इज एक कवि कह्यौ है—

'परदेस कलेश नरेस हुं को'

परदेस में राजा नै ई तकलीफ मिळै तौ पछै साधारण मिनख री तो वात ई कांई? सांचौ साधक सांचौ पद-जात्री आप री जात्रा में जिकी तकलीफां आवै, बाधावां आवै, विघन आवै, वां सूं घवरीजै नी, झिझकै नी अर रुकै नी। मुसीबत रै टेम वो इण सेर सूं सबक लेवै—

काट लेना हर कठिन मंजिल का कुछ मुश्किल नहीं।
इक जरा इन्सान में चलने की आदत चाहिए॥

पैदल चालण वाळा साचा साधक में सगळी चेतणा सक्ति जाग जावै। वो नवा-नवा मिनख, नवा-नवा गांम, नवा-नवा मकांन, नवा-नवा खांन-पांन देखै। उण वखत उणरी विराट चेतणा हंसती थकी अड़चणां रो स्वागत करण नै तैयार रैवै। उणरै मन में कवि री आ वांणी गूजण लाग जावै—

करे खाना बदोशी को खुदा खुदकार सामानी।
नयी मंजिल, नया बिस्तर, नया दाना, नया पानी॥

इण भांत नित नवा विचार हिया में भरनै पद जात्री सिध रै ज्यूं आपरा धे' कांनी आगै वधै। चावै जितरा विघन आवै, आंधी आवै, पण उणरा पग धूजै नीं, हिमाळै री चट्टांन रै ज्यूं अडग रैवै।

भारत री संस्क्रति रा फिरोकड़ संत वैदिक रिसियां रै सब्दां मे—'चरन्वै मधु विन्दत्ति !' चालण वाळां नै मधुरता मिळै। जीवण रो साचो मिठास तो वांनै इज मिळै। वे— 'स्वांतः सुखाय' रै वास्तै नीं पण 'सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय' रै वास्तै फिरचा करै। वे जठै कठै ई जावै जिण किण नै ई मिळै अर मिळण वाळा में जे ग्यांनरूपी रोसणी व्है तो उणनै जगाय देवै।

जिण मिनख री कीकीआं मे जोत व्है अर उण पर कोई कारण सूं मोतियो आयग्यो व्है तो डॉक्टर आपरेसन करनै उण मोतिया नै हटाय देवै। जिणसूं उण मिनख नै पैला

जिसी दीखण लाग जावै। पण जिण मिनख री आंख में रोसणी नी व्है, उण पर सूं मोतियो हटाणै पर ई निजर नी आय सकै। कारण के मूळ में रोसणी नी है। डॉकटर जचै जितरोई हुसियार व्हो, वो रोसणी नी देख सकै। ठीक आ इज बात साधक रै बावत है। साधक जठै विहार करनै जावै, उठा रा मिनखां में जो सिरधा व्है, ग्यांन लेवण री जोगता व्है, साधना कांनी आगै वधवा री इच्छा व्है, तो साधक वां रै आत्म रूपी आख्यां पर आयोड़ा मोह अर वासणा रूपी मोतिया नै हटाय नै ग्यान री रोसणी देय सकै। पण वा मे ग्यांन लेवण री ताकत इज नी व्है, इच्छा इज नी व्है तो साधक जचै जितरी उपदेस-रूपी दवाइयां दो, पण वां रै मोह रो पड़दो नी हट सकै।

जो खुद जाग्योड़ो है, उण नै जगावण रै वास्तै दुनिया मे कारणां रो टोटो नी है। बीज जो जागतो व्है, उण में प्रांण व्है, आत्मा व्है, चेतणता व्है तो धरती उण नै कैवै—'अन्नराज जागो, आप ससार रा सिरमौड़ हो। म्हूँ आप नै फूलण-फलण नै जगै देवू।' पांणी कैवै—'अन्न देव ! ओ मीठो पांणो आपरै वास्तै तैयार है, इण नै पीओ अर फूलो-फळो।' पवन कैवै—'हे संसार रा प्रांण, थनै गरमी लागती व्है तो म्हूँ थनै हवा करूं। थूं विकास कर।' सूरज रो तावड़ो कैवै—'हे बीज, थूं तेजस्वी बण, आगै वध, म्हू थनै परकास दू।' पण जे बीज मुडदो व्है, सड़योड़ो व्है तो धरती कैवैला—'अरे अन्न रा दांणा, थू म्हारा सरीर मे नकामा क्यू पड़यौ है ? थारा सरूप नै बदळ लै अर सड़ गळनै नस्ट व्हैजा।' पांणी उण नै सड़ावण में

मदद करै। जिकौ पोसण करतौ व्है वो इज सोसण करण लाग जावै। पवन उण नै जळाय नांखै, माटी उण नै माटी बणाय नांखै। इणीज भांत जिण मिनख में जाण व्है, सुद्धताई व्है, संजीवणी सक्ति व्है तो उण नै साधक पण मिळ जावै। आप जाणौ के धर्मास्तिकाय रो गुण चालणी है पण आपां चालांला जद इज वो मदद करैला। जे आपां थिर हां तो वो आपां नै मदद नीं कर सकै। माछळी चालै जदै इज पांणी उण नै मदद करै। इणीज भांत आप जीवण रा कोई क्षेत्र में धरम री निजर सूं आगै वधणी चावोला तो जरूर उण मे आवकारौ मिळैला।

खरी बात आ है के आगै वधणौ इज जीवण है। जिण जीवण मे चाल नी, चळवळ नी, वो जीवण मुडदा जिसौ है। कवि जयसंकर प्रसाद कह्यौ है—

इस जीवन का उद्देश्य नहीं है, शांति भवन में टिक रहना।
किन्तु पहुंचना उस सीमा तक, जिसके आगे राह नहीं॥

जीवण रो विकास करणौ व्है तो आगै वधौ। चर धातु सूं इज आचार-विचार, संचार-प्रचार, उच्चार-उपचार वगैरै सब्द बणै। इण सगळां रै मूळ मे चालणी है। चर क्रिया है। आप ई आप रा जीवण में चर नै जगै दो। घबरावौ मत। इण सूं आप रो विकास व्हैला, आप री बुद्धि चमकैला, आप रा दिल अर दिमाग नै इण कानी मोड़ दो, स्रवण संस्कृति रो ध्यांन इण कांनी इज रह्यौ है—चरैवेति चरैवेति—चाल्या करौ, आगै वधौ।



जीरौ री कला

भारत दरसण सास्त्रां अर फिलासाफी रो देस है। अठै हरेक चीज सास्त्र, धर्म अर ग्यांन री कसौटी पर कसी जावै, फिलासाफी अर विचारां री पांण पर चढ़ाई जावै। जिकौ चीज कसौटी अर पांण पर पूरी उतरै वा इज खरी मानी जावै अर वा इज गिरण करण जोग समझी जावै। भारत रा विद्वांनां जीवण रा कोई खूंणा नै खाली नी छोडचौ है। उणा जीवण रा हर पासा पर पूरो सोच-विचार कियौ है। औ इज कारण है के आद जुगाद सूं लगाय नै आज दिन ताई कई महापुरसां जीवण रै बारा मे भांत-भांत सू सोच्यौ है।

परंपरा रूप मे जिकण दिन सू मिनख रा जीवण में सभ्यता अर सस्कृति रो पग-मंडण हुयौ, कळा रै बाबत सोच्यौ जावण लागौ, उण दिन सू कळा मांनखा रै हिवडा री हार वणगी। विनां कळा रो कोई पण कांम मांनखा जूण मे चोखौ नी समझयौ जावै। जिण घड़ी सूं मांनखा जूण नै सरस अर सुंदर वणावण री कोसिस सरु हुई उण वखत सू इज अण-जापणौ कळा पण मांनव जीवण मे आयगी।

सरुपांत में मांनखो जीवण रा तरीका सू साफ अजाण हो, सभ्यता अर संस्कृति रो नांम ई नी जाणतौ हो, उण

वखत जीवण रा मोटा कळाकार भगवांन रिखबदेव मांनखा नै भांत-भांत री कळावां सिखाई। उणां आदमियां रै वास्तै ७२ अर लुगायां रै वास्तै ६४ कळावां रो सिरजण कियौ।

अठे सवाल ऊठ सकै के जिकण जीव रो जितरौ आउखौ है उतरो तो उण नै जीवणौ इज पड़ै। कळा बिनां ई वो जीवतो तो रै'इज सकै पछै कळा री कांई जरूरत पड़ी। इण सवाल रौ पडुत्तर दियां पे'ली आंपांनै मांनव-जीवण अर कळा दोनां पर पूरो विचार करणौ चाहिजै।

कोई मिनख चालै-फिरै, स्वासा लै, कुटम-कबीला री पेट भराई करै अर माथौ घालण नै एकाद टापरौ ऊभौ करदै तो कांई उणरौ मिनख जमारौ सफळ व्हैग्यौ? कांई मांनखा री जिंदगी रो माप-तोल ओ इज है? इन्सांन रै जीवण रो दारोमदार इण बातां माथै इज है? ना, मांनखा री जिंदगी रो ओ सही माप तोल नी है, ओ असली दारोमदार नी है। दूजी जीवा जूंण रै गळाई उमर रा दिन ओछा करणा अर अधबळिया छांणा री पाण विकार अर वासनावां रो धूओ छोडतां थकां सौ बरस जीवतौ रैवणौ ई धूड़ समांन है। उण जीवणा री कोई कीमत नी है। एक नीतिकार कह्यौ है:—

'काकोऽपि जीवति चिरं च वलिं च भुङ्क्ते'

कागलौ लांबी उमर भोगवै अर बळि री चीजां खाय नै आपरौ पेट भरै।

जूंण तो कागलां, कुत्तां, गिरजड़ां अर मिनकियां नै ई मिळी है। वांनै ई पोता रो जीव उतरो इज व्हालौ है जितरो

कै मिनख नै आपरो जीव व्हालो है। मिनख री गळाई वांनै ई आपरै पेट रो खाडो भरण खातर सगळा पड़पंच करणा पड़ै। कुत्ता कागला आपरो भख सोजण नै अठी-उठी फिरता रैवै अर देखता रैवै के कठैई ऐठो चूठो पड़्यौ है के नी ? चील गिरजड़ां आभै मे भमता थका देखता रैवै के कठैई मरयोड़ा ढोर डांगर पड़्या है के नी ? दैत-रागस दूजां री ज़िंदगी बरबाद करनै, पार को लोही चूसनै जूण पूरी करै। इसा जीवण री कांई कीमत है ? मांनखा री जिदगी अर इण जिनावरां री जिंदगी मे आकास-पताळ रो फरक है।

मांनव जीवण कांई है ? इण सवाल नै भारत रा विद्वानां पूरी तरै सू ऐरण पर चढ़ाय नै परख्यौ है। मांनव-जीवण री व्याख्या करतां एक आचारज कह्यौ है :—

'कि जीवनं ? दोष विर्वजित यत्'

साचो मांनखा जीवण कांई है ? इणरै पडुत्तर मे उणां खाणौ-पीणौ, चलणौ-फिरणौ, स्वासा-लेवणी के जीवतौ रैवणौ इज नी है पण जीवण नै दोखां अर विकारा सू आघौ राखणौ इज असली जीवण है। उण मिनख रो जीवण इज साचौ जीवण है जो नाहर री दांई निडरता सू गूजतौ थको अन्याय, अत्याचार अर भ्रस्टाचार सू टक्कर लेवतौ थको हाथी री दांई मस्ती में झूमतौ थको चालै अर दुःख, गरीबी, कळेस, पाप नै हराय नै नैचा सूं जीवै।

इण भांत जीवण रो अर्थ हुओ विकारां अर वासनावा सूं जूझणौ। एक पलक तांई जीवणौ पण जळजळाहट करतोड़ा

नखतर री दांई जीवणौ रोसणौ अर सत्कर्म करतां थकां जीवणौ इज वाजब है। भारत रा विद्वांनां कह्यौ है :—

'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समाः'

हे इमरत पूतां, थांरौ जीवरण फगत जीवाजूणां में भटकण खातर के पेट भराई खातर नीं हुवौ है। थे सत्कर्म करता थका सौ बरस तांई जीवण री मंसा राखौ। खोटी बातां खातर एक पलक ई जीवता मत रहौ।

जीवण कांई है ? इण बाबत एक जिग्यासु नै पडुत्तर देवतां महात्मा टॉलस्टाय एक कथा सुणाई—'एकर एक आदमी वन मे हो'यर कठैई जावै हो के अचारणचक एक जंगळी हाथी उण पर हमलौ कियौ। बचाव रो कोई उपाय नी देख'र वो मारग रा एक कुआ में पड़ग्यौ। कुआ रै बीच में वड़ रो एक मोटो दरखत हो। उण आदमी उण वड़ री एक पतळी-सीक डाळी पकड़ ली। थोड़ी जेज में उण री निजर कुआ कांनी कोई बचाव देखण खातर नीचै कांनी पूगी तो देख्यौ के पाणी में एक मगरमच्छ मूंडो फाड़्यां बैठ्यौ है। वो सांपरतीक काळ उणनै उडीकै हो। उणे घबराय नै ऊपर कानी देख्यौ तो माखियां रो मद निजर आयौ, जिकरण मे सूं टपो-टपो करतै मद नीचै पड़ै। मद रा मीठा स्वाद आगै वौ सगळा डर भूलग्यौ अर वै मद रा टीपा चाटण लाग्यौ। पण ओ कांई ? उणै अचूभा सूं देख्यौ के जिण डाळी नै पकड़'र वो लटक्योड़ो हो उरण नै एक सफेद अर एक काळो ऊंदरौ काटै हो। उण जात्री रो भय खूब वढ़ग्यौ।'

जिग्यासु रो मूंडौ देख'र टॉलस्टॉय—'नीं समझ्यौ थूं ?'

वो हाथी काळ हो, मगरमच्छ काळ रो भाई जम हो, मद जीवण रो रस हो अर काळा-धोळा ऊंदरा दिन अर रात हा। इण सगळा पड़पंचां मे रैवतां थकां, सगळी अड़चणां सूं जूझतां थकां जीवण बितावणौ ओ इज मांनव जीवण है।

जैन साहित मे पण इणीज भांत की एक रूपात्मक कहांणी 'मधु बिंदु' रै नांम सूं प्रसिद्ध है अर बौद्ध साहित में 'अवदान' रै नाम सूं। जचै सोई व्हौ पण जीवण रै खातर सावधांन होय नै चालणौ जरूरी है।

मांनखै ठीक ढंग सूं जीवण वास्तै कळा रौ पल्लौ पकड़्यौ। कळा विनां जीवण, जीवण नी है। कळा मांनखा नै आगै वढ़ावण वाळी है, मांनखा रै विकास री एक अटकळ है, जिंदगी रो एक खास तरीकौ है, दूजा सब्दां मे मांनखा रा जीवण में सुद्धता वढ़ावण रो एक सुदर मारग है।

कळा री एक सही परिभासा आज दिन ताईं नी व्है सकी है, तांमपण कळा जीवण मे जरूरी है, इण वात माथै सगळा एक सुर सूं मजूर करै है। यूं तो कळा रो खेतर अथाग है, उण नै कोई साधारण अरथ मे बांध्यौ नी जा सकै। कळा सब्द रो इण दिनां इसो प्रचार हुवौ है के हरेक चीज कळा वणगी है। भोजन पकावणौ, मकांनां रा नकसा वणावणा, जूता, पर कसीदो काढणौ, वूट पालिस करणौ, पीतळ रा बरतनां पर नक्कासी रो कांम करणौ, अखबार मे व्यंग चित्र बणावणा, लेख लिखणा या नांम लिखणा सब कळावां मांनी जावै।

कैंवण रो मतळब ओ के जो कोई चीजजिण नैं दाय आय जावै अर उणसूं आप रो मतळब निकळै उणनै कळा रो नांम दे दियौ जावै। अठातांई के चोरी करणी अर खीसा कापणा ई कळा मांनी जावै। काळी बजार करणी, मिनखां नैं ठगण रा नवा नवा ढंग काढणा, कोई चीज री थोथी तारीफां करणी ई कळा गिणीजै। ठेट सूं गावणी तो कळा हो इज पण अवै तो हसणौ अर रोवणौ ई कळा मांनो जावै। मतळब ओ के भासा में जितरा क्रिया पद व्है वां सगळां रै लारै कळा रो पूछड़ो लगावण री फैसन बणगी है। इणसूं साधारण मिनख तो घपला में पड़ जावै के दरअसल में कळा कांई है। आथमणा कळा रा पारखियां यूनांनी सभ्यता री सरूआत सूं लगाय नैं आज दिन तांई 'कळा री परख' पर घणौ ई लिख्यौ है। यूनांनी आचारज अफलातून अर वांरा चेला अरस्तू सूं लगाय नैं आज रा जुग मे केंट, शेलिग, हेगेल, सोपेनहार, बालटेयर, हर्वर्ट, स्पेसर अर जारस्किन कळा रा निराई पारखी व्हेग्या है। ज्यां क्रिस्टोफीन नाम रा प्रसिद्ध उपन्यास री भूमिका लिखतां रोम्यांरोलां जिदगी बाबत आपरा विचार लिख्या है। वा कह्यौ है–संजम वाळौ, मरियादा वाळौ अर नियंत्रण वाळौ जीवण कळा है। पाणिनी री व्याकरण रै माफक क्लृप्त धातु सूं कळा सब्द बण्यौ है, जिणरौ प्रमांण है कल्पना करणी, रचना करणी। क्षेमराज इण सिव सूत्र विमरसिणी में कळा रो अरथ लिख्यौ है:–"कलयति स्वरूप आवेशयति, वस्तूनि वा तत्र तत्र प्रमातरि सा कला" कैंवतां कळा आपरा नवा नवा रूप परगट किया करै।

संसार में कोई पण चीज न फूटरी है अर न कडोपी। दोनूं वातां अथवा भाव देखण वाळा रै रस अनुभव माथै कायम होवै। हरेक चीज नै न्यारी न्यारी निजरां सू देखण सू न्यारा न्यारा ढंग री दीसै। कोई रूपाळो लुगाई री लोथ पड़ी व्है तो उण नै कांमी आदमी खोटी निजर सूं देखैला, उणरौ भाई अथवा वेटौ, वैन अर मा रै रूप में देखैला, कोई साधु महात्मा उणनै जांमण रै रूप मे देखैला। अर गरजडा, कागला, कुतरा उणनै खावण री निजर सूं देखैला, इण भांत निजर भेद रै कारण एक इज चीज एक रै वास्तै फूटरी है तो दूजा रै वास्तै कडोपी है। इण वास्ते जीवण रो कळाकार हरेक चीज में सत अर फूटरापौ देखणौ चावै। दरअसल मे कळा आत्मा अर हिरदा सू संवंध राखण वाळी चीज है। एक चितारौ रंग अर कूंची री मदद सूं कागद अथवा भीत पर इसो रूपाळौ चितरांम वणावै वो चितरांम वोलण सो लाग जावै, तो उणमे वा वोलण वाळी चीज चितारै रा आत्मिक भाव है। एक मूरत वणावण वाळौ आपरी तीखी छीणी अर हथौड़ा री पांण एक अणगड़ अर वेडोळ भाठा नै घड़ नै एक इसी ओपनी मूरत वणाय दे के उण मे कळाकार रा भाव जीवता परतख दीखण लाग जावै। एक गवैयौ ताल, लै अर कठ सूं वीणा पर इसो गावै के उण रो अंदरूणो रस सांपरतीक हाजर व्है जावै। एक कुम्हार एक माटी रा लूंदा सू फूटरा सूं फूटरौ प्यालौ, कुंजौ. घड़ौ के मटकी जचै जिकी चीज वणाय सकै। कळा एक कानो जठै फूटरी चीज नै फूटरा ढग सूं हाजर करै, उणीज भात एक

कडोपी चीज नै पण इसा चोखा ढंग सू हाजर करै के वा कडोपी नी रैय सकै ।

इण सगळी बातां पर विचार करणै सूं नतीजो ओ निकळै के जीवण रै अंदरूणी फूटरापा, आत्मिक फूटरापा, समाज रा सत अर सिव नै भली भांत बतावण वाळी चीज रो नांम इज कळा है ।

कळा रो कांम मांनखा रा जीवण नैं खराब करणो के अणगढ राखणो नी है पण उण नै ढंगसर राखणो है । भोग-विळास री चीजां रै वास्तै कळा सब्द रो उपयोग करणो कळा री मजाक उडावणो है । ओ कळा रो बिगड़चोड़ो रूप है, कळा री नक्कल है, असली कळा नी है । आजकाल सिनेमा रै छापा रा चितारा, विळास भावनां खातर नागी मूरता बणावण वाळा सिलावट, लिछमी-पतियां नै रीझावण वाळी पातरियां, रेडियो अर सिनेमा स्टुडियो मे पैसा पैसा खातर गावण वाळा सगीतकार अर सूगली राजनीति रांणो रा दलाल कवि, ऐ सगळा कळा रा दुसमण है । इसा नांजोगा हाथा मे पड़'र कळा री घणी बदनांमी हुई है । कळा चांदी रा टुकड़ां साटै मोल नी मिळै । असली कळा रो पारखी कळाकार पोता री कळा सूं समाज नै सत रो, सिद्धांत रो, कल्यांण रो अनुभव करावै । वो पोता रा फरज सू टळ नै थोथी कीरत नी चावै ।

भारत री सस्कृति रा आगीवांणां कळा रो वे' सुद्ध अर सूक्ष्म सत नै परगट करणो बतायो है । दरअसल में कळा सूं

मांनखा जूण मे आणंद रो अनुभव व्है । कोई पण चीज में आणंद उण वखत इज आवै जद के उण चीज सूं कोई ग्यान मिळै । कोई न कोई सत परगट व्है, उण चीज सूं निस्ठा पैदा व्है अर ऐ वातां कळा सूं इज व्है सकै । इण कारण भारत रा रिसी मुनियां कह्यौ है—

विश्रान्तिर्यस्य संयोगे सा कला न कला मता ।
लीयते परमानन्दे ययात्मा सा परा कला ॥

जिकण रा संजोग सूं मांनखा जीवण में थाकैलो के आळस आवै, जीवण थिर व्है जावै अर विचारां री धारा रुक जावै, वा कळा नी है, कळा री थोथी नक्कल है । जिकण बात सूं आत्मा परम आणंद मे लीन व्है जावै, वा इज दरअसल में कळा है ।

आथमणा विद्वांनां आज कळा रै बारा मे एक नवी आवाज उठावणी सरु करी है, "कळा कळा रै वास्तै" (Art for arts sake) स्यात कळा रो दुरपयोग होवती देखनै इज उणा यूं कैवणी सरु कियौ है । पण भारत रा विद्वांनां तो सरूपांत सूं इज सत नै बतावण वाळी चीज नै इज कळा मांनी है । जठै कळा रो उपयोग स्वारथ-साधना, विलासिता अर धन रै खातर कियौ जावै, उठै सत खतम व्है जावै । उठै कोई पण सत रो जनम नी व्है सकै । इण वास्तै अत मे नतीजौ औ इज निकळै के कळा रो जनम जद अदरूणी रूप मे आत्मा सूं व्है तो उणरो उपयोग सत रै वास्तै, सिद्धांत रै वास्तै या कल्यांण रै वास्ते होवणी चाहिजै । काळ मे बारलो फूटरापो खास चीज

नीं है । जठै सत अर सिव मौजूद व्है उठै फूटरापौ तो कुदरती रूप सूं आय जावै ।

एक लुगाई सिणगार वास्तै कळा रो उपयोग करै, वा बारा सूं तो घणी ई फूटरी लागै पण जे उणमे अंदरूणी फूटरापौ नी है तो उठै कळा रो नांम-निसांण ई नी है। वा लुगाई जो परायां सागै चोखो बेवार नी राखै, टाबरां अर घर वाळां सागै करड़-भरड़ करै, थोथो घमंड राखै तो पछै उठै कळा कठै ? उणरी कळा न सत वास्तै है अर न सिव वास्तै। आ असली कळा है इज नी ।

भारत री संस्कृति रा आधार-थंभ भरथरी कह्यौ है—

साहित्य - संगीत - कला विहीन: ।
साक्षात् पशु: पुच्छविषाणहीन: ।।

जिकण जीवण में साहित री साधना, लोक-हितकारी सत-प्रधांन नीं है, संगीत री पूजा कैवतां सिवपणा मे भरोसो नी है अर कळा री जठै साधना नी है वो जीवण जिनावरां रो जीवण है, मिनख रो जीवण नी है, भलांई चेहरा मोहरा सूं वो मिनख जिसौ दीसतौ व्हौ पण असल में वो बिना सींग-पूछ रो जिनावर इज है ।

हां, तो मांनखा जूण मे सत, सिव अर सुंदर इण तीन चीजां रो मेळ कळा बाजै । इसी कळा मांनखा नै जिनावर-पणा सूं उठाय नै मिनखपणा कांनी ले जावै । कळा रो कांम मिनख नै जिनावरपणा सूं उठाय नै धीरै धीरै मांनव तत्त्व, देव तत्त्व अर छेवट भगवत्तत्व कांनी ले जावणौ है। दाखला रै

रूप में माटी में कोई खास फूटरापौ नी व्है, पण उणमाटी नै इज लेयनै कुम्हार दुनियां री भलाई रै वास्तै आपरा खांमची हाथां सूं घड़ा रो रूप देयदे तो वा माटी पण अणूती कांम री बण जावै ।

इणोज भांत आटौ अर पांणी एक चतर लुगाई रै हाथ मे पडै तो वा आपरा कडूंवा वास्तै फूटरा फलका पोवै अर वो इज आटौ पांणी कोई फूड़भघरा रै हाथ मे पड़ै तो वा धान रो धूड कर नांखै । चतर आपरी कळा सू धान नै सुधार लेवै अर फूड़-भघरा गीलौ-काठौ कर नै अथवा फीकौ-खारौ कर नै भोजन नै विगाड़ नांखै, बळियौ-जळियौ कै काचौ-पाकौ कर नै धूड कर नाखै । उण हालत में उण में कळा रो लवलेस ई नी व्है । कारण के न तो उण मे सत व्है, न सिव व्है अर सुंदरता रो काम इज कांई । कोई चीज रो फगत फूटरापौ देख नै उठै कळा रो अनुमांन कर लियौ जावै तो औ धोखौ है । कुदरत किपाक नाम रो फळ वणायौ है, उण मे फूटरापौ खूब है, अर सुगंध पण है, छतां पण उण में सत रो अंस नी है, कारण के उण नै खावण सूं मिनख मर जावै । इणीज भांत जीवण री हरेक क्रिया रै वारा मे समझणौ चाहिजै । सत अर सिव री कसौटी माथै परख नै इज कळा रो अनुमांन लगावणौ चाहिजै । एक लेखक घणी ओपती कहांणी लिखी है । उण कथा रो कथानक घणौ चोखौ है, वा मनोरंजक पण है, छतांपण जे वा कथा मांनखा नै विळास कांनी ले जावै, उण नै पढ'र मांनखौ नीचौ गिरै तो कैवणो चाहिजै के उण कथा मे सत अर सिव नी है, सुदर भलै ई व्हौ । पण जिकण काव्य, नाटक, उपन्यास,

सिनेमा, चित्र, संगीत, बाजा-गाजा के मूरत निरमांण सत अर सिव री निजर सू व्है अर उण में सुंदरता री कमी व्है तांम पण उणनै कळा कैय सकां हां। पण जठै फगत फूटरापा नै निजरां में राख नै इज कोई चीज बणाई गई व्है उण सू दुनियां री कोई भलाई नीं व्हैती व्है अर उल्टो मांनखा नै खोटो रस्तो मिळतौ व्है, वो मिनख सू जिनावर अर जिनावर सूं रागस वणतौ व्है तो वा असली कळा नी है। पेट रा पड़पंच में पड़नै कोई पण मिनख कळा नै तोड़-मरोड़ नै भूंडा तरीका सूं दुनियां रै सामै राख सकै, इणसूं वौ असली कळाकार रो पद नीं पाय सकै।

ओ इज कारण है के आदि तीरथंकर भगवांन रिखवदेव पण उण जमांना रा मानखा नै ई कळा सिखाई अर वा उणनै जिनावरपणा सूं मिनखपणा कांनी लिजावण वाळी ही। उणा उण कळावां रो उपयोग सत रै वास्तै, सिव रै वास्तै अर मांनखा जूण री भलाई रै वास्तै बतायौ हो। जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र इण बात रो साक्षी है :—

'पयाहियाए उवदिसई'

भगवांन रिखबदेव प्रजा री भलाई रै वास्तै, सत और सिव रै वास्तै कळावां रो उपदेस दीनौ हो। उणां जिको ई कळावां सिखाई, वांरै लारै मिनखपणो लावण रो सदेसो छिप्यो-ड़ो हो इण वास्तै इज उण जुग रा मिनखां नै वे कळावां सिखाय नै वांरो उद्देस्य पण सागै सागै वताय दियौ। सार ओ निकळ्यो कै कळा रो जिको रूप सत रै वास्तै, सेवा रै वास्तै, कोई सिद्धांत अथवा धे' रै वास्तै आंपणै सनमुख मंगळकारी

बण नै आवै, वा इज कळा जीवण रै वास्तै आणंदकारी है, असली फूटरापा नै देवण वाळी है। उण कळावां मे जीवण रो मोटौ सत छिप्योड़ौ हो। कळा रो जिको रूप मांनखा री रागसी विरतियां नै नी दवाय सकै, मांनखा रा थोथा अहंभाव नै नो मिटाय सकै, संसार री समरसता नै परखण री दिव्य-द्रिस्टी नी देय सकै, जीवण में कुरूपता पैदा करै, वा कळा नी, कळा री प्रेत छाया व्है सकै है। इण वास्तै कळा री परीक्षा रो सव सू फूटरौ मापक यंत्र सूं पैदा होवण वाळी सत प्रभाव री परपरा अर जीवण रो हित परगट होवणौ है।

इण भांत आ वात साफ व्हैगी के जीवण काई है अर कळा काई है? सागै-सागै दोन्यां रो आपसी सवंध काई है? असली कळा कांई है अर नकली कळा कांई है? कळा रो धे' काई व्हैणौ चाहिजे? म्हूं समझू के इतरी समझ्यां पछै मानव-जीवण री कळा नै आप सरलता सू समझ सकौ हो।

हरेक आदमी जीवतौ रैवणौ चावै, पण जीवतौ रैवणौ ई तो एक कळा है। जीवतौ रैवण रौ मतळव किणी भांत गळत-सळत ढग सू पोता नै कायम राखणौ इज जीवणौ नी है। यू तो कुत्ता-मिन्नी, कीड़ी-मकोड़ी, वाघ-चीतरा अर दूजा जीव-जिनावर सगळाई जीवता रैवै पण जे आप मिनख वणनै जी चावौ तो आपनै जीणै री कळा जाणणी ेला। यू जी तो सगळी दुनियां जीवै पण जीवण ा कोई मिनख इज जाणै। जिणनै ढग आयग्यौ तो आणंद सू जीवै इज, पण क रोस

मारग दिखाय दै, दूजां रै वास्तै जीवण रो एक नमूनौ छोड जावै। जे कोई रै पग में कांटौ भाग जावै, आंख में धूड़ रो कण पड़ जावै, पैरण रा कपड़ां में या डाढ़-दांत में कांई फस जावै तो वो सहन नी व्है सकै, इणीज भांत हरेक मिनख नै बिना कळा रो जीवण सहन नी व्हैणौ चाहिजै। जिको मिनख जीवण री कळा जांण लेवै, वो आपरी जिंदगी मे छोटी सूं छोटी बात में पूरी सावधांनी बरतै, वो आपरौ हरेक कांम सत रै वास्तै, सेवा रै वास्तै करै। वो दूजां रै जीवण रो ध्यांन राखतौ थकौ, दूजां नै जीवाड़तौ थकौ जीवै। वो कोई इसो कांम नी करै जिणसूं दूजां नै नुकसांन पूगै अथवा दूजा नै दुख व्है।

यूं तो चालणौ सब जांणै, टाबरपणा सूंई चालणौ आय जावै, इण वास्तै कोई ट्रेनिग नीं लेवणी पड़ै। इणीज भांत खावणौ-पीवणौ, ऊठणौ-बैठणौ, सोवणौ-जागणौ, बोलणौ-चालणौ हरेक मिनख कर सकै अर करै इज हैं। खावण-पीवण रो कांम तो जीव-जिनावर ई करै। पण जिको मिनख जीवणौ जांणै अर जिको जीवणौ नी जांणै, वांरै कांमां मे घणौ फरक रैवै।

एक आदमी जीवण रै वास्तै खावै अर दूजौ खावण रै वास्तै जीवतौ रैवै। एक सरदी-गरमी रै बचाव सारूं अर लाज ढाकण नै कपड़ा पै'रै अर दूजौ मौज सौक अर फैसन रै वास्तै कपड़ा पै'रै। एक आदमी पैसा कमावण नै अर पोता री प्रतिस्ठा बढावण नै स्वारथ खातर आछौ बोलै अर आछौ

लिखै, पण दूजो निस्वारथ भाव सूं सत बोलै, सत लिखै। एक आदमी दूजां नै सतावण सारूं, मारण-पीटण सारूं, लूटण-खसोटण सारूं, अन्याय अनीति करण सारू, जोर जमावण सारूं चालै तो दूजो न्याय सूं कमायोड़ी जीविका सारूं, संसार री भलाई सारूं, सेवा सारूं, आत्म-साधना सारूं चालै। एक आदमी इण वास्तै जागती रैवै के दूजां नै तंग करै, पापाचार करै, संसार मे मारकाट मचावै, पण दूजो इण वास्तै जागतौ रैवै के आपरै करतव्य रो पालण करै, जगत रो कल्यांण करै। इणीज भांत एक आदमी रो सोवणौ-जागणौ, ऊठणौ-वैठणौ तो खराव घे' खातर व्है अर दूजो आदमी ऐ सगळी बातां आछा कांमां वास्तै करै। कांई इण दोनूं तरै रा आदमियां रै कांमां में कोई फरक नी है ? जद फरक है तो ओ कैवणौ पड़ैला के जिको आदमी जीवण री कळा जांणै है उणरो हरेक कांम ढंग-सर अर संसार री भलाई वास्तै व्हैला पण जिको जीवण री कळा नी जांणै है, उणरो हरेक कांम गळत व्हैला। एक साधक जीवण रा मोटा कळाकार म० महावीर नै पूछ्यो—

> 'कहं चरे, कहं चिट्ठे, कहमासे, कहं सए ?
> कहं भुजंतो भासंतो, पावकम्म न वंधई ?'

हे भगवन् ! कळामय जीवण वितावण वाळा नै किण भांत जीवणो चाहिजै, कीकर चालणौ, वैठणौ, ऊठणौ, खावणौ, पीवणो अर वोलणौ चालणौ चाहिजै, जिणसूं उणरी जीवण री कळा में वाधक पाप करम नीं वंध सकै ? म० महावीर मरम रा नप्या-तुल्या सव्दां में पडुत्तर दियौ—

जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे, जयं सए।
जयं भुजंतो भासंतो, पावकम्मं न बधई।

हे जीवण कळा रा साधक ! थनै विवेक सूं चालणौ चाहिजै, जतन सूं ऊभौ होवणौ, बैठणौ, सोवणौ, खावणौ, पीवणौ अर बोलणौ चाहिजै जिणसूं जीवण री कळा में बाधक पाप करम नीं होय सकै ।

ओ है जीवण री कळा रो दरसण। जे मिनख पोता रा जीवण में इण भांत विवेक सूं सोचै, पोता री सत्यं, सिव, सुंदरं री चोखी भावना राखै तो जीवण कळा पूरण होवतां जेज नीं लागै ।

अरजुण जिस्यै जिग्यासू पण करमजोगी क्रिसण नै जीवण कळा रै मरम नै जांणण वाळा स्थितप्रज्ञ रै बारा में पूछयो है—

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा, समाधिस्थस्य केशव
स्थितधीः किं प्रभाषेत, किमासीत व्रजेत किम् ?

हे जीवण कळा रा कोविद स्री क्रिस्ण ! जीवण कळा रा मरम नै जांणणिया स्थितप्रज्ञ री कांई पैं'चांण है ? वो थिर-बुद्धि कियां बोलै ? कियां बैठै अर कियां चालै ?

इण वात रो पडुत्तर स्री क्रिस्ण आपरी अमोलक वांणी में विस्तार सूं अठारै स्लोकां में दियौ है। साचांणी जीवण कळा रो मरम जांणणियो वणण रै वास्तै उण सगळा स्लोकां रो मनन कर नै उणां में वताया मारग माथै चालणै पर जीणं री कळा मिळ जावै। जीवण री कळा नै जांणणियो जद जीवण

री कोई पण क्रिया नै करैला तो वो पोता रै आड़लो-पाड़लो दुनिया नै पण देखैला। वो सोचैला के म्हारी इण क्रियावां अथवा हरकतां सूं कोई प्रांणी नै दुख तो नी व्हैला। कोई री जिंदगी में अड़चन तो नी आवैला ?

एक मोटर रो ड्राइवर है, वो होस राख नैं मोटर चलावै, वो डावौ जीमणौ देखनै पूरा ध्यांन सूं मोटर चलावै। वो पूरी निगै राखै के कोई किचरीज नी जाय, कठैई टक्कर नीं लाग जाय, इण वास्तै जठै कठैई खतरौ देखै, ब्रेक लगाय दे, हारन वजाय नै दूजां नै सावधांन करदै जिणसूं कोई झपट मे नी आय जावै। इण भांत मोटर चलावण वाळौ सही सलांमत ठिकांणै पूग जाया करै। इणसूं उणनै ई आणंद मिळै अर मोटर रा मालिक नै पण।

ओ एक दाखलो है। इणीज भांत जिंदगी पण एक गाडी है, जो फगत गैरेज मे राखण वास्तै इज नी है, उणनै हिलावणी डुलावणी पड़ै, इण विना कांम नी सरै। जीवण रूपी गाडी रा ड्राइवर आपां खुद हां। जे आपां आपणी जीवण रूपी गाडी नै होस राख नै खड़ां, डावा जीमणा देखता थका, जे कोई जिंदगियां बीच मे आवै तो वांनै कुचळां नी, बचावण री कोसिस करां, वांणी अर लेखन रूपी हॉरन वजाय नै वांनै सावधांन करां। करैई तेज चलावां तो करैई बरेक लगावां अर इण भांत जे कोई चालक सावचेती सूं चालै तो बरोबर आरांम सूं ठिकांणै पूगै। अर सागै सागै पोता रा परिवार, समाज अर जाति वाळां नै ई पूगाय देवै।

पण कोई ड्राइवर इसो व्है के जिणै नसो कर लियौ है अर धत होय नै मोटर चलावै। वो न डावी कांनी देखै अर न जीमणी कांनी। अंधाधूंध चालतौ वो आ नीं देखै के कोई मर जावैला अथवा कोई दुरघटना व्है जावैला। उणे दूजां री जिंदगी री कोई परवा नीं है, वो तो एक्सीडेंट करतौ थकौ ठिकांणै पूगण री फुरती राखै। पण इसा नकांमा ड्राइवर नै बीच में इज पकड़ लियौ जावै, उणरौ लाइसेंस जपत व्है जावै अर जरीबांनो होवै सो न्यारौ। वो पाछौ जिंदगी भर मोटर चलावण रो परवांणो नी पाय सकै।

इणीज भांत जद जीवण कळा सूं अजांण अडांणी नै जीवण रूपी गाडी मिळ जावै, तो वो दूजां री जिंदगियां नै वाढ़तौ थकौ, पोतै दुख देखतौ थकौ अर गाडी रो हजीरौ करतौ थकौ ठिकांणै पूगण री कोसिस करै। मोहमाया रूपी दारू रा नसा में धत वो दूजां री जिंदगी नै फोतका बरोबर ई नी लेखवै। इसा आदमी नै पाप करम रूपी सिपाही पकड़ लेवै। उणरी मांनव जीवण रूपी गाडी चलावण रो अधिकार खोस लियौ जावै यांनी उणनै कई भवां तांई पाछौ मिनख जमारौ नी मिळै। सजा उणनै मिळ जावै अर वो ठिकांणैसर पूग पण नीं सकै।

जीवण री कळा रा जांणकार अर अजांण, इण दोनां रै जीवण में कितरौ फरक व्है, वो इण दाखला सूं साफ व्हैग्यौ। जीवण री कळा मे बारला फूटरापा री कोई कीमत नी है, उठै तो अंदरूणी फूटरापा नै मांन है। सत अर सिव ऐ उणां रा

दोन्यूं फेफड़ा है, जिण सू वो सांस लेवै। जठै जीवण में सत अर सिव नी, उठै कोरी कळा प्रांणहीणा पीजरा रै समांन है ।

एक राजा रै धन-माल री चरचा देस परदेस में मांनखा रै जवांन पर ही। एकर एक मोटा महात्मा भीख मांगता २ राजमहल मे पधारचा। राजा वांनै भगती-भाव सू आहार दीनौ। महात्मा राजकुळ रा लोगां नै उपदेस देय नै जावण लाग्या तो राजा अरज करी के वै पधार नै खजानौ देखलै, कारण के साधु महात्मावां रै आसीस सूं इज इसो खजानौ बण सक्यौ हैं। महात्मा राजा रो खजांनौ देखनै राजी ई हुया अर चिंता मे पण पड़्या। महात्मा राजा नै पूछ्यौ–"राजन, सबसूं ज्यादा कीमती भाठो इणा मे कुणसौ है, बतावौ देखू?" राजा एक मुट्ठी भरीजै जितरो चमचमाट करतोड़ो हीरौ बतायौ। महात्मा थोड़ा मुळक्या और बोल्या–"महाराज, म्हैं इणसूं ई मोटा मोटा भाठा आपरै राज में देख्या है, आपनै वां रो ठा ई नी है।" राजा लालच मे आय नै वांनै देखण नै चाल पड़्यौ। महात्मा वांनै ले जाय नै एक गरीब डोकरी रै झूंपडा मे ऊभा राख्या अर डोकरी री घरटी रा पुड़िया बतावतां कह्यौ—"थारै राज में ऐ सबसूं कीमती भाठा है, प्रजा नै कहो सो रोज इणां रा दरसण करबौ करै।" राजा चुपचाप ऊभौ, कांई समझै अर कांई जवाव दे। इतरै तो महात्मा मीठी वांणी सूं बोल्या–"राजा, इण डोकरी रै जीवण रो साधन ऐ घरटी रा दोनूं पुड़िया है, इणसू वा दूजां रो अनाज पीसै अर पोता रै प्रांणां री रक्षा करै। आपरा हीरा पन्ना

कळा रो मापदंड आपरै अठै फगत बारला फूटरापा सूं आंक्यौ जावै ।"

साचांणी अस्टावक्र मुनि री वांणी में भारत री सस्कृति री आत्मा परतख बोल री' है । वै जीवण री कळा रा असली पारखी हा । जीवण रै अंदरूणी फूटरापा रो उपयोग वै जोग मे करणिया हा, भोग में नी ।

जीवण री कळा सू अजांण मिनख रै जीवण में भोग व्है, जोग नी; स्वारथ व्है, संजम नी । उणरो जीवण नीरस व्है, सरस नीं; उणरा जीवण में मौज सौक री विरती व्है, साचौ आणंद नी । एक दाखला सूं आ बात साफ व्है जावैला ।

मिस्टर पीटरसन नाम रो विद्वांन लिखै के म्हनै थोड़ा दिनां पैली एक इसो आदमी मिळ्यौ जिकौ उमर में तो चाळीस वरस रो हो पण चेहरा सू साठ बरस रो लागतौ । कारण के उणै दुनियां री खूब मौज सौक लूटी ही । उणै आपरी जिंदगी में सगळी चीजां रो रस चूस्यौ हो पण बदळा में कांई दियौ नीं हो । संजम तो उण मे नांम रो ई नीं हो । वो विद्वांन हो, मोटौ वेपारी हो, घणा देस-परदेस फिर्यौ हो अर कई घाटां रो पांणी पी चुक्यौ हो । चाळीस बरस री उमर में इज उणरी आ हालत व्हैगी ही के अबै उणरै जीवण मे कोई रस नी रैयौ हो । उणरी जिंदगी कड़वी, रूखी अर जहरीली बणगी ही । चाळीस बरस री उमर मे इज उणरा बाळ चांदी व्है जिसा सफेद व्हैग्या हा, हालां कि कुदरत सूं उणनै आछौ सरीर मिळ्यौ हो पण बिना सार-संभाळ आ हालत

कांई ऐ सीधा-सादा कपड़ा अर पीतळ रा कड़ा इण नारी रतन रै वास्तै अपमांन जोगा नी है ? पण बातचीत करण सूं उणरी धारणा साफ थोथी निकळी । मा अर बेटा में बडो प्रेम हो । तांमपण उण आदमी आपरै मन रो वेहम काढण नै पूछ्यौ–"माताजी, आपरै सरीर पर साधारण कपडा अर हाथां मे पीतळ रा कड़ा देखनै म्हनै बडो अचूंभौ व्है, कांई आ आपरै वास्तै, बंगाळ रै वास्तै अर सतीस बाबू रै वास्तै सरम री बात नी है ?" डोकरी बोली—"बेटा, थारी समझ मे भूल है, म्हूं हीरा-पन्ना अर जड़ाव रो सिणगार करनै साधारण मांनखा रै वास्तै ईसका रो कारण बणूं तो आ सतीस अर बंगाळ रै वास्तै कोई गौरव री बात नी है । मांनखा रो फूटरापो कोई गेणा-कपड़ां में नी है पण त्यांग मे है, दया में है, सात्विकपण में है । कळापूरण जीवण बितावण मे है । थनै आ जांण नै खुसी होवणी चाहिजै के अबार थोड़ा दिनां पैली बंगाळ में भयकर काळ पड़्यौ हो । मांनखो अन्न रा दांणा दांणा वास्तै तरसण लाग्यौ हो । उण वखत सतीस दयाळू बण्यौ अर म्है म्हारा हाथ सूं गरीबां री सहायता कोनी । ओ इज असली गौरव है अर म्हूं समझू के सतीस अर बंगाळ रो गौरव पण इणमें इज है । कपड़ा-लत्तां अर गेणां-गांठा सू लद नै धन री थोथी मे'मा करणी फिजूल है । सादगी अर संजम सू जीवण बितावणौ ऐ इज साचा विद्वांन अर कळाकार रा लक्खण है ।

ओ है जीवण री कळा रो भेद । जठै जीवण री कळा व्है, उठै भोग माथै बंदो लाग जावै, संजम अर विवेक रूपी पवित्र

एक बूढै आदमी एक मोटयार नै कह्यौ–"थनै कांई ठा, कांम कियां होवै ? म्हूं दस बरसां सू सभा रो प्रधांन हूं, ओह, कितरो ऊंडो अनुभव है म्हारौ। थारै अनगढ़ हाथां मे जो सभा रो कांम सूंप दूं तो चार दिनां में सगळो रापटरोळ व्है जावै।"

पाकोड़ै पीळै पांन ऊगती कूपळ नै कह्यौ–"म्हू दुनियां रो रास-रंग देख चुक्यौ हूं, अबै थूं अठै आरांम सूं रै', खूब खिलौ अर खेलौ। म्हूं अबै नीचली हरी घास पर विसरांम करूंला।"

उठीनै वो मोटयार लिलाट मे सळ घाल्यां डोकरा नै देख रह्यौ है अर अठीनै कंवळी कूपळ मीठी निजर सूं नैणां रा प्यालां मे इमरत रस भर नै पीळा पत्ता कांनी नीचै देख री' ही। बूढ़ा रा सफेद बाळां मे स्वासां री संख्या लिख्योड़ी है। इण दोनां में सूं जीवण नै ठीक तरै सूं पत्तै समझ्यौ है अर वो आपरी जीवण कळा में सफळ हुवौ है।

ओ इज हाल आज रा समाज में जवांनां अर बूढां रो है। वै जीवण नै ठीक तरै सूं नी समझण रै कारण अंधारी गळियां में भटका मार रह्या है। दोन्यू पोता रो अधिकार पावण री धुन मे रैवै। पोता रो फरज बजावण री गुंजाइस दोन्यां मे नो व्है। इण कारण जीवण री कळा सूं वै आघा रैय जावै। हरेक बात मे वै झोड़ करैला, आपस मे थूका-फजीती अर कुस्ती करण नै तैयार व्है जावैला, पण सजम अर मरजादा रा पवित्र सूत्रां नै भूल जावैला। इण कारण इज जिंदगी रो

इंगलैंड रा हाउस ऑफ कामंस मे घणी बार बडी गरमा-गरम चरचा चाल जावै अर सदस्यां रै आपस मे खासी थूका-फजीती व्है जावै। एकर एक लिछमीपती पोता रा विरोधी नै ललकारतां कह्यौ—"कांई वै दिन थूं भूलग्यौ जद थूं म्हारै पिताजी रै बूटां पर पालिस किया करतौ ? आज थूं म्हांसूं अड़ रह्यौ है ?" विरोधी सदस्य एक गरीब कुटुंब रो होवतां थकां ई ठेट सूं मैंणती, पोता रा फरज नै बजावण वाळौ अर पगां पर ऊभो होवणियौ जीवण कळा रो जांणकार हो। उणै मुळकतां थकां सगळां रै सांमनै कह्यौ—"आपरो कैवणौ बिल्कुल सही है, पण कांई म्हूं पोलिस ठीक ढंग सूं नी करतौ हो ?" कोई पण कांम जिणरै लारै सत व्है, सेवा-भावना व्है, भलो भूंडो नी है के छोटो मोटो नी है। कोई पण छोटा मोटा कांम नै करण में सरम बिल्कुल नी आवणी चाहिजै। उणनै ईमांनदारी अर ढंग सू पूरो करणौ चाहिजै। जे उण कांम सूं दुनिया री भलाई व्हैती व्है तो उणमें पूरी दिलचस्पी लेवणी चाहिजै, ओ इज मोटो नांम है।

जिण आदमी नै पोता रो फरज बजावणौ आय जावै वो जीवण री कळा मे तुरंत हुसियार व्है जावै। पण जठै जीवण री कळा में बाधक तत्वां रो विवेक नीं व्है, भला भूंडा रो ग्यांन नी व्है, जीवण री अबखी घड़ियां में मिनख भाग छूटै तो उठै समझणो के जीवण कळा नी है। अर जिणनै जिंदगी में आवण वाळी अड़चनां रो ग्यांन नी व्है, वो कई चोखा कांम करतो थको ई एकाध दोस रै कारण पोता रा जीवण नै दुखी बणाय नांखै।

मजो जावतो रैवै। वै जीवै पण लाचारी सूं। समै काटणो है इण वास्तै जीवता रैवै। वां रा जीवणा मे कोई रस नीं है, कोई फूटरापो नी है, कोई सत नी है।

जैन धरम रा आगीवांणां हरेक बात नै साधना रो रूप दीनौ है। उणां कोई पण चीज री संख्या पर जोर नी दे'यर गुणां पर जोर दीनौ है। वां री निजर में quantity (संख्या) इतरी कीमत नीं राखै जितरी के quality (गुण)। उणां आपरा साधकां नै आ इज बात बताई है। उणां बतायौ के चावै छोटी सूं छोटी बात अथवा साधना पकड़ौ पण उणनै नियम अर विवेक सूं पार घालौ। भलैई वो कांम थोड़ी जेज रै वास्तै इज व्है पण उणनै ठीक ढंग सूं करणौ। जैन धर्म री पौसध अर सामायिक साधनावां नै ठीक ढंग सूं पालणा नीं करणै पर उणमें दोस बतायौ गयौ है—

पोसहस्स सम्मं अणणूपालणयाए
सामाइयस्स सम्मं अणणूपालणयाए
सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणाए

इणीज भांत इण साधना में प्रमारजन अर प्रतिलेखन रो विधांन पण है। उणरै वास्तै बतायो है के जे ऐ क्रियावां सम्यक् ढंग सूं नीं करै तो पण दोस लागै।

जिंदगी नै सम्यक ढंग सूं बितावण वास्तै कोई पण कांम खराब नी है। सरत आ है के लारै कोई हित व्है अर विवेक पण व्है।

इंगलैंड रा हाउस ऑफ कामंस मे घणी बार बडी गरमा-गरम चरचा चाल जावै अर सदस्यां रै आपस में खासी थूका-फजीती व्है जावै। एकर एक लिछमीपती पोता रा विरोधी नै ललकारतां कह्यौ—"कांई वै दिन थू भूलग्यौ जद थूं म्हारै पिताजी रै बूटां पर पालिस किया करतौ ? आज थूं म्हांसूं अड़ रह्यौ है ?" विरोधी सदस्य एक गरीब कुटुंब रो होवतां थकां ई ठेट सूं मैंणती, पोता रा फरज नै बजावण वाळौ अर पगां पर ऊभो होवणियौ जीवण कळा रो जांणकार हो। उणै मुळकतां थकां सगळां रै सांमनै कह्यौ—"आपरो कैवणौ बिल्कुल सही है, पण कांई म्हूं पोलिस ठीक ढंग सूं नी करतौ हो ?" कोई पण कांम जिणरै लारै सत व्है, सेवा-भावना व्है, भलो भूंडो नी है के छोटो मोटो नी है। कोई पण छोटा मोटा कांम नै करण मे सरम बिल्कुल नी आवणी चाहिजै। उणनै ईमांनदारी अर ढंग सूं पूरो करणौ चाहिजै। जे उण कांम सू दुनिया री भलाई व्हैती व्है तो उणमें पूरी दिलचस्पी लेवणी चाहिजै, ओ इज मोटो नांम है।

जिण आदमी नै पोता रो फरज बजावणौ आय जावै वो जीवण री कळा मे तुरंत हुसियार व्है जावै। पण जठै जीवण री कळा में बाधक तत्वां रो विवेक नीं व्है, भला भूंडा रो ग्यांन नी व्है, जीवण री अबखी घड़ियां में मिनख भाग छूटै तो उठै समझणो के जीवण कळा नी है। अर जिणनै जिंदगी में आवण वाळी अड़चनां रो ग्यांन नी व्है, वो कई चोखा काम करतो थको ई एकाध दोस रै कारण पोता रा जीवण नै दुखी बणाय नांखै।

एक बैंन बडी मैंणती ही। पण उणमें दो ओगण घणा मोटा हा। एक तो ओ के वा कोई रो थोड़ो-सीक कांम करनै वार वार कैवती फिरती के म्हैं उणरो अमुक कांम कीनो अर दूजो ओ के वा कोई नै सोरो देखती तो उणरो पेट दूखणो आय जावतो। अठा तक जे कोई धणी लुगाई में गैरो हेत होवतो अर बिमारी सिमारी में लुगाई धणी री खूब सेवा करती तोई उणनै घणो खराब लागतो अर वा निंदा करबो करती। इण वास्तै तन तोड़ मैंणत करणै पर ई उणनै गाळां अर ओळबा खामणा पड़ता। हालत अठा तक बिगड़चोड़ी ही के उणरी इण खराब आदत रै कारण उणरै माता पिता रै ई नाक में दम हो। खूब मैणती होवतां थकांई वा आपरै लखणां सूं कोई रै वास्तै भली नीं बण सकी। जे उणनै जीरणै री कळा रो ग्यांन व्है तो वा पोता रा जीवण आणंद-पूरण वणाय सकती ही अर आदर मांन पाय सकती ही।

जिण तरै सूं चंदरमा में ठंडक, फूटरापो अर चांदणो व्है पण इतरा गुण होवतां थकां ई उणरै मांयलो धब्बो उणरो सगळो फूटरापो मिटाय नांखै, इणीज भांत मांनखा रा जीवण में सगळी बातां होवतां थकां ई केई इसा फालतू कारण, बेढंगी बातां अर फिजूल रा पड़पंच व्है के जिण सूं उण रो जिंदगी बेकार व्है जावै। म० महावीर इण फालतू बातां सूं वचण वास्तै गृहस्थां खातर एक एक व्रत बतायो है, जिणरो नांम है अनर्थ दंड विरमण व्रत। उणमे अपध्यांन, आळस, हिंसाकारक कांम, पाप री प्रेरणा वगैरै जीवण कळा रै मारग में आडा

आवण वाळा बताया है। आज रा जुग में इण व्रत रो खेतर खूब लांबो-चोड़ौ व्है सकै। उणरो अरथ पण खूब विस्तार सूं सोच्यो जा सकै है। कोई पण कांम नै उत्साह सूं नी करणौ, ईमांनदारी सूं नी करणौ, फालतू बातां मे टेम बरबाद करणौ, लोगां रै साबासी री बाट जोवणी, पूरो रस लेय नै कांम नी करणौ, मिनखां रै कैवण सूं कांम बदळतो रैवणौ। पोता री ताकत नै खराब कांमां में खरच करणौ, कूड़ बोलणौ, मारपीट करणौ, जरूरत सूं ज्यादा संग्रै करणौ, ऐ विरमण व्रत रा दोस जिंदगी मे बाधक समझणा चाहिजै।

एक पातर खनै रूप, जवांनी अर धन हो। वा बीसूं जवांनां नै नचाय चुकी ही पण उणरै मन मे न तो सांति ही अर न आणंद, वा दुनिया रो सिकार करती पण दुनियां उणरो खुद रो सिकार करती। उणै जीवण री कळा नै समझी अर पोता री ताकत अर साधनां रो चोखो उपयोग करण रो बिचार कियौ। पोता रो खराब धधौ तो छोड दियौ अर आपरा धन सूं जात्रुआं वास्तै धरमसाळावां बणावणी, कुवा खुदावणा अर सादगी सूं जीवण रो विचार कियौ। केई मध्यम वरग रा परिवार, जिकां रा हाथ तग होवतां थकांई कोई खनै मांग नी सकै हा, वांनै चुपचाप मदद करणी सरू करी। घर घर मे उण पातर रो नांम फैलग्यौ। उणरी बद-नांमी बिल्कुल मिटगी अर ठौड़ ठौड़ उणरा बखांण (तारीफ) होवण लाग्या। इतिहास मे अबपाळी नांम री पातर रो नांम प्रसिद्ध है जिणे महात्मा बुद्ध रै चरणा मे सब कुछ अरपण करन पोता रा जीवण नै सफळ बणायौ।

आप आ चिंता मत करौ के आपरो लारलो जीवण कितरो खराब रह्यौ है। आप आगै रै वास्तै सोचो अर मौजूदा समय नै सुंदर बणावण कांनी ध्यांन दो। जे आप गृहस्थ हो तो आपरै गृहस्थी रा जिका फरज है उणनै आछी तरै सूं पूरा करौ। पोता रा परिवार, समाज, देस अर मांनखा जात रै वास्तै पण जिका आपरा फरज है वांनै ढंग सूं निभावौ। जीवण रा हरेक कांम नै जीवण कळा री निजर सूं तोलौ, परखौ अर जे वै सही अर हितकारी व्है तो बिना कोई विचार रै अथवा बिना कोई साबासी रै किया जावौ। आपरै जीवण री सफळता तै है। आपरो भविस्य उजळौ है। आपरो जीवण तुरत जीवण कळा री पगडांडियां नै पकड़ लैला, जठा सूं पड़ण री कोई संभावना नीं है, जठा सूं फिसळण रो कोई अनुमांन नी है।



जिंदगी रो आणंद

संसार रा सगळा धर्मां, सास्त्रां, विचार-धारावां, वादां अर ग्यांन विग्यांनां रो खास 'धे' है—मांनखा जूण नै सबसूं ऊंची उठावणी, मिनख में सूं मिनखपणौ जगाय नै उण नै देवपणा अर धीरै २ भगवतपणा कांनी लिजावणौ। पण आ बात जद इज पूरी व्है सकै के मिनख पोता री जिंदगी नै संभाळै, पोता रै जीवण रो उजळापौ अर कीमत समझै, मांनखा जूण री असली कीमत नै समझै। जठा तांई कोई मिनख पोता री जिंदगी नै सही रूप सूं नी समझै, जिंदगी री महानता नै नीं ओळखै, उठा तांई उण जीवण पर कोई पण नवौ रंग नी चढ़ सकै, कोई रोगन पॉलिस नी व्है सकै, उण जिंदगी नै चमकीली नी बणाईजै। एक रंगरेजौ कोई जूना कपड़ा नै रंगणौ चावै तो पैला उणरो जूनो रंग धोय नै साफ करै, जरै इज उण पर नवो रंग चढ़ सकै। इणीज भांत जे कोई मिनख आपरा जीवण पर नवो रंग चढ़ावणौ चावै तो उण पर जो जूनो रंग चढ़योड़ौ है उणनै साफ करणौ पड़ैला। कारण के जीवण पर लाखां बरसा रै संस्कारां रो रंग चढ़योड़ौ है सो साफ कियां बिनां नवो अर चमकदार रंग चढ़ नी सकै। अर जे चढ़ग्यौ तो बदरंग व्है जावैला। इणीज भांत एक हुसियार चितारौ भांत-

भांत रा रंग अर कूंची लियां भींत पर चितरांम वणावण नै तैयार बैठ्यौ है, पण जे भींतां सरीखी नी व्है, गड़गुंबड़ वाळी व्है तो उण पर चावतां थकांई चोखौ चितरांम कियां वण सकै। चितारौ भलैई माथो फोड़लै पण चितरांम नीं वण सकैला। इणीज भांत आपरी जिंदगी रूपी भींत सरीखी नी है, गड़गुंबड़ वाळी है अर इसी भीत पर जे फूटरौ चितरांम बणावणो चावौ तो सरीर, इंद्रियां, मन, बुद्धि अर वांणी ए सगळी सांमग्री होवतां थकां पण रूपाळौ चितरांम नी वण सकैला। आपनै पै'ली आपरी जिंदगी रूपी भींत नै समतळ करणी पड़ैला, खाडा खोचरा मेंटणा पड़ैला, ऊपरलौ कचरौ साफ करणौ पड़ैला, जद ई ज सांगोपांग रूपाळौ चितरांम बण सकै। जे आपरी जीवण रूपी चादर काळी है, मसोदा जिसी मैली घांण है तो उण पर नवौ रंग नीं चढ़ सकै। कवि री भाखा में—

"सूरदास की काळी कामरी, चढै न दूजो रंग।"

जिंदगी री काळी अथवा मैली चादर पर पण रंग चढावण रो ओ इज हाल है। भगवांन महावीर पण आ इज वात जिग्यासुआं नै कही ही—

"धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई"

उण जीवण पर इज धर्म रो रंग चढ़ सकै अथवा टिक सकै के जो साफ है अर सुद्ध है।

आपरी जिंदगी आपरो सबसूं कीमती धन है। भारत रा रिसी-मुनियां मांनखा री वारली संपदा—रंग-रूप, बुद्धि, इंद्रियां,

मन, सरीर, धन-धांन करतां मांनखा रा जीवण नै घणौ कीमती मांन्यौ है।

इण संसार रा वाड़िया नै जे आप विवेक री निजरां सूं देखौ तो आपनै केई अनोखा २ जीव निजर आवैला। भांत भांत रा रंग, भांत भांत री डिजाइनां अर भांत भांत रा चेहरा। संसार रा जीवां में मिनख पण एक अनोखो जीव है। दूजा जिनावरां रै ज्यूं उणरो माथो अर मूंडो नीचै कांनी नम्योड़ौ नी है। उणरो ऊंचो देख'र सीधो चालणौ आ बतावै के वो दूजा जीवां सूं न्यारौ है, ऊंचौ है। उणरो रंगरूप अर डील पण दूजा जीवां सू न्यारौ है। पूरी जीवाजूण में मांनखा सू वढ़नै दूजो कोई जीव आगै नीं है, कारण के मांनखा जूण मुगती रो दरवाजौ है। मांनखा नै जो खास तरै री जिदगी मिळी है उण सू वो देवता बण सकै अर ठेट परमात्मा ताईं पण पूग सकै। संसार में जितरा ई उगमणा अर आथमणा विद्वांन हुआ है, तीरथंकर, पैगंबर, संत, साधु अर रिसि मुनि हुवा है, सब जणां एक सुर सूं मांनखा जूण नै सब सूं ऊंची बताई है। जैन आगमां में मांनखा जूंण रै वास्तै 'देवानु प्रिय' सब्द आवै। भौतिक जीवण नै चावण वाळा देवतावां री जूंण सूं पण आ जूण बत्ती है, इण कारण देवता पण इणनै चावै। देवता इण हाड मांस री बणियोड़ी मांनखा देह नै इज नी चावै पण वे तो मांनखा री आत्मा, मन, बुद्धि, वांणी अर इंद्रियां री सांमी मांनखा नै चावै।

आपनै मांनव जीवण मिळ्यौ है, पण जे आप उणरी

कीमत नीं जांणौ, उणनै धूड़ रै मोल वेचण नै तैयार व्है जावौ, उणरो विकास करणौ के उणनै उजळो बणावणौ समझो इज नी तो आपरी जिंदगी मुळकणी तो आघी रही कुमळीज जावैला। जिकी जिंदगी फळै नीं, फूलै नी, मुळकै नी वा जिंदगी धरती पर भार रूप है। इसो मिनख ठीक है के आपरै उमर रा दिन ओछा करै। कारण के वासना रा कादा मे पड़्यौ वो आपरी जिदगी बितावै। उणरी सगळी उमर धन-दौलत जोड़वा में, मै'ल-माळिया ऊभा करवा में अर सरीर सिणगारवा में इज बीत जावै। इसी थोथी अर नकांमी जिंदगी रो मोल कांई है? न वा कोई रै कांम आय सकै अर न दूजां नै कोई फायदो पूगाय सकै।

समझ लो एक आदमी पोता रा कोई साथी नै कागद लिखणो चावै, लिफाफो बडो मजबूत अर फूटरो है, वेल-वूटा पण उण पर आछा मंडचोड़ा है, कागद पण घणो चीकणो है, लिफाफा पर ठिकांणो पण लिख दियौ है, पण मांयनै समाचार कांई नी है। उणरो साथी लिफाफो खोलै पण मांयनै समाचार बिल्कुल नीं मिळै तो वो कोरो लिफाफो उणरै कांई कांम आयौ। वै बेल वूटा अर वो चीकणो कागद कांई कांम आया।

ठीक आ इज हालत मांनखा जीवण रूपी कागद री है। कोई आदमी पोता रा सरीर रूपी लिफाफा नै ढंग सूं सजाय लै, पाउडर अर क्रीम चेहरा पर पोत लै, फूटरा रेसमी कपड़ा पैर लै, माणक मोतियां रा गेणा सरीर पर लाद लै, पण जे

जिंदगी में असली तत्व संयम, नियम, मरजादा वगैरै है वांरो कठै ई ठा' ठिकांणौ ई नीं है तो पछै वैं गेंणा, कपड़ा अर मोती मूंगा किण कांम रा ? उणरी हालत तो उण खाली लिफाफा जिसी है जिणसूं कोई मतळब नीं निकळै अर मांनखो पोता रा जीवण सूं इज थाक जावै। एक बगीचा में भांत भांत रा अर रंग रंग रा फूल खिल्योड़ा व्है, पण वां मे सुगंध बिल्कुल नी व्है, तो स्यात् आप वांरै खनै ई जावणौ नी चावोला। इणी ज भांत कोई आदमी फूटरो-फररो, लांबो-चवड़ौ, अर दीसतो-वास्तौ है पण उणमे विनय, विवेक, मिनखपणौ, संजम, सत अर अहिंसा जिसा गुण नी व्है तो वो मिनख विद्वांनां नै फूटरो होवतां थकां ई चोखो नी लागै। कवियां री कलमां, चितारां री कूंचियां अर लेखकां री लेखणियां इसा मिनख रो चितरांम उतारण नै तैयार नी व्हैला अर जे व्हैला तो ई वांरै मन मे नफरत व्हैला। जिकण जिदगी मे सत, सिव अर सुंदर नी व्है वा जिंदगी इज कुमळीजियोड़ी गिणीजै अर कोई उणरै खनै ई नी जावणौ चावै। इसा मिनख अर जिनावर में कोई फरक नी है।

संसार रा इतिहास में इसा अलेखूं दाखला मिळै, जिणमें ठा' पड़ै के जिंदगी कुमळीजगी है, उणनै ईखै, मोह अर माया रूपी नागां खायली है। जो जीवता तो हा पण मुड़दा सा बण नै। वां री जिदगी नै आंपां असफळ जिदगी कैवांला, भलैई वां रै खनै धन रा ढिगला व्है, संपदा रा भाखर व्है अर साधनां री वागरां व्है।

कंस अर रावण री इसीज कहाणियां है जिकां में. जीवण री मुळक नीं ही। ए दोनूं मोटा राजा हुवा है। वांरै जीवण में कई बातां ही; काया लांबी-चवड़ी, राजपाट री ठाट, मांनखो वांरै नाम सूं धूजतो पण जिंदगी में जो खास कमी ही वा आ ही के जिंदगी में मुळक को ही नीं। वे उमर भर दूजां पर अत्याचार करता रह्या, दूजां नै तावता रह्या, इण कारण इज दुनियां वांसूं नाराज रही। इतिहासकारां अर कहांणी लेखकां वां पर कलम चलाई तो जरूर पण नफरत सूं चलाई। कोई पण वांरी जीवणी पढै तो उण पर थू थू करण लागै। गोसालक अर गोड़सै री कहांणी पण इसीज है—मांनखा नै वांसूं नफरत है। हर हिटलर जो जरमनी रो करण-करावण हो, सगळा संसार में प्रसिद्ध व्हैग्यो, उणरी जिंदगी पण संसार नै बरबाद करण में इज बीती। उणरी जिंदगी में मुळक रो कठैई ठा' ठिकाणो ई नीं हो। जिकण रै जीवण में हिंसा अर मार-काट व्है उणनै मांनखो तो कीकर पंसद कर सकै पण उणनै पोता नै ई कदैई सांति नी मिळै।

जापांन रो हिरोसिमा नगर भस्म होवतो हो। अणुबम सूं बळभळ नै उणरी राख व्है री ही, उण वखत उण बळबळती भोभर पर दौड़तो एक आदमी उठै काई सोजतो हो। वो करैई अठीनै दौड़तो तो करैई उठीनै अर जोर जोर सूं बोलण लागतो—

He shall go to hell, who has destroyed this beloved town of Japan (जिणे इण जापांन रा फूटरा नगर रो नास कीनो है, वो जरूर नरक में जावैला।)

करैई वो थांभा ऊपर चढनै च्यारूंमेर देखतौ अर करैई अठी उठी फिरण लागतौ पण उणनै चाहिजती चीज नी लाद री ही। रूंखडा, बांटका, पांनड़ा सगळाई बळ नै भसम व्हैग्या हा अर वो पोतै पण गरम राखोड़ा पर चालण सूं बळ नै काळौ पड़ग्यौ हो।

इतरा में घायलां री सेवा करण वाळी एक मोटर उठै आई। उणां उणनै कोई पागल भारतवासी समझ नै सहायता केम्प मे लेग्या अर उठै उणरी सेवा चाकरी होवण लागी।

उठीनै अमेरिका में अणुबम बणावण वाळौ डॉक्टर चार्ल्स निकोलस कठैई भागग्यौ हो। उणरी लुगाई मेरी अर उणरो साथी राबर्ट सिडनी उणनै खोजै हा। वे मन में सोचता जावता हा के म्हे निकोलस नै कितरो समझायौ हो के थूं अणुबम मत बणा, इणसूं ससार रो नास व्है जावैला। पण वो मान्यो कोनी अर इण कारण इज उणरो साथ पण छोडणौ पड़्यौ। इसो मालम व्है के उणे आपरी चाळीस बरसां री सोध खोज सरकार नै सूप दी है जिणसूं जापांन रो नास व्है रह्यौ है। पण प्रेम रै नातै उणनै सोधणौ तो पड़ैला इज। यू विचार कर नें वे उणरी प्रयोगसाळा में पूग्या। पण उठै भीत पर लिख्योड़ौ हो—He shall go to hell (वो नरक में जावैला) ओ निकोलस रै हाथ सूं लिख्योड़ौ हो। उणी वखत निकोलस रो जूनौ नौकर टांमी मिळयौ। उणे बतायौ के जिण वखत रेडियो सूं हिरोसिमा रै नस्ट होवण री खबर आई, निकोलस एकदम ऊठ्यौ—हाका करण लाग्यौ अर आंख्यां बद करनै अठा सूं दौड़ग्यौ। उठा पछै उणरो कोई पतो नी है।

समाचार पत्रां में निकोलस रै गुम हो जावण री खबर देय नै सिडनी अर मेरी जद जापांन पूग्या तो सांति संघ रा सदस्यां वांरो उठै खूब आदर सत्कार कियो अर वांनै सहायता केन्द्र दिखावण नैं लेग्या। उठा रै एक मोटै डाक्टर विलियम एक अस्पताळ में फिरतां पूछ्यो के कांई आप वताय सकौ के इसा भयानक वम रो वणावण वाळो कुण हो, तो सिडनी निकोलस रो नांम वतायो। नांम वतावतां पांण एक पागल री जोर सूं आवाज आई—Allas, he shall go to hell (अफसोस वो जरूर नरक में जावैला)।

वे ओ सुण नै एकदम चौंक्या, वांनै विस्वास व्हैग्यो के वो पागल इज निकोलस है, कारण के प्रयोगसाळा री भीत पर ए इज आखर लिख्योड़ा हा अर टांमी पण आ इज बात कही ही।

वे सीधा उणरै खनै आया अर आंसूड़ा टळकावता वोल्या—"अरे निकोलस, थारी आ हालत !" निकोलस पण आपरा साथी अर पोता री लुगाई नै पै'चांण ली। वो बोल्यो—"मेरी, थारी वात साची निकळी, म्हूं जरूर नरक में जाऊंला। जो दूजां री मुळक नै मिटाय नै पोता री मुळक कायम राखणी चावै, वो थोथा विचारां में गोता खावै। मैं म्हारी सोध संसार नैं वरवाद करण सारूं काम मे ली, इण कारण इज म्हारी खुसी गायब व्हैगी।

ओ है जिंदगी रो देवाळो। जठै मांनखो खोटा कांम करै, उठै उणनै कितरा दुख उठावणा पड़ै। निकोलस रा दाखला

सूं आंपां आछी तरैं समझ सकां के उणरैं चाळीस बरसां री मैणत अकारथ गई अर उणरो पोता रो जमारो ई बिगड़ग्यो। जे वो पोता री अक्कल, हिरदा अर इंद्रियां नै चोखै मारग घालतो तो दुनियां मे पूजीज जावतो।

चंदरमा कितरो फूटरो व्है। अर फेर पूनम रो पूरो चांदो जद आपरी सोळू कळावां सागै ऊगै तो कितरो रूपाळो, कितरो ठंडो, कितरो चोखो अर कितरो आणंद देवण वाळो लागै। इसा रूपाळा चांद नै हरेक जीव देखणो चावै, इणरो कारण ओ इज है के वो चंदरमा सगळी कळावां सागै पूरण व्है।

इणीज भांत जिण मांनखा री जिंदगी सगळी कळावां सूं पूरण व्है, उणनै संसार रा सगळा जीव चावै, उणरैं कुसळ-खेम री कांमना करै। सगळां रै वास्तै वा जिंदगी आणंद देवण वाळी व्है। मरजादापुरसोत्तम रांम, करमजोगी क्रिसण, भगवांन महावीर, महात्मा बुद्ध, ईसामसीह, म० गांधी इण सगळा महापुरखां रो जीवण चंदरमा री पांण इमरत सूं भरयोड़ो हो। वांरै जीवण मे सांति, प्रेम, न्याय, सत अर क्षमा भरयोड़ी ही। ओ इज कारण है के आज कई वरस बीतग्या पण हालतांई मांनखो वांनै याद करै, देव करनै पूजै। ज्यांरै जीवण में सहज आणंद हो, निकोलस रै गळाई उणा अणु-बम री सोध नी करनै प्रमाणु बम री खोज कीवी ही अर प्रेम री पूरणता इज वांरै जिंदगी रूपी प्याला नै छळोछळ भर सकी ही। जीणै री कळा वांरै बरोबर हाथ आयगी ही। इण कारण इज अबखी सू अबखी घड़ियां में पण हँसता रह्या, वांरै जीवण

मे कदेई उदासी के थकावट नी आई। वै पोता रै जिंदगी री सुरू सूं छेट तक कायम राख सक्या। जोगेसर आणंदघनजी पोता रै जीवण री मुळक खातर पूरो जीवण बितायग्या। वांरै जीवण में मस्ती ही, फक्कड़ता ही, सरलता ही अर ए चीजां इज वांरै जिंदगी रो आणंद हो।

जोगेसर आणंदघनजी बडा पांचवांन पुरस हा। एकर वे कोई गांव में ठैरयोड़ा हा, जठै ओ कायदो बण्योड़ो है के जठातांई गांव रो नगर सेठ सभा मे नी आय जावै उठातांई कोई पण साधु महातमा पोता रो वखांण सरू नी कर सकै। जोगेसर नै तो कोई परवा ही कोयनी। सो उणां तो पोता रो वखांण सरू कर दीनो अर नगर सेठ थोड़ा जेज सूं उठै आया। सेठां नै आ बात खारी लागी सो बखांण खतम हुयां पछै वे महातमाजी खनै पूग्या अर कैवण लाग्या—"महाराज! आपनै ओ ठा नी हो के इण गांव री एक मरजादा बणियोड़ी है अर वा आ के जठा तांई इण गांव रो नगर सेठ बखांण मे नी आय जावै, उठा तांई सरू नी व्हैणी चाहिजै। आप नै सोच विचार नै ओ कांम करणो चाहिजतो हो।" आनंदघनजी तो फक्कड़ साधु हा, वै किणरी परवाह करता? वे बोल्या—"म्हूं इण लिछमीपतियां री थोथी बाता नै नीं मानूं।" सेठ नाराज होय नै बोल्यो—"महाराज, हाल आपनै रैवणो तो इण गांव अर इण समाज में इज है, पछै आप इयां अकड़ नै कियां रैय सकोला?" संत देख्यो सेठ रो पारो गरम व्हैग्यो है तो वे सांत भाव सूं बोल्या—"सेठजी, जे आपनै इसो इज गुमांन व्है तो म्हूं

तो अबार ओ गांव छोड नै चाल्यौ जावूं। इण समाज रै सागै म्हूं म्हारी आत्मा नै नी बांध सकू। अर जे थांरी आ धारणा व्है के म्हे आनंदघन नै पाळां पोसां हां तो थांरी आ धारणा थोथी है; न म्हनै इणां मोटा-मोटा उपासरां री जरूरत है अर न थां जिसा सेठ-साहूकारां री गुलांमी री जरूरत है।" इतरो कैय नै वे तो आपरी साधना वास्तै वन कांनी रवांनै व्हैग्या अर आनंद सूं आपरी साधना में लीन व्हैग्या। ओ है जिंदगी रै आणंद रो एक नमूनो। जठै इसो आणंद व्है, उठै कोई पण चोखी कांम, चोखी साधना रुक नी सकै। सागै-सागै कोई पेण''बिखो के दुख टिक नी सकै। जोगेसर आणंदघनजी तीरथंकर चौवीसी मे तीजा तीरथंकर संभवनाथजी नै अरज करतां जिंदगी रै असली आणंद रो भेद इण भांत खोल्यौ है—

सेवन कारण पहली भूमिका रे।
अभय, अद्वेष, अखेद ।।
भय चंचलता नै परिणामनी रे।
द्वेष अरोचक भाव ।।
खेद प्रवृत्ति करतां थाकिया रे।
दोष प्रवोध लखाव ।।
सभव देव ते धुर सेवो सेव रे।
लही प्रभु सेवन भेद ।।

कवि आणंदघनजी जिंदगी रो आणद परगट करण खातर कितरा ऊंडा पूगग्या है। वे कैवै के प्रभु री सेवा करण खातर अर जीवण नै ऊंचो उठावण खातर प्रभुत्व सेवन रा भेद नै समझो अर पछै उणरो भोग करो। प्रभुत्व-सेवन रो अरथ है

जिंदगी रो आणंद मेळवणो। इण वास्तै पैला भोमका तैयार करो। अर भोमका तैयार करण वास्तै पैला तीन चीजां री जरूरत है—अभय, अद्वेस अर अखेद। अभय रो अरथ निडरपणो व्है, पण इण निडरपणा रो अरथ थोथी अकड़ नी है। परमांणु बम बणावणा के एवरेस्ट री चोटी माथै चढणो पण निडरपणो नी है। लड़ाई रा मैदांन में जे कोई आदमी लाखां गोरां रै सांमनै मौत सूं जूझतो थको निकळ जावै के कोई भयानक अस्त्र सस्त्र वणाय दे, पण इसा मिनख रै पण हिवड़ा री धड़कणां सुणो व्है तो ठा' पड़ै के उठै पण जीवण री मोह विरतो है। वारै तो उठै वीरता रो सांग दीखैला पण मांयला कांनी मौत रो भय धड़कतो निजर आवैला। इण वास्तै निडरता रो अरथ अठै अंदरूणी विरतियां रो चचळ नीं होवणो है। उठै वारली निडरता के वारलो आणंद मिनख नै मोटो नी वणाय सकै।

जिंदगी रै आणंद रो दूजो तत्व उणां अद्वेस बतायो है। अद्वेस रो मतळब फगत इतरो इज नी है के दूजां सूं वैर-विरोध नी करणो। आप जांणो के मामूली भाठौ के एक इन्द्रिय जीव कोई सूं वैर नीं राखै। फगत इण कारण सूं इज वांनै अद्वेसी नी कैय सकां। जठै उदासीनता, नफरत के बेपरवाही री विरती व्है, उठै द्वेस मांयनै इज मांयनै घोड़ा री पांण दौड़तो निजर आवै। जिंदगी सूं हार नै बैठ जावणो, किणै ई आपरी बात नीं मांनी तो उणसूं कांनी ले लेवणो पण अद्वेस नीं है। उणरै मन में वळण नीं व्हैणी चाहिजै। जठै मन रा पड़दा मे

वैर विरोध री होळी सुळगती व्है, उठै उदासीनता के कांनां लेवण री राख ऊपर नांखण सूं वैर विरोध री आग बुझै नी पण कोई निमित्त रूपी पवन लागण सूं पाछी आग सुळग जावै। इण वास्तै आनंदघनजी री निजर में द्वेस रो मतळब अरोचकभाव है। कोई मिनख सूं नफरत करणी, उणसूं कांनां ले लेवणौ के उणसूं उदासीनता देखावणी पण द्वेस इज गिणीजै। जठै द्वेस व्है उठै मोह, आसक्ति अर मूर्च्छा वगैरै मांयनै छिप्योड़ा रैवै। इण वास्तै आपरो मतळब पूरो नी होवण सूं, मोह री भूख नी बुझण सूं, मूर्च्छा नै दांणौ-पांणी नी मिळण सूं कोई मिनख सूं नीं बोलणी, उणरै सागै संपर्क नी राखणी, उणसूं कांनां करणौ अद्वेस नी है। अद्वेस रो असली रूप उठै है के जठै विरोधी सूं विरोधी मिनख रै वास्तै पण मन मे सद्‌भावना व्है, मिळणै पर प्रेम भाव व्है, वांणी में नेह टपकै, हिवड़ा में प्रेम-भरी जग्या व्है अर आत्मा में करुणा व्है। उणरै विरोध रै कारण आपरी कोई सुभ के सुध विरती नै रोकणी, भय रै कारण सत करम सूं डिग जावणौ, एक तरै सूं अद्वेस इज है। जठै आ विरती व्है उठै जिंदगी रो असली आणंद के जिंदगी री मस्ती नीं आय सकै।

जिंदगी रै आणंद रो तीजो तत्व अखेद है। अखेद रो मतळब फगत दुखी नी होवणौ इज नी है। एक मजूर आपरो कांम करतौ करतौ कायो नी व्है के एक वैग्यांनिक बम बणा-वतौ बणावतौ थाकौ नीं व्है तो इतरा रो इज मतळब अखेद नी है। कारण के उठै बुरा कांम री बुराई रो कांटो हर वखत

मन मे तुरयोड़ी रैवै, इण वास्तै वो पीड़ा देवती रैवै। मिनख नैं पैं'ला सूं इज सोच विचार रै ढंग सूं इसो कांम करणो चाहिजै के पछै उणनैं पछतावो नीं करणो पड़ै। कारण के जिको तीर एक'र हाथ सूं छूट जावै वो पाछो हाथ नीं आवै। इण वास्तै कोई पण कांम कियां पैं'ला मिनख नैं हजार वार सोच लेवणो चाहिजै जिणसूं के पछै पछतावो नीं करणो पड़ै।

इण वास्तै आणंदघनजी रै कथण माफक अखेद रो अरथ ओ हुवो के कोई पण कांम सोच-समझ नैं ढंग सूं करणो जिणसूं पछै उमर भर चिंता में नीं बळणो पड़ै। इण तरै पोता री निजर सूं सत जच्योड़ी, हितकर लागोड़ी बात सरू करनैं रुकणो नीं, के मन में कोई भांत रो दुख कळेस नी लावणो अखेद रो भेद है।

हां, तो जो मिनख पोता री जिंदगी में आणंद रा इण तीनूं तत्वां नैं अपणाय ले तो उणरो जीवण पूरण व्है जावै, कळा-पूरण चांद री पांण मुळकण लाग जावै। पण आ बात ध्यांन में राखणी चाहिजै के ए तीनूं तत्व भेळा होवण सूं इज जिंदगी रो आणंद आय सकै। जिंदगी रै आणंद रो असली नुस्खो ओ इज है। जिंदगी री असली अर पूरी मुळक (आणंद) रो मतळव ओ है के जो एक'र सरू करनैं आगै सूं आगै पूरणता कांनी वधती जावै, रुकै नी तो आणंद अंत तांई कायम रैय सकै। जिण भांत दूज रो चंदरमा दूज सूं लगाय नैं पूनम तांई वधती इज जावै, उणीज भांत मांनखा रा जीवण में पण आणंद धीरै धीरै वधतौ इज रैवणो चाहिजै। अर जे मारग

में इज पोता रा फरज नै छोड दियौ, मारग भूलग्या अथवा रुकग्या तो समझणौ के आणंद तांई पूगणौ कठण है ।

एक जूनी कथा है। वा इण भांत है के एक राजा हो, उणरै एक बेटो हुयौ। कोई जोतखी राजा नै कैय दियौ के ओ कुँवर तो मोटयार गाळा मे इज मर जावैला, उणरा गिरै इसा इज पड़या है। अबै राजा कुँवर होवण री खुसी तो भूलग्यौ अर उणरै मौत री चिंता मे पड़ग्यौ। रांणी पण घणी दुखी हुई। राज परवार रा सगळा मिनखां पण बडो सोच कियौ अर इण भांत सब जणा हर वखत गमगीन रैवण लाग्या। राजा रै दिमाग मे आठूं पो'र अर चौसठ घड़ी जोतखी री वांणी गूजण लागी अर वो पोता रा फरज नै ई भूलग्यौ। यू फरज रै तौर कुँवर रो पालण पोसण हुयौ, सिक्षा-दीक्षा पण हुई, अर कुँवर मोटयार ई व्हैग्यौ पण मा बापां रै मन में संतांन रै वास्तै जिकी असली हूंस व्है, जिकौ जिंदगी रो असली आणंद व्है, वो नी आय सक्यौ। एक मांमूली सी बात जिंदगी रो सगळौ रस, सगळौ आणंद इज खतम कर दियौ। ओ सगळौ परिस्रम अर पाळण पोसण ऊपरला मन सूं होवतो हो। रांणी कुंवर नै खोळा में लेयनै खवाड़ती, पिवाड़ती अर उणरौ लाड ई करती पण उणरै दिमाग में तो हर वखत आ बात चक्कर काटबो करती के कुँवर जवांनी में जावती रैवैला। पोता री संतांन नै पाळतां मा रै मन मे जिको असली आणाद व्है वो सूखती जाय रह्यौ हो।

इण भांत जिंदगी मे कई मौका आवै के जद जीवण भय

अर लोभ री धारा कांनी मुड़ जावै अर जिंदगी रो असली आणंद खतम व्है जावै।

आजकाल रा जुग में जिका धर्म रा ठेकेदार वण्योड़ा है, वांरै जीवण में पण जिंदगी रो असली आणंद क्यूं नी है? रात र दिन धर्म री क्रियावां में डूब्योड़ा रैणै पर ई वांरै जीवण मे आणंद क्यूं नीं है। इणरो असली कारण जे ढूंढ्यो जावै तो ठा' पड़ैला के वांरी सगळी क्रियावां लोभ अर भय माथै टिक्योड़ी है। का तो वांनै सुरग रो लोभ है अर का नरक रो भय है। अथवा इण संसार मे स्वारथ सिद्ध होवण रो, नांमवारी रो के धन कमावण रो लोभ है, के सरकारी सजा रो, बेइज्जती रो, स्वारथ भंग होवण रो भय है। फरज री असली धार पर वांरी जीवण रूपी नदी नीं वैवै। इण कारण इज वांनै धर्म क्रियावां में रस नीं आवै, आणंद नी मिळै। धर्म री सगळी क्रियावां ए दोन्यूं वातां ध्यांन में राख नै की जावै।

भगवद्-भगत थेरिसा रो नांम आप सुण्यो व्हैला। वा एक महांन पंडिता ही। वा आपरै जीमणा हाथ में चराक (मशाल) अर डावा हाथ में पांणी री बाल्टी राखती। लोग उणनै इण भांत हाट बजार में फिरती गिरती देखता तो वांनै वडो अचूंभो होवतो। कोई उणनै पूछतो तो वा पडुत्तर देवती कै चराक सूं म्हूं सुरग रा सुख वाळ देवणा चावूं अर बाल्टी रा पांणी सूं नरक री आग बुझा देवणी चावूं। इणसूं मांनखो सुरग री थोथी कल्पनावां में डूब्योड़ो नीं रैवै अर न नरक

सूं डरपै, वां धरम रा कांमां में लाग्यी रैवै अर पोता रै फरज रो पूरो ध्यांन राखै। लोगां पूछ्यौ–"थांनै आ कल्पना कियां सूझी ?" डोकरी थेरिसा बोली–"इण संसार रा वाड़िया मे जितरा पण साधक है, कोई रै मन में नरक रो भय समायोडौ है तो कोई सुरग रा सुखां में लीन व्है रह्यौ है, पण कोई बिना स्वारथ-आपरो फरज पूरौ करनै जिंदगी नै आणद सूं पूरण नी बणावै। घणखरा मिनख दुनियां मे चोखा कांम करै जरूर पण वांरै लारै ई कोई न कोई भेद है। कोई पोता रा पापां नै छिपावण नै सत्करम करै तो कोई आपरो नांमवारी अर धन कमावण रै वास्तै या दुनियां नै उल्लू बणावण रै वास्तै सत्करम करै। इण भांत हजारां साधकां रै मन में घुस्योड़ी सुरग री उण थोथी कल्पनावां नै मसाल सूं बाळणी चावूं अर नरक रा डर नै बाल्टी रा पांणी सूं बुझावणी चावूं। मतलब ओ के म्हूं भय अर लोभ दोनूं मिटा देवणी चावूं। म्हूं समाज रै मन मे आ बात आछी तरै बिठा देवणी चावूं के जिंदगी रो असली आणंद पोता रो फरज निभाणै पर इज मिळ सकै। धरम, धरम रै वास्तै होवणौ चाहिजै अर सत्करम सत रा पालण वास्तै होवणौ चाहिजै। आ इज म्हारी भावना है।

डोकरी री बात रो सार ओ है के मांनखा नै पोता री जिंदगी में तकलीफां, मुसीवतां अर अड़चनां सूं नी डरणौ चाहिजै। ओ व्हैला जद इज जीवण मे असली आणंद आवैला।

जिंदगी रो आणंद आत्मा सहित पूरा सरीर रो आणंद है। जठै फगत सरीर रो आणंद इज व्है, उणनै पूरो आणंद नी कह्यौ जा सकै। कारण के आत्मा तो पूरा सरीर, इन्द्रियां, मन अर बुद्धि रो पावर हाउस है। जे आत्मा में आणंद नी है तो मन रो, बुद्धि रो, हिरदा रो के सरीर रो आणंद जिंदगी नै इतरी मजबूत नी बणा सकै। तांम पण ए सगळा आणद जिंदगी रा आणंद नैं पूरण जरूर बणाय सकै। बसंत रित आवै जद फगत रूखड़ा रै नवा पांनड़ा इज नी आवै, पण फूल, मांजर, फळ, कूंपळां अर नैनी नैनी डांमकियां सगळी घणी फूटरी आवै। वसंत रो वो आणंद पूरण आणद बणै। सगळी कुदरत इसी दीसै जांणै नवो वागो पैर्‌यौ है। अठीनै कोयल टहूका देवणा सरू करै अर उठीनै भांत भात रा फूलां पर भमरा फूंदियां गूंजण लाग जावै। एक कांनी जूंना अर पीळा पांनड़ा झड़ण लागै तो दूजी कांनी नवा अर सोवणा पांनड़ा आवणा माडै। चिड़कलियां अर सूवटा किलोळ करण लागै अर रूखां पर मा'ळा घालण लागै। इण भांत वसंत रित रा सगळा अंग कुदरत रा आणद नै घणौ बढ़ा देवै। ठीक इणीज तरै जिदगी रा आणद में आत्मा तो खास चीज है इज, पण मन, बुद्धि, हिरदो, इन्द्रियां अर सरीर पण पूरा सहायक है।

दाखला रै रूप में सँब सूं पैलो मन रा आणंद नै लेलौ। जिण वखत जिदगी मे अबखी घड़ी आवै, च्यारूमेर खतरो निजर आवै, उण वखत काचो अथवा डरपोक मन मारग चूकै

जावै। पण मन री मजबूती अथवा साचो आणंद उठै इज है के जठै अबखी सूं अबखी वेळा में पण मन भाखर री पांण अचळ रैवै, हिलै नी के डिगै नीं। जिकण मन में इसा आणंद रो वासो नी व्है वो मन एक झाड़ रै उनमांन समझणौ चाहिजै के जिको मुसीबतां रै जकेरां सूं करैई अठीनै लुळ जावै तो करैई उठीनै। वो पोता रा धे' माथै अटळ नी रैय सकै। इसो मन मनसूबां री दुनियां में डूब्योड़ौ रैवै, चिंता री चिता में धधकतो रैवै के पछै आभै री सोनै री कल्पनावां मे रमतो रैवै। पण ठोस धरतो पर ठे'र नै सन्मुख आवण वाळी बातां रो उकेल नी सोचै। कइयां रो मन तो इणसू पण कमजोर व्है, वांनै तो मुसीबत रो मांमूली जकैरो कठैई रो कठैई जाय नै फैंक सकै। इसा मन वाळां रै खनै भलांई लाखां रुपियां री पूंजी व्हौ, कुटुम कबीला सूं घर भरयोड़ो व्हौ, रैवण नै मोटा मोटा मै'ल माळिया व्हौ, पण वांरै कमजोर मन मे आणंद थोडी ताळ पण नी टिक सकै। मामूली सी आफत आई कै वे हाय हाय करण लाग जावै, पोता रा फरज नै छिटकाय देवै अर हरदम कोई नै कोई चिंता में लीन रैवै। सुख री बातां सुणतां पांण वां रो अचपळो मन चलायमांन व्है जावै। पण जिकण मिनख रै मन मे आणंद री छोळां आय री' व्है, उठै मन री कोई पण खूणो इसो नी मिळैला के जठै भय अथवा लोभ रो असर व्है सकै। इसो मन तो फरज रूपी तीखी धार पर चालतो रैवैला। बीच मे जे भाठो आवैला तो उणसू टक्करा सी अर सूगलो पांणी आसी तो उणसू पण जूझसी।

घणो जूंनी बात है के स्यालकोट (सिंगालकोट) मे बौद्ध

धर्म रो सम्मेलन हुयौ। उण वखत एक सवाल ऊठ्यौ के इण सहर में एक विद्वान ब्रांह्मण रैवै, वो बौद्ध भिक्खुवां सूं नफरत करै, अबै कुण इसो भिक्खु है जो उण ब्रांह्मण रा ओछापण नै दूर कर सकै अर प्रेम सू उणनै सही मारग पर लाय सकै।

एक साधु इण कांम नै पार लगावण रो बीड़ो उठायौ—वो बोल्यौ के म्हूं पडत रांमन नै जीतवा री कोसिस करूला। भिक्खु हाथ में भीख रो बरतन लेय नै उण पंडत रै घरां पूग्यौ। पण उठै तो पैली सूं इज इण बात री सख्त मनाई ही के भिक्खु सूं कोई भासण ई नी करै। सो स्रमण नै भिक्षा नी मिळी अर वो पाछो आयग्यौ। दूजै दिन वो पाछो गयौ तो उठै तो वारी वा बात। इण भांत वो नित रोज जावतौ अर हंसतो हंसतो पाछो आय जावतौ। यूं करतां उणनै पूरा दस मह । बीतग्या पण उणरै मूडा पर कदैई रीस री रेखा ई नी आई। वो तो हर वखत हंसतो रैवतौ। उणरै मन रो धीरप अर सांति देखनै मिनख अचूभौ करण लागता।

एक दिन पंडतांणी घर मे एकलीज ही सो उणे भिक्खु नै कह्यौ—"आप दर हमेस भीख लेवण नै पधारौ पण घर-धणी रो इण बाबत हुकम नी है, इण वास्तै म्हूं आपनै भीख देय नी सकूं।"

स्रमण बोल्यौ—"बैन संत रै वास्तै भीख री कोई कमी नी है। भीख देवण वाळा कई माई रा लाल बैठ्या है। म्हनै भीख देवण सूं जे थारै घर मे झगड़ो टंटो होवतौ व्है तो म्हारै भीख नी चाहिजै। स्रमण पाछो विहार कांनी वहीर हुवौ के

मारग में उणनै वो इज पंडत मिळग्यो, जिकण नै के वो सुधारणो चावै हो ।

भिक्खु नै खाली हाथां आवतो देखनै पंडत उण सूं मजाक करतो बोल्यो—"थूं कठै गयो हो ? कांई भीख वीख मिळी ?"

स्रमण पोता री मिसरी जिसी मीठी वांणी में बोल्यो—"महाराज, म्हूं नमायत रै घरै भीख लेवण नै गयो हो, आज दस महीनां री तपसा फळी है अर पंडतांणी जी म्हनै कांई दीनो है।" "पंडतांणी कांई दीनो है" आ बात सुणनै पंडतजी एकदम लाल कंकोळ व्हैग्या। वे स्रमण नै उठै इज ठैराय नै सीधा घरै पूग्या अर पंडतांणी नै पूछण लाग्या—"बता, आज थें उण साधू नै कांई दियो है ?" वा बोली—"पतिदेव, म्हूं आपरै हुकम बिना कियां देय सकूं ? अर आपरै हुकम री उदूली कियां कर सकूं ?"

पंडत पाछा घर बारै आया अर लोगां नै सुणावण नै जोर जोर सू कैवण लाग्या—"भाइयां, घोर कळजुग आयग्यो है, किसीक गजब री बात है के ए लोग साधू रो भेख बणाय नै दुनियां नै ठगणी चावै। देखो तो खरी, ए कितरो कूड़ बोलै, अबार ओ कैवतो हो के पंडतांणी म्हनै कांई दियो है, अबै म्हूं उणनै पूछूं के पंडतांणी उणनै कांई दियो है ?

स्रमण हंसतो थको बोल्यो—महाराज ! पंडतांणी म्हनै "ना" दियो है। आ तो आप नै ठा' इज है के म्हूं घणा दिनां सूं आपरै उठै भीख मांगण नै आवूं हूं। आज म्हनै "ना" मिळ्यो है तो स्यात कोई दिन "हां" पण मिळ जावैला।

भिक्खु रो इसो अनोखो पडुत्तर सुण नै पंडत जी री रीस सांत व्हैगी। उणां पूछ्यौ—थारी आ कोसिस कितरा दिन तांई चालती रैवैली ? भिक्खु सांति सूं पाछौ बोल्यौ—जठा तांई आ जिंदगी है। पंडत आ बात सुणनै घणौ प्रभावित हुवो—धन है आपरो जीवण, आपतो मिनख नी पण देवता हो। दस महीनां मे कोई पण दिन आपनै आदर भाव नी मिळ्यो, अनाज रो एक दांणौ पण नीं मिळ्यौ, तांमपण आपरा चेहरा माथै म्हैं कदेई रीस नीं देखी। धन है आपरी सांति अर सेहन सगती नै। इणमें कितरी कोमळता अर सांति है। पंडत स्रमण रै पगां पड़ग्यो अर माफी मांगण लाग्यो। बोल्यो—"म्हूं आपनै समझ नीं सक्यौ। आप तो म्हारा जीवण नै सुधारण नै आया हो। म्हारा मोटा भाग है के म्हनै आप जिसा महात्मा रा दरसण हुवा है।" पंडत उणनै घरां लेग्यो, भीख दीवी अर पोता रो जीवण सरल अर सात्विक ढंग सूं बितावण लाग्यो।

ओ है मन रै आणंद रो साचो नमूनो। अक्कल रो आणंद उठै मिळै, जठै मिनख हरेक मौका माथै आपरी वेवारीक बुद्धि सूं सही गळत रो ठीक ठीक निरणै करलै। जठै अक्कल राजसी व्है, उठै चंचळता रै कारण गळत निरणै करलै, मारग भुलाय दै अर मौंको पड़्यां नास पण करदै। इसी बुद्धि घणी खराब व्है, वा रक्षा करवा वाळी के हित करवा वाळी नी व्है। दाखला रै रूप मे निकोलस री बुद्धि घणी तेज ही, पण वा रजोगुणी होवण सूं नास-कारक बणी। इणीज भांत

तमोगुण वाळी पण मूरखता री मूरत व्है। वो सही के गळत कांई नी सोचै। तमोगुणी करतां तो रजोगुणी चोखो। तमोगुणी मिनख तो अंधविस्वासी, अंधसिरधाळू, रूढ़ीवादी अर बिना विवेक रो व्है, इण वास्तै राजसो अर तांमसी विरती वाळां रै जीवण मे साचो आणंद नी व्है। जठै बुद्धि दूजां री भलाई में लागती व्है, उठै इज बुद्धि रो आणंद निजर आवै। विद्वांनां धन री दळिदरता करतां बुद्धि री दळिदरता नै घणी खराब बताई है। विद्वांनां मोटचारां नै उपदेस पण इण भांत दियौ है—

"धर्मे ते धीयतां बुद्धिर्मनस्ते महदस्तुय" हे मोटचार, थारी बुद्धि धन में नी धर्म में रमै, थारो मन ओछौ नी पण मोटौ बणै।

हिरदा रो आणंद वो गिणीजै के जठै हिरदो घणौ मोटौ व्है, जिकण में मन में सगळा संसार रै वास्तै प्रेम, नेह अर इमरत रो झरणी बैवै। जठै मन नैनो व्है, उठै थारा-म्हारी री भावना, स्वारथ री निजर, जात-पांत रो भेद, रंगभेद, रास्ट्र भेद, प्रांत भेद अर संप्रदाय री भावना घणी ऊंडी व्है अर वै भावनावां उणरा हरेक वेवार में साफ दीसै। उणरो मन दूजां नै देख नै पिघळै नी। दूजा धर्मा रा के देसां रा विद्वांनां रै वास्तै पण उण मन मे कोई आव-आदर नीं व्है। इसो मन मिनखपणा रा टुकड़ा २ कर नांखै, मिनखपणा नै विखोर नांखै। इसा थोथा मन सूं न दांन दियौ जा सकै अर न परोपकार कियौ जा सकै। संसार री भलाई रा कांमां मे पेलपांत

तो इसो मिनख पड़ै इज नीं अर जे पड़ै तो उण में उणरौ कोई न कोई स्वारथ जरूर व्है। वो उणमें भय के लोभ रै कारण पड़ै। इण कारण इज हिरदा रो आणंद उठै नीं लाधै। हिरदा रो आणंद तो उठै इज व्है के जठै मिनखपणो अखंड व्है। वो पोता रा हिरदा में सगळी दुनियां नै समेट लेवै। कैड़ोई पापी, हरांमी नै दुरगुणी व्हो, पण उणरै वास्तै ई उणरै मन में तो प्रेम इज व्है। वो उणनै प्रेम सूं सुधारवा री कोसिस करै। आजकाल रा नेता रै ज्यूं वो उणनै टाळ नै एक कांनी नीं करदे पण उणमें प्रेम सूं समझाय नैं सुधारवा रो मौको दे। वचन रो आणंद उठै मांन्यौ जावै के जठै वांणी सागै फूल झड़ता व्है। इमरत जिसो मीठी, चोखी अर तुलियोड़ी सत वांणी बोलीजै उठै इज वचन रो आणंद है। मांनखा रै जीवण में बुद्धि, हिरदो के मन रो आणंद वांणी सूं दीसै। वांणी दूजा आणंदां रो दरपण मांन्यौ जावै। इण वास्तै इज सोच-विचार नै मीठो बोलण वाळौ मिनख हर वखत मुळकतौ रैवै। पण जिकण रै मूंडा सूं कड़वी, खोटी के नकांमी वांणी निकळैं जिकण सूं वैर, विरोध अर दुस्मणी वधै तो इसा जीवण में असली आणंद कठै। विद्वांनां कह्यौ है—वचने का दरिद्रता—मीठा वचन बोलण में कंजूसी क्यूं करणी चाहिजै। इण वास्ते वांणी रो आणंद पण घणौ जरूरी हैं। काया रो आणंद उठै मांन्यो जावै के जठै काया सूं कोई पण सोच-विचार नै समझदारी सूं कियौ जावै। वेवार मांनखा रै जीवण रो दरपण मांन्यौ जावै, उणनै देखनै इज मांनखा री अंदरूणी हालत रो अंदाज लगायो जावै। इण वास्तै जठै जीवण रा वेवार में

ओछा विचार व्है, नफरत व्है, वैर विरोध व्है, स्वारथ के लोभ व्है, काया सूं मांनखा रो भूंडो व्है तो व्है, उठै जीवण रो आणंद नीं मिळ सकै। काया रो आणंद हिरदा में छोळां देवता रगत री पांण है। रगत एक ठयै नी रैवै, वो सगळा सरीर मे दौड़तो रैवै अर उण हालत में इज सरीर निरोग रैवै। जे रगत एक ठायै रुक जावै तो काळो पड़ जावै, सरीर नै विगाड़ नांखै अर कांम पड़्यां जीव नै पण खोळियौ छुडाय नांखै। जिको रगत दौड़ी करतौ रैवै उणरो रंग रातो रैवै। जिको लोहू पड्यो रैवै उणरै काट लाग जावै अर जिकण नै रात दिन कांम में लियौ जावै वो चमकतौ रैवै। इणीज भांत जिको सरीर हरदम दूजां री भलाई करण नै तैयार रैवै, पराई पीड़ काटण वाळौ व्है, रगत री पांण समाज री सेवा करण नै तैयार रैवै, वो सरीर आणंदपूरण अर ललाई वाळौ व्है। वो हरदम निरोग रैवै। निरोग सरीर काया रै आणंद री निसांणी है।

इन्द्रियां रो आणंद उठै मांन्यौ जावै के जठै हरेक इन्द्रियां नै चोखै रास्तै लगाई जावै। वांनै विसय-वासनावां में के खराब बातां में नी भटकवा देवै। मिनख पोता री जितरी ज्यादा जरूरतां वधावैला उतरो ई ज्यादा इन्द्रियां रो गुलांम बणैला, उण हालत मे मिनख री आजादी खतम व्है जावैला अर जिदगी रो आणंद जावतौ रैवैला। कारण के गुलांम नै तो हर वखत मालिक री सेवा मे रैवणी पड़ै, उणरै सुख दुख री चिंता कुण करै? इण वास्तै इन्द्रियां रो आणंद पण जिंदगी

में जरूरी चीज है। पांचूं इन्द्रियां रो सही उपयोग पण वो इज मिनख कर सकै के जिकण री इन्द्रियां निरोग अर संयम वाळी व्है। इन्द्रियां अर सरीर निरोग होवण सूं इज धर्म री पालणा ठीक तरै सूं व्है सकै। अर धर्म पालण सूं इज आत्मिक आणंद पैदा व्है सकै।

नैतिक रूप सूं आणंद उठै है के जठै मिनख पोता रा जीवण मे इमानदारी, सच्चाई, सभ्यता, नियम अर मरजादावां री पूरी पूरी पालणा करै। जिको मिनख नीति छोड़ दे तो पछै धरम कियां रैय सकै। धरम री जड़ इज नीति है। इण वास्तै नैतिक रूप सू आणंद मेळवणो व्है तो कोई पण इसो कांम नीं करणो चाहिजै जिको के अनीति सूं पूरो व्है तो व्है, जिकण सूं समाज अथवा देस नै नुकसांण पूगतो व्है। जूओ खेलण सूं, मांसाहार करण सूं, दारू पीवण सूं, रुळियारगिरी करण सू, सिकार खेलण सूं मांनखा रो जीवण भ्रस्ट व्है जावै, नैतिक आणंद फीको पड़ जावै, इण सब सूं बच नै रैवणो चाहिजै।

आत्मिक आणंद उण वखत मिळै जद के मिनख सत, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अस्तेय, अनासक्ति, क्षमा, दया अर संजम रो पालण करै। जठै ए गुण नी व्है, अर फगत ऊपरली टांम-टीम दीसै उठै आतमा रो आणंद नैड़ो ई नी रैवै। दरअसल मे आतमा तो इण सगळा आणंदां री मा है। जे आतमा रा सद्‌गुण जीवण में नीं आया तो जिंदगी रो आणंद कोई पण हालत में पूरो नीं व्है सकै।

इण भांत ए सगळा आणंद जिंदगी में आवण सूं इज जीवण रो पूरो आणंद मिळ सकै। इण मारग में मांनखा नै कुदरत री केई चीजां सूं प्रेरणा मिळ सकै है। सूरज री उगाळी रै पैलरी सोने री परगा, आसमांन मे उछळतौ पवन, बाळा सूरज री मन-मोवणी किरणां एक सूं एक वध नै इसी चीजां है के जिकी जिंदगी रा आणंद वास्तै अनोखी प्रेरणा देवै। कवि रा सब्दां मे—

> उठो नई किरण लिए जगा रही उषा,
> उठो उठो नये संदेस दे रही दिशा-दिशा।
> खिले कमल अरुण तरुण प्रभात मुस्करा रहा,
> गगन विकास का नवीन साज है सजा रहा।
> उठो चलो बढ़ो समीर शख है बजा रहा,
> भविष्य सामने खड़ा प्रशस्त पथ बना रहा।

सो आप पोता नै आणंद रै गुणां सूं भरी, आपरी जिंदगी हंसण लाग जावैला। आप ऊठोला तो आपरो भाग पण मुळकण लाग जावैला, अर आप बैठग्या तो आपरो भाग पण कुमळीज जावैला आपनै आपरी जिंदगी में साचो आणंद लावणो है, वो आणद आपनै नरक री गंदगी सूं बचाय नै सुरग री पगडांडी माथै अमरता कांनी लेजावैला।



'मिनखपणा रौ मोल' विद्वांनां री नजर में

हमारे धर्म-निरपेक्ष राज्य में जहां धर्म शिक्षा नही दी जाती, वहां नैतिक शिक्षा के लिए यह पुस्तक उपयोगी हो सकती है, जिसकी आज के शिक्षा शास्त्री आवश्यकता अनुभव करते हैं। भाषा शुद्ध राजस्थानी है, जिसमें प्रवाह तथा स्वाभाविकता दोनो ही है।

मरुभारती, जनवरी '६५

उपदेश-प्रधान पुस्तक की ओर मेरी रुचि प्राय: नही होती, पर इस पुस्तक से मैं प्रभावित हुए विना नही रह सका। मुनिजी महाराज गंभीर चिंतक ही नही, किन्तु गभीर विचारो को सुवोध एव रोचक शली में प्रस्तुत करने में भी दक्ष है। जिससे सामान्य पाठक भी रुचि लेकर लाभ उठा सकता है। विचार और अभिव्यक्ति, भाव और भाषा, अंतरग और वहिरग सभी दृष्टि से पुस्तक सुन्दर हुई है। राजस्थानी भाषा में होने के कारण 'मिनखपणा रौ मोल' के प्रति मेरा विशेष पक्षपात है। इससे राजस्थान की साधारण जनता विशेष लाभान्वित होगी, स्त्री समाज विशेष रूप से।

नरोत्तमदास स्वामी
वनस्थली विद्यापीठ

इण पोथी में आपनै प्रवचनकार श्रद्धेय मन्त्री पुष्कर मुनिजी म० री विद्वत्ता अर अमरवांणी रा परतख दरसण होसी। इणरै सागै भासा री सजीवता, भाव री गभीरता, सैली री विसेसता आपरौ मन मोय लेसी। आपरै हिवड़ा रा तार मतैई झणझणाय ऊठसी। इण प्रवचना में भारतीय सस्कृति री आत्मा परतख वोल री' है।

इन्द्रनाथ मोदी
न्यायमूर्त्ति, राजस्थान हाई कोर्ट

पुस्तक में एक सुलझा हुआ दृष्टिकोण है। धर्ममय श्रद्धा का जीवंत रूप है। विवेक का प्रकाश है। विद्वान प्रवचनकार के समन्वित अनुभवों का सुफल है।

हिन्दुस्तान साप्ताहिक, दिल्ली

पुस्तक सीधी-सादी भाषा में है। धार्मिक होते हुए भी हर व्यक्ति के लिए ग्राह्य है। इससे आत्म-शुद्धि की प्रेरणा ले सकते है। ......ये प्रवचन नई दिशा, नई स्फूर्ति व नई प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

नवभारत टाइम्स, दिल्ली

जिस किसी भी विषय को लेकर पाठक इस पुस्तक को पढ़ना प्रारम करेंगे उसमें उन्हें जीवन के तलस्पर्शी प्रश्नो का उत्तर, मनन की सामग्री और अपने बारे में कुछ सोचने का अवसर प्राप्त होगा।

जैन प्रकाश, दिल्ली

'मिनखपणा रो मोल' राजस्थानी गद्य साहित्य का एक अनमोल रत्न है। आध्यात्मिक विषयो को जन-जीवन की भाषा मे प्रसारित करने के लिए लेखक का प्रयत्न सराहनीय है। प्रस्तुत सग्रह राजस्थानी गद्य के माधुर्य का छलकता हुआ स्रोत है। जन-साधारण कठिनतम विषयो को भी सरलता से हृदयगम कर सकता है। भावो की गहनता तथा भाषा के लालित्य की दृष्टि से लेखक की यह कृति महत्त्वपूर्ण है।

विजयमुनि शास्त्री, साहित्यरत्न

पुस्तक 'मिनखपणा रो मोल' एक उत्तम कृति है। भाषा प्रवाह-पूर्ण तथा शैली प्रभावोत्पादक है।

उपाध्याय अमर मुनि

'मिनखपणा रो मोल' पुस्तक मैं एक ही बैठक मे पढ गई। कृति वास्तव में टकसाली भाषा का टकसाली नमूना है। राजस्थानी में इतनी सुन्दर कृति को देख कर मेरा मन-मयूर नाच उठा।

रानी लक्ष्मी कुमारी चूंडावत

एम. एल. ए. (राजस्थान)